भारतवर्ष का इतिहास

(भारत की नई शासन पद्धति के लिये अध्याय सम्मिलित)

दूसरा भाग

ई. मार्सडेन, बी. ए., एफ. आर. जी. एस., एम. आर. ए. एस.
और
लाला सीताराम, बी. ए., एफ. ए. यू., एम. आर. ए. एस.
रचित

मैकमिलन ऐण्ड कम्पनी, लिमिटेड
कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, लण्डन
१९३३

सूचीपत्र

(ब) १—ग्रेट ब्रिटेन के साम्राज्य में भारतवर्ष की उन्नति

भारतवर्ष का इतिहास

दूसरा भाग

४६—अंगरेज़ और फ़रासीसियों की पहिली लड़ाई

(१७४४ ई० से १७४८ ई० तक)

१—यूरोप में अंगरेज़ों और फ़रासीसियों के बीच सन् १७४४ ई० में युद्ध आरम्भ हुआ और बढ़ते बढ़ते पृथ्वी के हर भाग में जहां अंगरेज़ और फ़रासीसी थे फैल गया।

२—इस समय तक अंगरेज़ लोग शान्त स्वभाव के व्यापारी थे। लड़ाई भिड़ाई की इन्हें कोई अभिलाषा न थी। मद्रास में जो अंगरेज़ थे वह व्यापारी थे या उनके मुंशी और लेखक। इनका सब से बड़ा हाकिम गवर्नर कहलाता था। सेन्ट जार्ज गढ़ की रक्षा के लिये कुछ सैनिक और पहरेदार नौकर थे। उनके सिवाय और कोई सेना इनके पास न थी।

३—पांडीचरी का फ़रासीसी हाकिम डुपले बड़ा चतुर और बुद्धिमान था वह बहुत दिनों से भारत में रहता था और यहां के रहनेवालों के स्वभाव से परिचित था। वह चाहता था कि अंगरेज़ और और यूरोपवालों को भारत से निकाल दे जिस में कि

फ़रासीसी लोग बिना रोक टोक भारत के व्यापार का लाभ उठायें। उसका विचार कुछ और भी था। वह केवल इतना ही नहीं चाहता था कि उसे भारत के व्यापार से लाभ हो, पर वह जी से यह चाहता था कि दक्षिणीय भारत को जीत कर उसमें राज करे।

४—डुपले के पास ४००० हिन्दुस्थानी सैनिक थे। फ़रासीसी अफ़सरों ने उन्हें यूरोपवालों की तरह क़वायद और युद्ध करना सिखाया था। उसने तत्काल फ्रांस से सेना मंगवाई और उसके आते ही मद्रास पर चढ़ाई की और सन् १७४६ ई० में मद्रास ले लिया।

डुपले

५—उसके पीछे फ़रासीसियों ने सेंट डेविड गढ़ को लेना चाहा; परन्तु इस बीच में अंगरेज़ों ने भी इंगलिस्तान से कुछ सेना मंगाली थी और उसकी सहायता से तीन बार फ़रासीसियों को परास्त किया। मेजर लारेन्स जो एक वीर अंगरेज़ी अफ़सर था कुछ सेना लेकर इंगलिस्तान से आया। अब अंगरेज़ों की बारी आई कि पांडीचरी को जीत लेने का उद्योग करें। परन्तु उनका उद्योग व्यर्थ हुआ।

६—सन् १७४८ ई० में यूरोप में अंगरेज़ों और फ़रासीसियों में सन्धि हो गई। इस कारण भारत में भी युद्ध बंद हो गया। मद्रास फिर अंगरेज़ों को मिल गया और आठ बरस अर्थात् सन् १७५६ ई० तक अंगरेज़ों और फ़रासीसियों में नाम मात्र मेल रहा।

४७—क्लाइव, भारत में अंगरेज़ी राज की नेव डालनेवाला

अरकाट की चढ़ाई

१—जिस साल अंगरेज़ों और फ़रासीसियों में लड़ाई छिड़ गई थी उसी साल एक ग़रीब लड़का कम्पनी की चाकरी में लेखक की तरह भरती होकर मद्रास में आया था। उसकी उमर केवल उन्नीस बरस की थी, न पैसा पास था न कोई मित्र या सहायक था। दैवी गति से वह कुछ ही काल में एक बड़ा सैनिक अफ़सर होकर इंगलिस्तान के सुप्रसिद्ध लोगों में गिना जाने लगा। इसका नाम राबर्ट क्लाइव था।

२—जब फ़रासीसियों ने मद्रास को जीत लिया तो यह हिन्दुस्थानी भेष बदल कर निकल गया और सेंट डेविड गढ़ में पहुंच गया। फ़रासीसियों ने तीन बार इस गढ़ के लेने की चेष्टा की परन्तु मेजर लारेन्स ने इस बीरता से गढ़ की रक्षा की कि फ़रासीसियों की सब मेहनत अकारथ गई। क्लाइव ने युद्ध विद्या सीखना यहीं से आरम्भ किया था। यह इस बीरता से लड़ा कि गवर्नर ने उसे लेखक से बदल कर एक छोटे से सैनिक अफ़सर की पदवी पर नियुक्त किया।

३—भारतीय सैनिक क्लाइव से इतने हिले मिले थे कि उसके साथ हर जगह जाने और हर काम करने को तैयार थे। यह लोग उसे "साबितजंग" कहते थे और इसी नाम से पीछे क्लाइव सारे भारत में प्रसिद्ध हुआ और नाम भी बिलकुल ठीक था। क्योंकि जैसा तलवारों की छांह में और गोलियों की बौछार में सम्मुख लड़ता था वैसेही धीरता और गम्भीरता के साथ सेना की कमान करता था।

४—सन् १७४८ ई० में बूढ़े निज़ामुलमुल्क की मृत्यु हुई। उसका बड़ा लड़का नासिरजंग बाप की जगह दखिन का सूबेदार बना लेकिन उसका भतीजा मुज़फ़्फ़रजंग भी सूबेदारी के लिये अपने भाग्य की परीक्षा करना चाहता था। वह पांडीचरी पहुंचा और फ़रासीसियों से सहायता मांगी। इस समय चंदा साहेब जो एक और सरदार था यह चाहता था कि अनवरुद्दीन की जगह आप करनाटिक का नवाब हो जाय। यह भी डुपले के पास गया और सहायता की प्रार्थना की।

५—डुपले ने प्रसन्नता से दोनों को सहायता देने का वचन दिया। वह ऐसा अवसर ईश्वर से मनाया करता था। इस कारण उसने एक बली सेना एक बीर अफ़सर के साथ जिसका नाम बुसी था भेजी। तीनों की सेनाओं ने अरकाट पर चढ़ाई की। अनवरुद्दीन की हार हुई और वह मारा गया। अरकाट चढ़ाई करनेवालों के हाथ में आया। अनवरुद्दीन का बेटा महम्मद अली त्रिचनापल्ली को भागा और वहां अपनी रक्षा का प्रबंध करने लगा। विजयी लोग दक्षिण की ओर बढ़े। नासिरजंग भी मारा गया और बुसी बड़ी धूम से हैदराबाद में घुसा।

६—डुपले की मनोकामना पूरी हुई। नये निज़ाम ने फ़रासीसियों को पूर्वीय तट पर उत्तरीय सरकार का इलाक़ा दे दिया; डुपले को करनाटिक का गवर्नर बनाया और उसके आधीन चंदा साहेब को वहां के नवाब की पदवी दी। चंदा साहेब ने भी फ़रासीसियों को करनाटिक का एक बड़ा इलाक़ा और बहुत सा रुपया भेंट किया।

७—चंदा साहेब और फ़रासीसियों ने महम्मद अली को त्रिचनापल्ली में बंद कर रक्खा था। उसने अंगरेज़ों से व्यवहार बढ़ाया और उनसे मदद की प्रार्थना की।

८—अंगरेज़ी गवर्नर के पास इतना सामान न था कि अपने दोनों गढ़ों की रक्षा भी करता और त्रिचनापल्ली से फ़रासीसियों को भी जो उस जगह को घेरे हुए थे हटा देता। इस लिये उसने थोड़ी सी सेना को हथियार और खाने पीने की वस्तु देकर महम्मद अली के पास भेजा और उसको एक पत्र में लिखा कि अन्त तक लड़ाई से मुंह न मोड़ो, जमे लड़ते रहो और मेरे ऊपर बिश्वास रक्खो, मैं और सेना भेजता हूं। क्लाइव इस सेना के साथ था उसने ऐसी बीरता के साथ युद्ध किया कि त्रिचनापल्ली के भीतर घुस गया और जब वहां से बाहर आया तो उसे उसी समय कप्तान की पदवी मिल गई।

९—क्लाइव ने मद्रास पहुंच कर गवर्नर से कहा कि महम्मद अली का हाल बहुत बुरा है; वह और युद्ध न कर सकेगा। उसने यह भी कहा कि फ़रासीसियों की सेना कुछ त्रिचनापल्ली में है कुछ पांडीचरी में कुछ बुसी के साथ दूर देश हैदराबाद में पड़ी है। करनाटिक की राजधानी अरकाट में इतनी सेना नहीं है कि वह उसकी रक्षा कर सके। मैं चाहता हूं कि अरकाट जाऊं और उसे सर करने की चेष्टा करूं। जो यह उपाय सुफल हुआ तो चंदा साहेब त्रिचनापल्ली छोड़ कर अरकाट लेने आयेगा और तब महम्मद अली को छुटकारा मिल जायगा।

१०—गवर्नर को कप्तान क्लाइव की सलाह भली मालूम हुई और उसने उसकी बात मान ली। कुल दो सौ गोरे और तीन सौ हिन्दुस्थानी सैनिक ऐसे थे जो क्लाइव के साथ जा सकते थे पर वह भी बिलकुल नौसिखुये थे। उनमें से बहुतों ने कभी युद्ध का मुंह तक न देखा था। परन्तु क्लाइव ने उन्हीं को बहुत जाना। मद्रास से अरकाट को कूच करता जाता था परन्तु मार्ग में साथ ही साथ कवायद भी सिखाता जाता था। क्लाइव को छः दिन कूच में लगे

परन्तु ज्यों हीं वह नगर में एक फाटक से घुसा चंदा साहेब की सेना दूसरे फाटक से भाग गई।

११—चंदा साहेब ने जब सुना कि राजधानी हाथ से जाती रही तो उसने जैसा कि क्लाइव ने सोचा था दस हज़ार हिन्दुस्थानी

और कुछ फ़रासीसी सेना अपने पुत्र रज़ा साहेब के साथ अरकाट भेज दी। पचास दिन तक उस सेना ने क्लाइव और उसके सिपाहियों को घेर रक्खा और गढ़ के लेने का बड़ा उद्योग किया परन्तु उसकी कोई चेष्टा सुफल न हुई।

१२—जब लगभग दो मास बीत गये तो मद्रास के गवर्नर ने क्लाइव की सहायता के लिये थोड़ी सी सेना भेजी। रज़ा साहेब ने भी सुना कि क्लाइव की सहायता के लिये सेना आई है तो उसने सम्हल कर फिर आक्रमण किया। इस बार गढ़ लेही लेता परन्तु उसके चार सौ मनुष्य खेत रहे और उसको पीछे हटना पड़ा। वह निराश हो गया और अपनी बची खुची सेना लेकर अरकाट लौट गया, क्योंकि उसे यह भी डर था कि यदि एक दिशा से क्लाइव अपनी सेना लेकर गढ़ से बाहर आया और दूसरी दिशा से अंगरेज़ों की कुमक आ पहुंची तो मैं बीच ही में घिर जाऊंगा।

लार्ड क्लाइव

१३—अरकाट का घेरा प्रसिद्ध है। इसकी तारीख़ सन् १७५२ ई० है। यहां से दखिन में अंगरेज़ों की दशा का रंग पलटा है। अब से अंगरेज़ों की बढ़ती और फ़रासीसियों की घटती होने लगी।

१४—मेजर लारेंस और क्लाइव त्रिचनापल्ली पर चढ़े चले गये। बड़ा घोर युद्ध हुआ, फ़रासीसियों की हार हुई और वह बंदी हो गये। त्रिचनापल्ली अंगरेज़ों के हाथ आया और उन्होंने अपने मित्र महम्मद अली को करनाटिक का नवाब बना दिया। चंदा साहेब भाग कर तंजौर पहुंचा और वहाँ के मरहठा राजा की आज्ञा से मार डाला गया।

१५—इसके पीछे कप्तान क्लाइव कड़ी मिहनत से बीमार हो जाने के कारण बिलायत चला गया। इङ्गलिस्तान के बादशाह ने

उसका आदर करने के लिये उसे अपनी सेना में करनैल की पदवी दी और ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने एक तलवार जिसका दाम ५०० पौंड था और जिसकी मूठ में हीरे जड़े हुए थे उसको भेंट दी। क्लाइव धनी और सुप्रसिद्ध हो गया और अंगरेज़ उसे अरकाट का बीर कहने लगे।

मेजर लारेन्स और महम्मद अली

१६—अब अंगरेज़ी और फ़रासीसी कम्पनियों ने यह हुकुम जारी किया कि इन दोनों के कर्म्मचारी आगे आपस में न लड़ें। डुपले फ्रांस में बुला लिया गया और दोनों कम्पनियों में मेल हो गया।

४८—ब्लैकहोल कलकत्ता

(कलकत्ते की काल कोठरी—सन् १७५६ ई०)

१—बङ्गाल के नवाब अलीवरदी खां की सन् १७५६ ई० में मृत्यु हुई और उसका पोता सिराजुद्दौला उसकी गद्दी पर बैठा। वह लगभग बीस बरस का युवक था और महलों के भीतर बहुत लाड़ प्यार से पाला गया था। बचपन में महलों के भीतर जो कुछ मांगता था वह उसे उसी समय दिया जाता था। यह जानता ही न था कि बाहर क्या हो रहा है। इसका

परिमाण यह हुआ कि वह मूढ़, मूर्ख, निर्दयी और हठी हो गया। यह अंगरेज़ों से घृणा करता था। उसने यह सुना था कि कलकत्ता धन से भरा हुआ बड़ा नगर है और इस कारण उसको यह बड़ी चाह थी कि कलकत्ते जाऊं और वहाँ का धन लूट कर अपने ख़ज़ाने को भरूं।

२—गद्दी पर बैठते ही उसने अंगरेज़ों से छेड़ छाड़ आरम्भ कर दी। उसका हाल यह है कि जब फ़ोर्ट विलियम के गवर्नर ने सुना कि फ़रासीसियों से फिर युद्ध होनेवाला है, वह डरा कि हो न हो चन्द्रनगर के फ़रासीसी कलकत्ते पर चढ़ाई करें और इस कारण से उसने फोर्ट विलियम की दीवारों की मरम्मत करवाई। सिराजुद्दौला ने लिखा कि तुम दीवारें गिरा दो। गवर्नर ने जवाब दिया कि यह नहीं हो सकता क्योंकि चारों ओर की दीवारों के गिरने से कलकत्ता फ़रासीसियों के सामने अरक्षित दशा में हो जायगा।

सिराजुद्दौला

३—इस उत्तर को पढ़ कर नवाब बहुत बिगड़ा और उसने पचास हज़ार सेना लेकर कलकत्ते पर चढ़ाई की। फ़ोर्ट विलियम में इस समय कुल १७० अंगरेज़ थे और वह भी ऐसे कि जिनमें से किसी बिरले ही ने युद्धक्षेत्र के दर्शन किये हों। इनसे काम लेनेवाला कोई क्लाइव के समान धीर और वीर अफ़सर न था। जैसे हो सका चार दिन तक उन्हों ने अपने प्राणों की रक्षा की। इसके पीछे लेखकों में से कुछ मर्द, औरतें और बच्चे जहाज़ में बैठ कर समुद्र के रास्ते निकल गये। जो बचे

उन्हों ने गढ़ को वैरी के हवाले इस बात पर किया कि उनके प्राण बचा दिये जायं।

४—इस समय नवाब तो सो रहा था और पहरेवालों ने १४६ बन्दियों को ऐसी छोटी और अंधेरी कोठरी में बन्द कर दिया जिसमें पहले एक अकेला बन्दी रक्खा जाता था। यह ऐसी छोटी और अन्धेरी थी कि यह ब्लैक होल (काल कोठरी) नाम से प्रसिद्ध है। इतने मनुष्यों का इस छोटी कोठरी में बन्द रहना अवश्य मरना था। जब यह बिचारे बन्दी सांस रुक रुक कर मरते थे तो निर्दयी पहरेवाले उनको देख देख कर हंसते थे।

५—जब दूसरे दिन सबेरे उस बन्दीगृह का दरवाज़ा खोला गया तो कुल २२ पुरुष और एक स्त्री जीते निकले और सब मर गये थे। १२३ लोथैं निकलवा कर एक ख ` में फेंकवा दी गईं।

४६—पलासी का युद्ध

(सन् १७५७ ई०)

१—सन् १७५७ ई० में यूरोप में अंगरेज़ों और फ़रासीसियों के बीच फिर युद्ध छिड़ गया। इसके थोड़े दिन पहले ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने कर्नल क्लाइव को जो पहिले की भांति भला चंगा हो गया था अपनी सेना का कमानियर बना कर भारत को भेजा था। क्लाइव मद्रास में पहुंचा ही था कि उसे समाचार मिला कि कलकत्ता अंगरेज़ों के हाथ से जाता रहा।

२—इस समाचार को पाते ही मद्रास में अंगरेज़ों को बड़ा शोक हुआ। क्रोध और बदला लेने की आग उनकी छातियों में धधक उठी। कर्नल क्लाइव ने थल सेना को और ऐडमिरल वाटसन ने समुद्री बेड़े को सम्हाला। तीन महीने के पीछे दोनों कलकत्ते

पहुंचे ; पहुंचते ही इस चतुराई और सुगमता से कलकत्ते को ले लिया कि उनके एक जीव को भी हानि न होने पाई ; फिर हुगली की ओर बढ़े और उसे भी ले लिया।
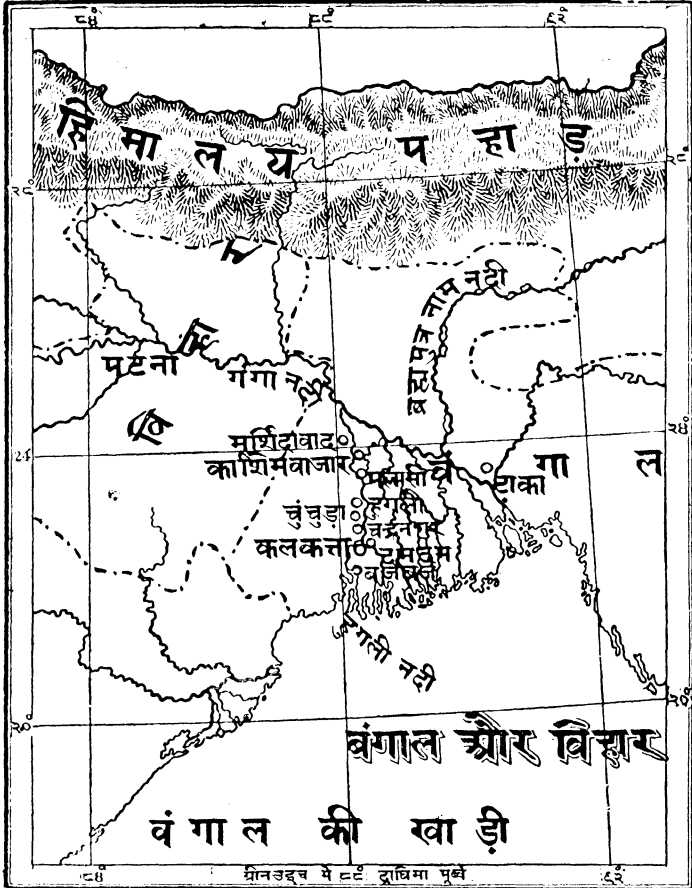
३—अब तो सिराजुद्दौला डरा। उसने अंगरेज़ी बन्दियों को छोड़ दिया और सन्धि की प्रार्थना की। अंगरेज़ों से कहा कि जो

हानि आप लोगों की हुई है वह भर दी जायगी। साथ ही साथ चन्द्रनगर में फरासीसियों को भी पत्र लिखा कि आप आयें और मेरी सहायता करें। कर्नल क्लाइव ने नवाब की दोरङ्गी बातों का हाल शीघ्र ही जान लिया और चन्द्रनगर पर चढ़ाई करके उसे जीत लिया।

४—सिराजुद्दौला को गद्दी पर बैठे एक बरस से कम हुआ था। परन्तु इस थोड़े से समय में अपने बुरे प्रबन्ध और निर्दयीपन से उसने प्रजा को तंग कर डाला था। प्रजा चाहती थी कि यह निकल जाय तो अच्छा है। उसके बड़े बड़े अफ़सरों और दरबारियों ने सलाह की कि उसको गद्दी से उतार कर उसके सेनापति मीरजाफ़र को उसकी जगह नवाब बना दें। मीरजाफ़र ने क्लाइव को लिखा और सहायता की प्रार्थना की और यह सलाह उसे दी कि आप सिराजुद्दौला पर चढ़ाई कीजिये तो मैं एक बली सेना लेकर आपका साथ दूंगा।

५—कर्नल क्लाइव अपनी सेना लेकर उत्तर की दिशा को चला। सिराजुद्दौला के डेरे पलासी नामक गांव पर पड़े थे। पचास हज़ार प्यादे, अठारह हज़ार सवार, पचास तोपें और कुछ फरासीसी सैनिक सिराजुद्दौला के साथ थे। क्लाइव के पास ग्यारह सौ गोरे, दो हज़ार हिन्दुस्थानी सिपाही, और दस छोटी तोपें थीं। २३ वीं जून सन् १७५७ ई० को युद्ध आरम्भ हुआ। मीरजाफ़र अपने बचन पर दृढ़ न रहा और अंगरेज़ों का साथ न दिया परन्तु वह इसी आसरे में था कि देखें कौन जीतता है। दिन भर अङ्गरेज़ों ने गोले बरसाये तीसरे पहर तीन बजे जब क्लाइव के कुछ सैनिक गोला बारूद से मर चुके थे उसने अपनी सेना को धावा मारने की आज्ञा दी। नवाब और उसके सैनिक भाग निकले और अङ्गरेजों की जीत हुई। सिराजुद्दौला

भागा तो था परन्तु एक मनुष्य ने, जिसकी नाक उसने कभी कटवा दी थी, उसे पकड़ कर मीरज़ाफर के बेटे के सामने लाया। उसने उसे तत्काल मरवा दिया। अंगरेज़ों को सेवा के बदले में नये नवाब ने उनको सब हानियों का हरजा दे दिया और क्लाइव और दूसरे अफ़सरों को भेंटें दीं। कलकत्ते के आस पास का इलाक़ा, जिसका नाम चौबीस परगना है, ईस्ट इण्डिया कम्पनी को दे दिया और दो बरस पीछे उस इलाक़ा का कुल लगान जो कम्पनी की तरफ़ से मिलता था क्लाइव को नज़र कर दिया। इससे क्लाइव बड़ा धनी हो गया। यह क्लाइव की जागीर कहलाती थी। कम्पनी क्लाइव के जीते जी इसका लगान क्लाइव को देती रही। यह पहिला राज था जो कम्पनी को भारत में मिला। बङ्गाल हाते की नेव इसी से पड़ी।

५०—फ़रासीसियों की पूर्ण अवनति

(सन् १७५६ ई० से सन् १७६३ ई० तक)

१—यूरोप में सन् १७५६ ई० से सन् १७६३ ई० तक कई यूरोपीय जातियों में बड़ा भारी युद्ध रहा। इसे सप्तवर्षीय युद्ध कहते हैं। इस युद्ध में अंगरेज़ों का सामना फ़रासीसियों से था।

२—जिस समय यह युद्ध आरम्भ हुआ उस समय कर्नल क्लाइव लगभग कुल अंगरेज़ी सेना को लिये हुए बङ्गाले में था। उसने तत्काल चन्द्रनगर को लेलिया और उत्तरीय भारत में फ़रासीसियों के पास कोई स्थान रहा। दक्षिणीय भारत में अंगरेज़ों के पास इतना सामान न था कि पांडीचरी के लेने की चेष्टा कर सकें न फ़रासीसियों ही के पास इतनी सेना थी कि मद्रास ले

लेते। इसका परिणाम यह हुआ कि दो बरस वहां दोनों ज्यों के त्यों बने रहे।

३—सन् १७५८ ई० में कौंट लाली की कमान में बहुत सी फ़रासीसी सेना भारत में आई। उसको आज्ञा दी गई थी कि अङ्गरेज़ों को भारत से निकाल दे। रात के समय कौंट लाली ने भारत की भूमि पर पांव रक्खा। उसी रात को उसने सेण्ट-डेविड नामक गढ़ पर चढ़ाई की और सहज ही उसको जीत लिया। कोर्ट गिरा दिया गया और वह फिर न बना।

४—इसके पीछे लाली ने बुसी को आज्ञा दी कि तुम दक्षिण से आओ हम और तुम मिल कर मद्रास पर चढ़ाई करेंगे। फिर उन दोनों ने मद्रास पर चढ़ाई की। छः महीने तक मेजर लारेन्स बीरता के साथ मद्रास की रक्षा करता रहा इसके पीछे इङ्गलैण्ड से जहाज़ द्वारा कुछ सेना आई। कुछ ही दिनों में लाली और उसकी फ़रासीसी सेना भगा दी गई। कर्नल कूट अङ्गरेज़ी सेना का कमानियर था। उसने फ़रासीसियों का पीछा किया और वांडेवाश के स्थान पर जो मद्रास और पांडीचरी के बीच में है सन् १७६० ई० में उनको परास्त किया। भारत की भूमि पर जो अङ्गरेज़ों और फ़रासीसियों के बीच में युद्ध हुए हैं उनमें यह सब से बड़ा था। कर्नल कूट ने पांडीचरी पर चढ़ाई की और सन् १७६१ ई० में वह स्थान भी फ़रासीसियों से ले लिया।

५—जब करनाटिक में यह घटना हो रही थी तब क्लाइव ने समुद्र तट की राह से जो सेना इकट्ठी कर सका कर्नल फ़ोर्ड की कमान में उत्तरी सरकार की ओर भेज दी। यहां पहिले तो फ़रासीसी अङ्गरेज़ों से ज्यादा थे और निज़ाम हैदराबाद अपनी सेना लिये हुए उनके साथ था। पर कर्नल फ़ोर्ड भी क्लाइव की आंखें देखे हुए था। यह बड़ा बीर और बुद्धिमान

अफ़सर था। उसने हर स्थान पर फ़रासीसियों को हाराया और उनके बड़े स्थान मछलीबन्दर को जीत लिया। अपने सिपाहियों से अधिक सिपाही क़ैदी उसके हाथ आये। इस भांति उत्तरीय सर्कार का देश सन् १७५९ ई० में अङ्गरेज़ों के हाथ आया और अब तक उन्हीं के पास है। मद्रास हाते की नेव यहीं से पड़ी है।

६—१७६३ ई० में सप्तवर्षीय लड़ाई समाप्त हुई। अङ्गरेज़ों और फ़रासीसियों में सन्धि हो गई। पांडीचरी और चन्द्रनगर फ़रासीसियों को व्यापार के लिये फिर मिले। जो लड़ाई १७४४ ई० में आरम्भ हुई थी अब बीस वर्ष के झगड़े बखेड़े के पीछे इस भांति समाप्त हुई। यह लड़ाई इस भांति आरम्भ हुई थी कि फ़रासीसियों ने मद्रास के अङ्गरेज़ व्यापारियों पर चढ़ाई की थी और परिणाम यह हुआ कि अङ्गरेज़ एक बड़े राज्य के अधिकारी होकर दक्षिण भारत के शक्तिमान शासक समझे गये।

५१—मीरजाफ़र

(सन् १७५८ ई० से सन् १७६१ ई० तक)

१—क्लाइव ने मीरजाफ़र को बंगाले के सिंहासन पर दिल्ली के बादशाह की बिना अनुमति के बैठाया था। बादशाह को अभी तक दावा था कि हम उत्तरीय भारत के सारे प्रान्तों के शाहंशाह हैं। पहिले नवाबों की भांति मीरजाफ़र ने बादशाह को कोई भेंट न भेजी थी। इससे बादशाह का पुत्र एक बड़ी पलटन लेकर बङ्गाले पर चढ़ आया। अवध का नावाब शुजाउद्दौल भी उसके साथ था।

मीरजाफ़र

२—मीरजाफ़र बहुत डरा। यह चाहता था कि कुछ दे दिलाकर बिदा कर दे। पर क्लाइव ने लिखा कि तुम घबराना नहीं, मैं तुम्हारी सहायता को आता हूं। अवध के नवाब ने सुना कि अंग्रेज़ों का प्रसिद्ध महाबीर कर्नैल चढ़ा आ रहा है तो वह अपनी सारी सेना लेकर जितना जल्दी हो सका अवध को लौट गया और शाहज़ादे को अकेला छोड़ गया। शाहज़ादे ने अपने को क्लाइव की दया और भलमंसाहत पर छोड़ दिया। क्लाइव ने शाहज़ादे के साथ बड़ी मुरौवत की। उसे ५०० सोने की मुहरें नज़र दीं और कहा कि आप जहां से आये वहीं चले जाइये। शाहज़ादा लौट गया।

शुजाउद्दौला

३—मीरजाफ़र बुद्धिमान और अच्छा शासक होता तो सुख शांति के साथ राज करता रहता। पर उसकी चालढाल से तुरन्त ही प्रगट हो गया कि उसमें राज करने की योग्यता नहीं है। वह अफ़ीमची था, खेलकूद में समय खोता और धन नष्ट करता था।

४—सिपाहियों को तनख़ाह देने के लिये धन की आवश्यकता हुई। मीरजाफ़र ने चाहा कि बंगाल के साहूकारों को लूट ले

और अपना काम चलाये। क्लाइव ने उसकी चाल न चलने दी। मीरजाफ़र ने बुरा माना और उसने चिंसुरा में डच लोगों को लिखा कि तुम मेरी सहायता करो और हम तुम दोनों मिलकर अंगरेज़ों को निकाल दें। यूरोप में अंगरेज़ों और डच लोगों में सुलह थी। इस लिये चिंसुरा के डच लोगों को अंगरेज़ों से लड़ाई करने का कोई बहाना न मिला। पर डच लोग अंगरेज़ी सौदागरों से जलते थे और उनके व्यापार को देखकर डाह करते थे सो मूढ़ता से अंगरेज़ों पर चढ़ाई करने को राज़ी हो गये। उन्हों ने जावा से सेना मंगाई। थोड़े ही दिनों में डच सिपाहियों से भरे जहाज़ हुगली के मुहाने पर आ पहुँचे और उन्हों ने चाहा कि जलमार्ग से चिंसुरा पहुँच जायं। उन्हों ने कुछ अंगरेज़ी नावें छीन लीं और नदी के किनारे जो अंगरेज़ों की कोठियां थीं उनमें आग लगा दी।

५—कर्नैल क्लाइव ने कर्नैल फ़ोर्ड को जो उत्तरीय सरकार से लौट आया था चिंसुरा पर धावा मारने को भेजा। डच लोगों के जहाज़ों पर चढ़ाई करने को एक दूसरा अफ़सर भेजा गया। डच सेना जो चिंसुरा में थी उसकी हार हो गई और उसके जहाज़ अंगरेज़ों ने पकड़ लिये। फिर तो उन्हों ने सन्धि की प्रार्थना की। केवल इतना मांगा कि चिंसुरा उनके पास व्यापार करने के लिये रहे; उसमें सेना रखने का अधिकार न रहा। मीरजाफ़र का अपराध क्षमा कर दिया गया और १७६० ई० में क्लाइव इङ्गलिस्तान चला गया।

५२—मीरक़ासिम

(सन् १७६१ ई० से सन् १७६५ ई० तक)

१—क्लाइव के इङ्गलैण्ड की ओर चलते ही मीरजाफ़र के बुरे दिन आ गये। दिल्ली का शाहज़ादा शाह आलम द्वितीय के नाम से राज-सिंहासन पर बैठ चुका था। उसने अवध के नवाब के साथ बंगाले पर फिर चढ़ाई की।

२—अंगरेज़ी गवर्नर ने कप्तान नाक्स को थोड़ी सी पलटन देकर उनका सामना करने को भेजा। पटना शहर के पास दोनों दल भिड़ गये। नाक्स के सिपाहियों ने शाह आलम और शुजाउद्दौला दोनों को हरा दिया, और दोनों अवध की ओर भाग गये।

मीरक़ासिम

३—अब यह सिद्ध हो गया कि मीरजाफ़र बंगाले पर शासन करने की योग्यता नहीं रखता। कलकत्ते के गवर्नर ने उसको सिंहासन पर से उतार दिया और उसकी जगह उसके दामाद मीरक़ासिम को नवाब बनाया। आशा यह थी कि यह अच्छा निकलेगा और अपने देश की रक्षा करेगा। इसके बदले मीर-क़ासिम ने बंगाले का तिहाई हिस्सा जिसमें बरद्वान, चटगांव और मेदनापुर के ज़िले हैं अंगरेज़ों को भेंट किया।

४—मीरक़ासिम पहिले तो अच्छा रहा। उसने मीरजाफ़र का सब क़र्ज़ा पाट दिया और देश का प्रबन्ध भी अच्छा किया। वह

मीरजाफ़र की भांति नाममात्र को नवाब रहना नहीं चाहता था। उसकी इच्छा यह थी कि अगले नवाबों की भांति मैं भी स्वतन्त्र होकर रहूं और जो मन में आये सो करूं। उसके यहां कुछ फ़रासीसी नौकर थे। दो तीन बरस उनकी सहायता से उसने अपने सिपाहियों को अच्छी तरह क़वायद सिखाई और जब सेना तैयार हो गई तो उसके मन में यह बिचार उठा कि जिन अंगरेज़ों ने उसे सिंहासन पर बैठाया था उनके पञ्जे से निकलना चाहिये और उनको देश से निकाल देना चाहिये ; अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से हटा कर, जो कलकत्ते से सौ मील दूर था, मुंगेर ले गया जो तीन सौ मील दूर है। कारण यह था कि वह अंगरेज़ों के इतना पास रहना नहीं चाहता था। जब उसने देख लिया कि अब मुझ में लड़ने का भरपूर बल हो गया तो अंगरेज़ों पर चढ़ाई करने का बहाना ढूढ़ने लगा।

५—बहाना भी जल्द मिल गया। पलासी की लड़ाई के पीछे मीरजाफ़र ने यह आज्ञा दे दी थी कि कम्पनी के नौकर अपना निज का असबाब बिना महसूल जहां चाहें ले जाया करें। कुछ दिन पीछे कम्पनी के नौकरों और मुहर्रिरों ने देशी व्यापारियों से रुपया ले कर उनको आज्ञा दे दी कि उनके नाम से अपना माल जहां चाहें बिना महसूल ले जायं। मीरक़ासिम ने इस रीति को बन्द करना चाहा पर उसका उद्योग निष्फल हुआ। इस लिये उसने माल पर महसूल लेना ही बन्द कर दिया और सब को आज्ञा दी कि जहां चाहें बिना महसूल दिये माल ले जायं। कम्पनी के नौकरों को यह बात अच्छी न लगी। यह चाहते थे कि हम महसूल न दें, औरों से महसूल लिया जाय।

६—इस पर मीरक़ासिम ने लड़ाई की तैयारी कर दी। उसने शाह आलम और शुजाउद्दौला से सहायता मांगी और उनको यह

मंत्र दिया कि हम तीनों मिल कर अंगरेज़ों पर चढाई करें और उनको देश से निकाल दें। पटने में जो अंगरेज़ो सौदागर थे उनको पकड़ कर मीरक़ासिम ने क़ैद कर लिया और अपने अफ़सरों को आज्ञा दी कि जो अंगरेज़ जहां मिले मारा जाय।

७—कलकत्ते में अंगरेज़ों की कौंसेल हुई और मीरजाफ़र राजगद्दी पर फिर बैठाया गया। मेजर ऐडम्स को जो सिपाही मिले उनको साथ ले कर वह कलकत्ते से चला। उसके साथ छः सौ गोरे और एक हाज़ार हिन्दुस्थानी सिपाही थे। तीन जगह मीरक़ासिम की पलटन से लड़ाई हुई और तीनों जगह उसने मीरक़ासिम को पलटन को हराया और उसकी राजधानी मुंगेर पर चढ़ाई की।

८—मीरक़ासिम उसके आने तक भी न ठहरा। मुंगेर छोड़ कर पटने की ओर भागा। अब उसने अंगरेज़ों के कमानिअर से कहला भेजा कि आगे वढ़ोगे तो सब अंगरेज़ क़ैदियों को जान से मार डालूंगा। क़ैदियों में एक मिस्टर एलिस बड़ा योग्य था। उसने मेजर लारेन्स को लिख भेजा कि जो होना हो सो हो तुम चढ़े चले आओ।

९—मेजर लारेन्स ने यह विचारा कि क्या मीरक़ासिम ऐसा निठुर और निर्दयी होगा कि निहत्थे क़ैदियों को मार डालेगा; इसलिये बढ़ा चला गया और मुंगेर दबा बैठा। यह समाचार पाते ही मीरक़ासिम बहुत बिगड़ा। उसकी सेना में समरू नाम एक नीच जरमन नौकर था। मीरक़ासिम की आज्ञा पाकर समरू ने बहुत से हिन्दुस्थानी सिपाही लेकर सारे अंगरेज़ क़ैदी मार डाले। यह पाप ब्लैक होल की घटना से भी बढ़ गया। इसको पटने का बध कहते हैं।

१०—कुछ दिन पीछे पटना भी जीत लिया गया। मीरक़ासिम भाग कर अवध पहुंचा और शाह आलम और शुजा-

उद्दौला से मिल गया। दो तीन महीने मेजर मुनरो इधर उधर चक्कर लगाता रहा फिर तीनों से बकसर के स्थान पर भिड़ गया। १७६४ ई० में तीनों इसी जगह हार गये। उत्तरीय भारत में अंगरेज़ों को पहिले पहिल जो लड़ाइयाँ लड़नी पड़ी हैं उनमें पलासी को छोड़ बकसर की लड़ाई सब से प्रसिद्ध है। यह पहिली लड़ाई है जिस में अंगरेज़ दिल्ली के मुग़ल बादशाह से भिड़ गये थे। अंगरेज़ों ने इस अवसर पर बादशाह को ऐसा भगाया कि वह फिर उनके सामने न आया। इस कार्रवाई के पीछे अंगरेज़ उत्तर भारत में सब से बली देख पड़ने लगे। शाह आलम उस मेहरबानी को न भूला था जो क्लाइव पहिले उसके साथ कर चुका था। अब भी उसने वही किया; अपने आप को अंगरेज़ों की करुणा और दया पर छोड़ दिया। शुजाउद्दौला भाग गया और फिर कुछ पलटन बटोर लाया। लेकिन कोड़ा के स्थान पर फिर हार गया। अब उसने अपने आप को अंगरेज़ों के समर्पण कर दिया। मीरक़ासिम डरा कि मेरे अपराध का दंड न जानें मुझे क्या मिले इससे भाग गया और न जाने उसका क्या परिणाम हुआ।

५३—लार्ड क्लाइव

(सन १७६५ ई० से सन् १७६७ ई० तक)

१—मीरक़ासिम के साथ लड़ाई और पटने के बध का समाचार जब इङ्गलैण्ड में पहुंचा तो ईस्ट इंडिया कम्पनी ने फिर क्लाइव से हिन्दुस्थान जाने को कहा। इङ्गलैण्ड के बादशाह ने उसे लार्ड की पदवी दे दी थी। इस बार जो क्लाइव आया तो बंगाले का गवर्नर और प्रधान सेनापति होकर आया और उसको ऐसे ऐसे अधिकार थे कि जो चाहता था कर सकता था। उस समय

इङ्गलैण्ड से हिन्दुस्थान आते आते साल भर लग जाता था। इस लिये क्लाइव यहां पहुंचा तब लड़ाई बन्द हो चुकी थी।

२—क्लाइव इलाहाबाद गया। शाह आलम और शुजाउद्दौला दोनों अंगरेज़ों के कैम्प में उपस्थित थे और सारी बातें मानने को तैयार थे। उस समय जो सन्धि हुई वह इलाहाबाद की सन्धि कहलाती है। इस सन्धि के अनुसार लार्ड क्लाइव ने शुजाउद्दौला
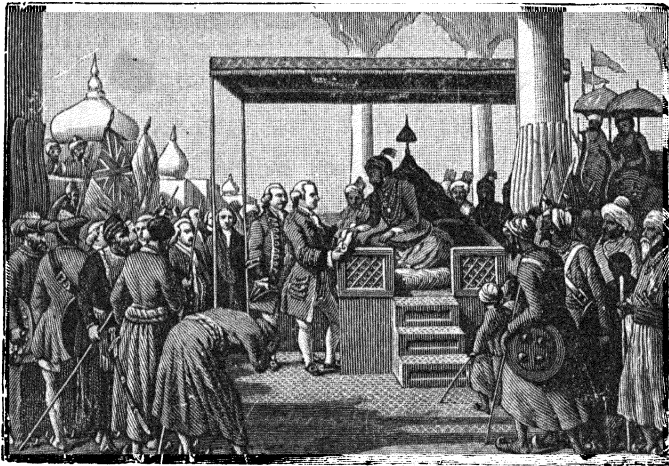
शाह आलम क्लाइव को दीवानी देते हैं

को उसका देश लौटा दिया और शुजाउद्दौला से पिछली लड़ाई का पूरा खर्चा मांगा। शाह आलम को गंगा यमुना के बीच का दोआबा दिया गया। बिहार और बंगाल, जो मीरक़ासिम के शासन में थे, कम्पनी के हाथ रहे पर इसके बदले शाह आलम को शाहनशाह होने के कारण पचीस लाख रुपया सालाना देना स्वीकार किया गया। शाह आलम ने कम्पनी को बिहार, बंगाल और उड़ीसा की दीवानी अर्थात् कर लेने का अधिकार दिया।

उड़ीसा उस समय मरहठों के हाथ में था और बहुत दिनों तक अंगरेज़ों ने उनसे यह सूबा न लिया।

३—मीरजाफ़र इससे कुछही दिन पीछे मर गया। उसका एक बेटा नजमुद्दौला था। क्लाइव ने उसे कम्पनी के आधीन बंगाल और बिहार का नवाब बनाया। शर्त यह थी कि यह बहुत से देशी

शाह आलम अंगरेज़ी सेना देखते हैं

अफ़सरों की सहायता से इन सूबों का शासन करे और मालगुज़ारी वसूल करके अंगरेज़ों को दे।

४—इस घटना के पीछे लार्ड क्लाइव ने जंगी और मुल्की महकमों में सुधार किये। कम्पनी के नौकर अपना अपना अलग लेन देन बनिंज ब्यापार करते थे उसको क्लाइव ने बन्द किया, और यह आज्ञा दी कि कम्पनी का कोई नौकर हिन्दुस्थानियों से नज़र भेंट न ले। इसके बदले उसने उनकी तनख़ाहें बढ़ा दीं

क्लाइवके पीछे
ब्रिटिश इण्ड़िया
भारतवर्ष
ब्रिटिश
कलकत्ता
बम्बई
ब्रिटिश
मद्रास
किला सेंट ड़ेविड़
हिन्द महासागर
७६° ग्रीनवृच में पूर्व्व ८०° द्राघिमान्तर
Stanford's Geog! Estab! London
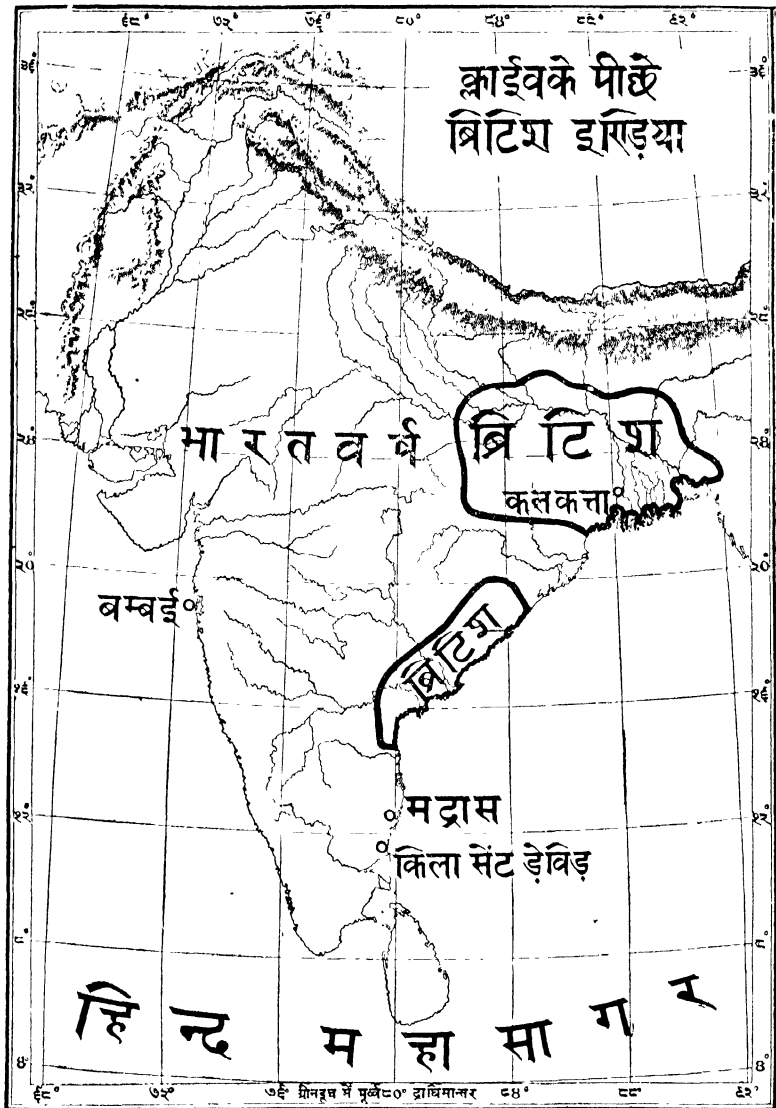
जिससे वह बिना बनिज व्यापार किये सुख से रह सकें। सिपाहियों को बहुत दिनों से दोहरी तनखाह मिलती थी। इसको डबल भत्ता कहते थे। उसने यह भो बन्द कर दिया। इस कारण सेना का खर्च बहुत घट गया।

५—क्लाइव इन सब कामों से निश्चिन्त हो कर इङ्गलैंड चला गया। सन् १७४४ ई० में एक दरिद्र लेखक हो कर भारत में आया था और फ़रासोसियों के बल को धूल में मिलाकर कप्तान क्लाइव की पदवी ले कर यहां से लौट गया; सन् १७५६ में कर्नल क्लाइव हो कर दूसरी बार भारत में आया और पलासो की लड़ाई जीत कर बंगाले और मदरास हाते को नोव डाल कर घर लौट गया। सन् १७६० ई० में लार्ड क्लाइव बन कर आया और बड़ी कड़ाई के साथ जंगी और मुल्की महकमों में सुधार कर के चला गया। इन सुधारों का करना क्लाइव ही का काम था क्योंकि कोई और करता तो कम्पनी के नौकर उसका कहना कभी न मानते।

६—क्लाइव बड़ा बीर था परन्तु उसका शरोर न पुष्ट था न बलवान। वह रोगी सा रहता था, भारतवर्ष की गरमी और काम की अधिकता से उसका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया था। पचास बरस का पूरा हुआ था कि इङ्गलैंड में अपने ही हाथ से उसने आत्मघात कर लिया।

५४—अहमदशाह अबदाली

(सन् १७६१ ई०)

१—नादिरशाह के मरने पर अफ़ग़ानों ने फ़ारस का जुआ अपने कंधों से उतार फका। अहमद अबदाली एक अफ़ग़ानी सरदार था और अफ़ग़ानी सरदारों ने उसको अपना बादशाह

बनाया। उसने देखा कि मुग़लवंश बलहीन होकर अवनति कर रहा है और सारे हिन्दुस्थान को अफ़ग़ानिस्तान के आधीन करना और दिल्लो के सिंहासन पर बैठकर भारत का शासन करना जैसा कि मुग़लों से पहले पठान बादशाह करते थे कुछ कठिन काम नहीं है।

२—जिस साल क्लाइव ने अरकाट के घेरा करनेवालों का सामना करके उनका मुंह फेरा था उसी साल १७५२ ई० में आहमद शाह ने पञ्जाब जीत लिया और महमूद ग़ज़नवी और महम्मद ग़ोरी की भांति लूट मार करने हिन्दुस्थान में बढ़ा। अफ़ग़ानी सवार छः बार ख़ैबर की घाटी होकर हिन्दुस्थान में आये और लूट मार करते, आग लगाते फिरे; जहां जाते हिन्दुओं के मन्दिर ढाते, मन्दिरों में गोवध करते और स्त्री, पुरुष और बच्चों को पकड़ ले जाते थे।

३—मरहठों के तीसरे पेशवा बालाजी बाजीराव ने देखा कि अहमद शाह देश पर देश जीतता चला आ रहा है और अफ़ग़ानों के कारण अब उसे चौथ भी नहीं मिलती। इस लिये उसने निश्चय किया कि ज़ोर मारकर अफ़ग़ानों को देश से निकाल दें। अहमद शाह तो थोड़े दिनों के लिये राजधानी काबुल चला गया था और पेशवा ने अपने भाई रघुनाथ राव उपनाम राघोबा को मरहठों की एक बड़ी पलटन देकर दिल्ली भेजा। राघोबा पश्चिम की तरफ़ बढ़ा और लाहौर को अपने बस में कर लिया।

४—महम्मद शाह इस समाचार के पाते ही अफ़गानों का दलबादल साथ लेकर लौट आया और जल्द ही राघोबा को हरा के दिल्ली पहुंचा। होलकर और सिन्धिया जो उसके सामने लड़ने को आये थे हार कर मालवे में अपने अपने देश को चले गये।

अब पेशवा ने अपने सरदारों को चारों ओर यह आज्ञा दी कि अपनी अपनी सेना जमा करें। राजपूतों को भी लिखा कि आओ सब मिलकर उद्योग करें और अफ़ग़ानों को देश से निकाल दें। बहुत से राजपूत इसकी सहायता को आये और हिन्दू मरहठों और राजपूतों की एक बड़ी भारी सेना हिन्दुस्थान के राज्य के लिये अफ़ग़ानों से लड़ने को आगे बढ़ी।

५—१७६१ ई० में पानीपत के मैदान में दोनों सेनाओं की मुडभेड़ हुई। यह वह स्थान था जहां १५२६ ई० में बाबर और उसकी अफ़ग़ानी और तुर्की सेना ने इब्राहीम लोदी की पलटन को तितिर बितिर कर दिया था। मरहठों के हलके सवार अफ़ग़ानों के झिलम पहिने सवारों के आगे न ठहर सके और भाग निकले। मरहठे हार गये और उनके दो लाख सिपाही अफ़ग़ानों के हाथ से मारे गये।

६—पेशवा ने जब यह भयानक समाचार सुना तो उसके प्राण निकल गये। अहम्मद शाह चाहता तो दिल्ली के सिंहासन पर बैठ जाता पर उसने यह उचित समझा कि थोड़े दिनों के लिये अपने देश को लौट जायं।

७—१७५८ ई० की तरह १७६१ ई० भी भारत के इतिहास में बड़ा प्रसिद्ध साल है। इस साल दखिन भारत में फ़रासीसियों का बल घटा और उनकी राजधानी पांडिचरी जीत ली गई। इसी साल दखिन में सलावत जङ्ग जो फ़रासीसी जर्नल बुसी की सहायता से निज़ाम बना था निज़ामअली के हाथ से मारा गया और निज़ामअली उसकी जगह सिंहासन पर बैठा। इसी साल अहमद शाह अब्दाली और उसकी अफ़ग़ानी सेना ने पानीपत के मैदान में मरहठों का सर्वनाश कर दिया। तीसरा पेशवा इस संसार से सिधार हो गया पर चौथे को इस

हार के कारण कोई प्रतिष्ठा न रही। इसी साल हैदरअली मैसूर का शासक हुआ। उत्तरीय भारत में इसी साल मीर-जाफ़र नवाबी से निकाल दिया गया। मीरक़ासिम बङ्गाले का नवाब हुआ और उसने बर्दवान, मेदिनीपुर और चटगांव के ज़िले जो तीनों मिलकर बङ्गाले की एक तिहाई के बराबर हैं कम्पनी को दे दिये।

५५—मुग़लराज्य का अन्त

१—महम्मद शाह सन् १७४८ ई० में मर गया। यह अन्तिम मुग़ल बादशाह था जिसकी कुछ प्रतिष्ठा थी। पहिले तो प्रतिष्ठा ही बहुत कम थी और जो थी भी उसे नादिर शाह ने १७३९ ई० में मिटा दिया था। उसके पीछे दो बादशाह सिंहासन पर बैठे, पर उनकी बादशाही नाम मात्र को थी। इनमें से पहिले की आंखें निकलवा दी गईं थीं। दूसरा मार डाला गया था। उत्तर भारत में कभी अफ़ग़ानों का डङ्का बजने लगता था कभी मरहठों की दुहाई फिरती थी। जा बादशाह मारा गया था उसका बेटा अवध के नवाब शुजाउद्दौला के पास चला गया और उसकी सहायता से बङ्गाले पर चढ़ दौड़ा पर क्लाइव ने दोनों को भगा दिया।

२—पानीपत की बड़ी जङ्गी लड़ाई के पीछे यह शाहज़ादा शाह आलम के नाम से मुग़लों के सिंहासन पर बिराजा। उसने शुजाउद्दौला के साथ दूसरी बार बङ्गाले पर चढ़ाई की। पर मेजर कारनक ने उसे फिर परास्त किया। वह दिल्ली जाने से डरता था इस कारण अवध में रहने लगा।

३—शाह आलम और शुजाउद्दौला ने तीसरी बार फिर

बङ्गाले पर चढ़ाई की। इस बार मीरक़ासिम भी उनके साथ हो लिया। बक्सर के मैदान में सन् १७६४ ई० में तीनों की पूरी हार हुई। दूसरे साल लार्ड क्लाइव ने इलाहाबाद की सन्धि की। इस सन्धि से अंगरेज़ों ने शाह आलम के लिये २५ लाख रुपया सालाना पेन्शन मुक़र्रर की और शाह आलम ने अंगरेज़ों की शरण में इलाहाबाद में रहना स्वीकार किया। अब यह बिना राज का बादशाह था, मानो मुग़ल बादशाही का अन्त हो हो गया।

४—पानीपत की लड़ाई के दस बरस पीछे मरहठों की फिर वही शक्ति हो गई जो पहिले थी पर अब इनका मुखिया पेशवा न था। मरहठे राजाओं में इस समय सब से प्रबल महादाजी सिन्धिया था। उसने महाराज की पदवी धारण की और राजपूताने के सब राजाओं से चौथ ली ; फिर आगे बढ़ कर दिल्ली पहुंचा और शाह आलम से कहला भेजा कि आप दिल्ली चले आयें और राजसिंहासन पर बिराजैं। शाह आलम ने अंगरेज़ों से अनुमति न ली और दिल्ली चला गया। परिणाम यह हुआ कि २५ लाख रुपया वार्षिक पेन्शन जो उसे अंग्रेज़ों से मिलती थी बन्द हो गई।

५—सिन्धिया ने कई बरस तक शाह आलम को "नज़रबन्द" रक्खा और उसके नाम से दिल्लीराज अर्थात् दिल्ली और आगरे के आस पास के देश में आप राज्य करता रहा। उसको कार्य वश अपनी राजधानी गवालियर को जाना पड़ा। उसने पीठ फेरी और एक रुहेले सरदार ने दिल्ली पर धावा मार कर बादशाही महल को लूटा और बूढ़े बादशाह की आंखें निकलवा डालीं। सिन्धिया यह समाचार पाते ही बड़ी सेना के साथ दिल्ली लौट आया और उस पापी रुहेले को मार डाला। पर

क्या इससे शाह आलम को आंखें मिल गईं? इसके बीस बरस पीछे १८०३ ई० में अंगरेज़ों ने दिल्ली ले ली और देखा कि आंखों का अन्धा बुढ़ापे का मारा बेचारा शाह आलम मरहठों का क़ैदी है। उन्होंने उसे छुड़ाया और एक अच्छी पेन्शन बांध कर फिर उसे बादशाही महल में रहने की आज्ञा दे दी।

५६—हैदर अली

मैसूर की पहिली लड़ाई

(सन् १७६७ ई० से सन् १७६९ ई० तक)

१—जिन दिनों महम्मद अली करनाटिक का नवाब हुआ उन्हीं दिनों एक मुसलमान सिपाही जिसका नाम हैदर अली था और जिसका जन्म १७०२ ई० में हुआ था प्रसिद्ध होने लगा। यह लिख पढ़ नहीं सकता था; परन्तु वीर था, चतुर था, और लूट मार किया करता था।

हैदर अली

२—थोड़े ही दिनों में उसके साथ एक भीड़ लग गई। यह उनको कोई तनख़ाह न देता था। इसके बदले लूट का धन बांट देता था। गांववालों की गायें, भैंसें, बैल, बकरी, अनाजपत्ता, जो कुछ हाथ लगा सब लूट कर ले जाता था। जो सिपाही कुछ लूट का धन ले आता था उसका आधा अपने नायक हैदर अली को देता था और आधा आप ले लेता था।

३—धीरे धीरे हैदर अली की शक्ति और उसकी भीड़ दोनों बढ़ीं। मैसूर के हिन्दू राजा ने हैदर अली को नौकर रख लिया और उसके सिपाहियों की तनख़ाहें बांध दीं। यहां वह इतना
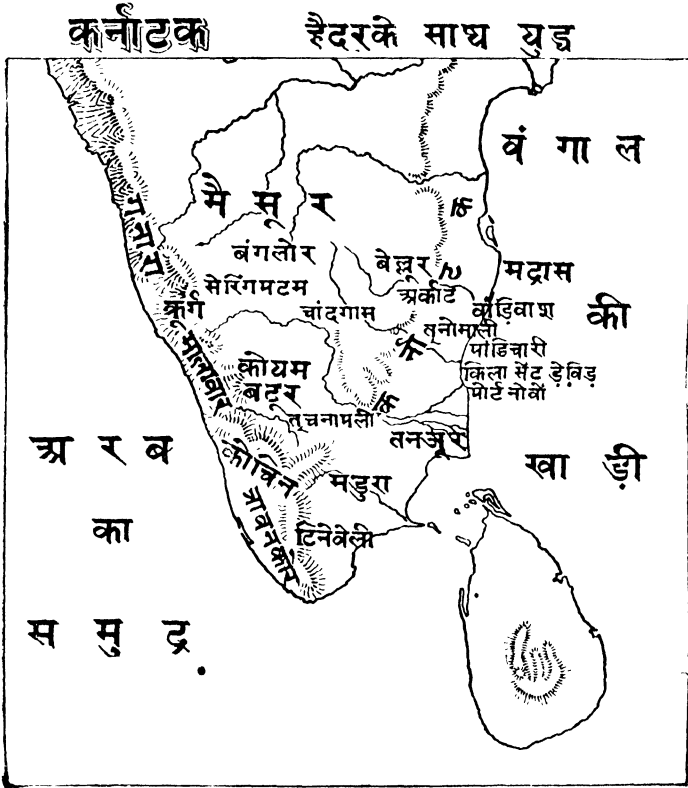
बढ़ा कि कुछ दिनों में मैसूर को सेना का सेनापति बन गया। इसी अवसर पर मैसूर का थोड़ी उमर का राजा अपने चचा से जो उस के राज का प्रबन्ध करता था बिगड़ बैठा। हैदर अली को बहाना मिल गया। उसने राजा का पक्ष लेकर प्रबन्धकर्ता

को हरा दिया; छोटे राजा को क़ैद कर लिया और आप सिंहासन पर बैठ गया।

४—दक्षिण भारत के और राजा रईसों ने जब देखा कि हैदर अली की शक्ति और उसका उत्साह दोनों बढ़ते चले जाते हैं तो उन्हों ने सोचा कि इस बढ़ती को रोकना चाहिये। हैदराबाद का निज़ाम, मरहठे और अंगरेज़ इस विषय में एक मत थे। अभी तक हैदर अली ने अंगरेज़ों से लड़ाई नहीं की थी। पर करनाटिक का नवाब फिर कई शहर और क़िले दबा बैठा था। अंगरेज़ करनाटिक के नवाब के सहायक थे। हैदर अली ने निज़ाम पर चढ़ाई की। निज़ाम भी अंगरेज़ों का मित्र था। इसलिये मदरास का गवर्नर हैदर अली के बिरुद्ध निज़ाम और मरहठों से मिल गया और उसने निज़ाम की मदद के लिये कुछ सेना भी भेज दी। अंगरेज़ी सेना निज़ाम के साथ मैसूर में घुस गई और बंगलोर को अपने आधीन कर लिया।

५—हैदर अली ऐसा मूर्ख न था कि एकही बार तीनों से लड़ बैठता। उसने मरहठों को तोड़ा और बहुत सा धन देकर उनको लौटा दिया।

६—फिर उसने निज़ाम को पत्र लिखा और कहा कि तुम मेरे साथ हो जाओ तो सारा करनाटिक जितवा दूंगा। निज़ाम उसकी बातों में आ गया। दूसरे दिन सबेरे करनल स्मिथ जो अंगरेज़ी सेना का कमानियर था क्या देखता है कि निज़ाम की सेना जिसकी सहायता के लिये वह मदरास से चल कर इतनी दूर आया था, हैदर अली की सेना के साथ मिलकर उस पर चढ़ने को तैयार है।

७—करनल स्मिथ बंगलोर से हट कर मदरास को लौटने लगा। हैदर अली सत्तर हज़ार की भीड़ लेकर उसके पीछे

पड़ा। अंगरेज़ चांदगांव की घाटी में थे जहां से करनाटिक का रास्ता है। हैदर अली उन पर टूट पड़ा परन्तु हार कर भागा और उसके बहुत से सिपाही मारे गये। हैदर अली ने इस पर भी करनल स्मिथ का पीछा किया। त्रिचनापली पर बड़ी भारी लड़ाई हुई हैदर अली परास्त हुआ और भाग गया।

८—इस पर निज़ाम ने भी हैदर अली का साथ छोड़ दिया, तुरन्त हैदराबाद चला गया और अंगरेज़ों से मेल कर लिया।

९—इसके एक बरस पीछे तक हैदर अली से धीरे धीरे लड़ाई होती रही। पलटनें इधर उधर कूच करती फिरती थीं पर हैदर अली दूसरी लड़ाई का जोखिम उठाना न चाहता था; अन्त को वह एक बड़ी भारी सेना लेकर अत्यन्त बेग के साथ मदरास पहुंचा और वहां के गवर्नर से सन्धि की प्रार्थना की।

१०—गवर्नर के पास लड़ाई के लिये न रुपया था। वह जानता था कि कम्पनी के व्यापार का लाभ लड़ाई में ख़र्च हो जायगा तो कम्पनी प्रसन्न न होगी। उसको इतना भी अवकाश न था कि बम्बई या बंगाले के गवर्नरों को लिख कर उनसे सम्मति लेता क्योंकि हैदर अली कहता था कि मुझ को अभी उत्तर दो। गवर्नर ने हैदर अली के साथ सन्धि कर ली और यह शर्तें ठहरीं कि जो देश किसी ने दूसरे का जीत लिया है वह उसे फेर दे, दोनों में से किसी पर अगर कोई चढ़ाई करे तो दूसरा उसको मदद करे।

५७—वारेन हेस्टिङ्गस्—क्लाइव के पीछे बंगाले का गवर्नर

(सन् १७७२ ई० से १७७३ ई० तक)

१—ऊपर कहा जा चुका है कि बंगाले में निजमउद्दौला का शासन अच्छा न था। इसलिये क्लाइव ने इसकी जगह मीरजाफ़र के एक बेटे को दी। उसके दो नायब थे, एक बंगाले में दूसरा बिहार में। यह महसूल इत्यादि का रुपया इकट्ठा करके बंगाले के गवर्नर को दे देते थे और वह उनकी और उनके नौकरों की तनख़ाह देता था। अफ़ग़ानों और मरहठों से बचाने के लिये एक अंगरेज़ी सेना भी रहती थी।

वारेन हेस्टिङ्गस्

२—सात बरस, १७६५ ई० से १७७२ ई० तक यह दोहरा प्रबन्ध रहा। आधा प्रबन्ध अंगरेज़ों और आधा प्रबन्ध हिन्दुस्थानियों के हाथ में था पर इससे कुछ भी काम न चला। हिन्दुस्थानियों का प्रबन्ध बड़ा बुरा था। नवाब के नौकरों को सदा यह डर लगा रहता था कि न जाने कब निकाल दिये जायं। इसी से वह दूसरों को धोखा देने और अपना घर भरने पर उतारू रहते थे। जज और मुंसिफ हर जगह घूस लेते थे। कोई सरकारी नौकर अपने वेतन पर सन्तोष न करता था। वह इस धुन में लगा रहता था कि प्रजा से

जो कुछ मिल जाय लेकर धनी हो जांय। अमलों में बहुत से मुसलमान थे जिनको नवाब ने रक्खा था।

३—इस पर अनर्थ यह हुआ कि सन १७६९ से १७७० तक बंगाल में बड़ा अकाल पड़ा। बंगाल को बहुत सो प्रजा इससे नष्ट हो गई। जब फसल हो न होतो थी तो प्रजा कर कैसे देतो ?

४—बंगाले का सुप्रबन्ध करने के लिये एक योग्य पुरुष की आवश्यकता थी। ईष्ट इण्डिया कम्पनी के पास इस समय एक ऐसा मनुष्य था जो इस काम के करने की योग्यता रखता था। इसका नाम वारेन हेस्टिङ्गस् था। यह १७५० ई० में मुहर्रिर होकर कलकत्ते आया था और कम्पनी की नौकरी में सब से बड़े उहदे पर पहुंच गया था। यह क्लाइव के विश्वासी अफ़सरों में था और हिन्दुस्थानियों का हाल इससे बढ़कर कोई न जानता था।

५—सब से पहिले इसने बंगाले के दोहरे प्रबन्ध हो का अन्त किया; देशो नवाब और नायब छुड़ा दिये; बंगाले और बिहार के हर ज़िले में एक एक कलकृर रक्खा जो जजो का काम भो करता था; कलकृरों को मदद के लिये हिन्दू पंडित और मुसलमान क़ाजो रक्खे जो उनको धर्मशास्त्र और शरह मुहम्मदी समझाते थे। क़ानून का एक सोधा सादा ग्रन्थ तैयार हुआ कि जिस में सब लोग उसको जान लें। बहुत से कर उठा दिये गये। जो महसूल बचे उनके देने की एक सहज रीति और समय नियत कर दिया गया। अब हिन्दुस्थानी अहलकार तो बोच में रहे ही नहीं जो रुपया खा जाते इस लिये कम्पनी की आमदनी पहिले से बहुत बढ़ गई।

६—यह वह समय था कि शाह आलम अंगरेज़ों को रक्षा और सहायता छोड़ कर सिन्धिया के बुलाने पर इलाहाबाद से

दिल्ली चला गया था। सिन्धिया ने जब शाह आलम के नाम से पचीस लाख रुपया मांगा तो गवर्नर हेस्टिङ्गस् ने जवाब दिया कि पेनशन शाह आलम को दी जाती थी अब वह हमारे पास से चले गये हैं इस लिये वह उसके पाने के अधिकारी नहीं हैं। मरहठे हम से नहीं मांग सकते। यह भी कम्पनी के लिये पचीस लाख साल की बचत हो गई।

७--पहिले लिखा जा चुका है कि दोआबा अर्थात् गङ्गा यमुना के बीच का इलाहाबाद का ज़िला शाह आलम को दे दिया गया थी। मरहठों के पास चले जाने से वह भी शाह आलम के हाथ से जाता रहा। हेस्टिङ्गस् ने यह ज़िला अवध के नवाब शुजाउद्दौला को दे दिया और उसने उसके बदले में पचास लाख रुपया कम्पनी को दिया।

८—इसके कुछ दिन पीछे शुजाउद्दौला ने रुहेलों से लड़ाई की। यह अफ़ग़ान थे जो कई बरस पहिले अवध के उत्तर-पश्चिमीय कोने में रुहेलखण्ड में बस गये थे। यह लोग क्रोधी और निर्दयी थे; हिन्दुओं को बहुत सताते थे और नवाब को भी बहुत दिक करते थे। नवाब ने हेस्टिङ्गस् को मदद के लिये लिखा और इस सहायता के बदले चालीस लाख रुपया दिया। रुहेले हारे और भाग गये और सारे देश में शान्ति हो गई। पुराने रुहेले हाकिम का बेटा नवाब बनाया गया और उसके वंशवाले आज तक राज करते हैं। अफ़ग़ान सिपाही जहां तहां देश में बस कर खेती बारी करने लगे।

५८—वारेन हेस्टिङ्गस्, पहिला गवर्नर जनरल

(१७७४ ई० से १७८५ ई० तक)

१—हेष्टिङ्गस् के गवर्नर होने के दो बरस पीछे ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रबन्ध में भी बहुत कुछ उलट पलट हो गया। इङ्गलैण्ड की गवरमेण्ट ने एक क़ानून बनाया जिसका नाम रेग्युलेटिङ्ग ऐक्ट था। उसके अनुसार बङ्गाल का गवर्नर सारी बृटिश इण्डिया का गवर्नर जनरल हो गया और उसके मुक़र्रर करने का काम कम्पनी के हाथ से निकाल कर इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री के हाथ में दिया गया। कलकत्ते में एक बड़ी अदालत स्थापित की गई। इसके जज अङ्गरेज़ी गवरमेण्ट मुक़र्रर करके इङ्गलैण्ड से भेजती थी।

२—गवर्नर जनरल की मदद के लिये चार मेम्बरों की कौन्सिल स्थापित की गई। उसके मेम्बर अङ्गरेज़ी गवरमेण्ट की तरफ़ से मुक़र्रर होते थे।

३—अब तक ईष्ट इण्डिया कम्पनी ने भारतवर्ष में जो चाहा सो किया। इङ्गलैण्ड राज ने कोई रोकटोक नहीं की; इसलिये कि कम्पनी बिलकुल व्यापारी कम्पनी थी। यह अब कम्पनी राज करने लगी। भारत के बड़े बड़े देश उसके हाथ में आ गये। कम्पनी देशी राजाओं और नवाबों के साथ सन्धि और लड़ाई करने लगी थी इस लिये उचित समझा गया कि इङ्गलैण्ड की गवरमेण्ट का कम्पनी के ऊपर अधिकार रहे।

४—गवर्नर जनरल और उसकी कौन्सिल मद्रास और बम्बई के गवर्नरों से ऊंचे माने गये जिसमें वह बिना उसकी आज्ञा के सन्धि या लड़ाई न कर सकें। इसके पहिले हर गवर्नर स्वतन्त्र था और जो मन में आता था करता था और अपने ही

प्रान्त के हानि लाभ का विचार रखता था। अब इस बात की आवश्यकता हुई कि हिन्दुस्थान के समस्त अङ्गरेज़ों के मित्र हों तो एक हों और इसी भांति किसी से लड़ाई हो तो सब अङ्गरेज़ उससे लड़ें।

५—जब तक अकेला वारेन हेस्टिङ्गस् गवर्नर था, सारा काम बड़ी सुगमता से करता रहा। पर जब नये क़ानून के अनुसार कौन्सिल के मेम्बर नियत होकर आगये तो चार में से तीन मेम्बर हर बात में उससे विरुद्ध हो जाते थे। यह मेम्बर नये नये विलायत से आये थे; हिन्दुस्थान का कुछ भी हाल नहीं जानते थे। वारेन हेस्टिङ्गस् यहां का सच्चा हाल जानता था। फ्रान्सिस जो वारेन हेस्टिङ्गस् से जलता था और उसको निकलवा कर आप गवर्नर जनरल बनना चाहता था उन सबका मुखिया था।

६—कलकत्ते में आते ही फ्रान्सिस ने एक बङ्गाली ब्राह्मण नन्दकुमार को बहकाया और गवर्नर जनरल पर उससे झूठे दोष लगवाये। नन्दकुमार हेस्टिङ्गस् से बैर रखता था। कारण यह था कि दो अमली के समय में यह भी किसी पद पर नियत था और वारेन हेस्टिङ्गस् ने उसके काम में ऐब निकाला था। जिस समय नन्दकुमार ने वारेन हेस्टिङ्गस् पर झूठे दोष लगा रक्खे थे उन्हीं दिनों नन्दकुमार पर जालसाज़ी का मुक़दमा चलाया गया। नन्दकुमार अपराधी ठहराया गया और उसको फांसी दी गई।

७—सात बरस तक फ्रानसिस वारेन हेस्टिङ्गस् का विरोध करता रहा; इसके पीछे विलायत चला गया। इसके जाने पर कौन्सिल में वारेन हेस्टिङ्गस् की कोई रोक टोक न रह गई।

८—वारेन हेस्टिङ्गस् की गवर्नर जनरली में दो लड़ाइयां हुईं, पहिली मरहठों के साथ दूसरी हैदर अली के साथ।

५६—मरहठों की पहिली लड़ाई

(सन् १७७८ ई० से १७८२ ई० तक)

१—सन् १७७८ ई० में मरहठों के चौथे पेशवा माधवराव का देहान्त हो गया। उसी बरस वारेन हेस्टिङ्गस् बङ्गाले का गवर्नर नियत हुआ। माधवराव के कोई बेटा न था, इस कारण इस बात पर बड़ा झगड़ा हुआ कि माधवराव के पीछे कौन पेशवा बनाया जाय। पहिले उसका छोटा भाई पेशवा हुआ पर वह थ दनों पीछे मरवा डाला गया और उसका चचा राघोवा अथवा रघुनाथ राव पेशवा बन बैठा। मरहठा सरदारों ने विरोध किया इस कारण राघोवा ने बम्बई के गवर्नर से सहायता मांगी।

राघोवा

२—बम्बई के गवर्नर ने सूरत के स्थान पर सन् १७७५ ई० में सन्धिपत्र लिखा लिया जिसमें यह शर्तें लिखी गईं कि जो अङ्गरेज़ी सेना राघोवा की सहायता को भेजी जाय उसका ख़र्चा राघोवा दे और सालसिट और बसीन अङ्गरेज़ों को दिये जायं। यह टापू बम्बई के पास थे और अब बम्बई के भाग हैं। अङ्गरेज़ों ने पहिले भी कई बार दाम देकर पेशवा से यह टापू मोल लेना चाहा था पर उसने सदा इनकार कर दिया था।

३—बम्बई के गवर्नर को चाहिये था कि नये कानून के अनुसार इस नये सन्धिपत्र के बारे में भारत की गवरमेण्ट की मंजूरी ले लेता। पर उसने इङ्गलैण्ड सीधा कम्पनी को लिख दिया कि गवर्नर बम्बई ने इस तरह का सन्धिपत्र लिखा लिया है। कुछ दिनों के पीछे भारत की गवरमेण्ट को खबर लगी। उसने सन्धिपत्र को मंजूर करने से इनकार किया और सन् १७७६ ई० में पुरन्धर के स्थान पर पेशवा के बैरियों से जिनका अगुवा एक ब्राह्मण नाना फरनवीस था एक दूसरा सन्धिपत्र लिखा लिया। नाना फरनवीस ने भी सालसिट देने की प्रतिज्ञा की। इसी समय कम्पनी को सूरत के सन्धिपत्र का हाल मिल चुका था। वह सालसिट और बसीन के मिलने से बहुत प्रसन्न हुई और सन्धिपत्र को मंजूरी दे दी।

४—हिन्दुस्थान और बम्बई के गवर्नमेण्ट को यह उचित हुआ कि राघोवा के सन्धिपत्र के अनुसार कारवाई करें। बम्बई की सेना राघोवा को पूना पहुंचाने चली। पर रास्ते में सिन्धिया की कमान में मरहठा सरदारों की एक बड़ी भीड़ का सामना हुआ और अङ्गरेज़ी सेना को पीछे हटना पड़ा। उधर कप्तान पोफम एक बड़ा बहादुर अफ़सर वारेन हेस्टिङ्गस् की आज्ञा से कलकत्ते से चला, सिन्धिया की राजधानी ग्वालियर पहुंचा और ग्वालियर का क़िला ले लिया। इसी अवसर पर अंगरेज़ों के विरुद्ध मरहठों और हैदर अली में सन्धि हो गई और हैदर अली ने कारनाटिक पर चढ़ाई की। परन्तु सन् १७८२ ई० में हैदर अली मर गया। नाना फ़रनवीस के पक्ष के मरहठों ने यह समाचार सुनते ही सन्धि कर ली। सन् १७८२ ई० में सलबी के स्थान पर सन्धिपत्र लिखा गया और यह निश्चित हो गया कि न अङ्गरेज़ मरहठों के बैरियों को और न मरहठे अंगरेज़ों के बैरियो को मदद दें। सालसिट और बसीन अंगरेज़ों के पास रहे और राघोवा की पेनशन हो गई।

६०—मैसूर की दूसरी लड़ाई

(सन् १७८० ई० से १७८४ ई० तक)

१—हैदर अली ने दस बरस तक अंगरेज़ों के साथ सुलह रक्खी। इस अवकाश में उसकी शक्ति बढ़ती गई। उसने मैसूर मलयबार और कनारा के सारे पालीगार और राज दबा लिये। उसके पास फ़रासीसियों की सिखाई हुई एक बड़ी सेना थी; सौ तोपें थीं और चार सौ फ़रासीसी सिपाही थे।

२—हैदर अली जानता था कि अंगरेज़ मरहठों की लड़ाई में फंसे हैं। इस लिये वह यह समझता था कि मदरास जीत लेना सुगम है। उसने छिपे छिपे निज़ाम और मरहठों को लिखा कि दक्षिण से अंगरेजों को निकालने में मेरी मदद करो। इसके पीछे सन् १७८० ई० में एक लाख सिपाहियों की भीड़ लेकर करनाटिक पर टूट पड़ा; कृष्णा से लेकर कावेरी नदी तक सारा देश रौन्द डाला; गांवों में आग लगा दी; ढोर हांक ले गया। मर्द मार डाले; स्त्रियों और बच्चों को पकड़ ले गया। हैदर अली के इस उपद्रव से ऐसा काल पड़ा कि पचास बरस तक लोगों ने इसका गीत गाया और इसकी कहानी कहते रहे।

३—मदरास का गवर्नर लड़ाई के लिये तैयार न था। जितने सिपाही थे सब की छोटी छोटी टुकड़ियां ठांव ठांव पर बंटी थीं। करनैल बेली एक छोटी सी सेना लिये उत्तरीय सरकार की ओर से मदरास की सहायता को चला आता था कि एकाएक हैदर अली ने पूलीनूर के निकट उस पर धावा मारा। करनैल बेली बूढ़ा और निर्बल था; न तो क्लाइव की भांति उसका साहस

ही था न वह वैसा फुरतीला था। उसने बिचार किया कि मेरे सिपाही गिनती में कम हैं ; हैदर अली का सामना करने के लिये काफ़ी नहीं हैं। सिपाही लड़ना चाहते थे पर वह अल्पबुद्धि था। वह हैदर अली की बातों में आ गया। हैदर अली ने कहा कि अगर तुम्हारे सिपाही हथियार डाल दें तो मैं उनके प्राण न लूगा। जब हथियार रख दिये गये तो हैदर अली अपना वादा भूल गया। बहुतेरों को तो उसने बड़ी निठुराई से मरवा डाला और कुछ को क़ैदी बना कर मैसूर भेज दिया। एक छोटी सो सेना करनैल ब्रेथवेट के साथ चली आ रही थी उसका भी यही हाल हुआ।

४—पर सर आयर कूट जिसने वन्दवाश की लड़ाई सर की थी ताज़ा सिपाही लिये हुए बंगाले से आ रहा था। यह १७८१ ई० में पोर्टो नोवो (महमूद बन्दर) के स्थान पर हैदर अली से भिड़ गया और उसकी कुल सेना को हरा दिया। फिर पूलीनूर पर भी हराया जहां एक साल पहिले करनैल बेली के सिपाही मारे गये थे। फिर सेलमगढ़ में उसे तीसरी बार हराया और इसी भांति दूसरे साल आरनी के स्थान पर हराया।

५—इसके कुछ समय पीछे हैदर अली मर गया। अंगरेज़ों ने उसके बेटे टीपू सुलतान से मंगलोर के स्थान पर सन्धि कर ली। जो जो नगर और देश जीते गये थे सो फेर दिये गये और अंगरेज़ों के आदमी जो मैसूर में क़ैद थे छोड़ दिये गये।

६१—प्रबन्धकारिणी सभा

(सन् १७८४ ई०)

१—हैदर अली और मरहठों के साथ लड़ने में अंगरेजों का बहुत रुपया खर्च हुआ, और इस बात की आवश्यकता हुई कि हेस्टिङ्गस् कहीं न कहीं से रुपया इकट्ठा करे। कारनाटिक के बचाने के लिये हैदर अली से लड़ाई की गई थी पर करनाटिक का नवाब मुहम्मद अली एक पैसा भी नहीं दे सकता था। शत्रु ने उसके देश को उजाड़ दिया था और अकाल भी पड़ रहा था, फिर प्रजा मालगुज़ारी और कर देती तो कहां से देती।

२—जब मद्रास से रुपया इकट्ठा न हो सका तो हेस्टिङ्गस् ने शुजाउद्दौला के बेटे अवध के नवाब से कहा कि जो रुपया तुम्हें कम्पनी को देना रह गया है उसे दो। उसने उत्तर दिया कि मेरे बाप ने जो रुपया खज़ाने मे छोड़ा था वह मेरी मा और दादी ने दबा लिया है अगर आप की आज्ञा हो तो मैं रुपया उनसे ले लूं। हेस्टिङ्गस् ने आज्ञा दे दी। नवाब ने बेगमों से रुपया निकलवाने में उनको और उनके नौकरों को ऐसा कष्ट दिया कि जिसका वर्णन नहीं हो सकता। हेस्टिङ्गस् का उसमें कोई अपराध न था पर उसके पुराने बैरी फ्रानसिस ने कहा कि इस में सारा अपराध इसी का है।

३—फिर हेस्टिङ्गस् ने बनारस के राजा चेतसिंह से कहा कि कम्पनी को कुछ रुपया दो। यह अंगरेज़ों की सहायता से गद्दी पर बैठा था और उनको कर देता था। उसका धर्म था कि लड़ाई में कम्पनी की सहायता करे। कारण यह कि

कम्पनी के शत्रु उसके भी शत्रु थे। अंगरेज़ों के सिपाही उसे न बचाते तो मरहठे उसका देश छीन लेते अथवा चौथ लेते। चेतसिंह बड़ा धनी था फिर भी उसने कम्पनी की सहायता न की। हेस्टिङ्गस् स्वयं बनारस गया कि चेतसिंह से कुछ रुपया लें। चेतसिंह गद्दी पर से उतार दिया गया और उसका भांजा राजा हुआ। इस विषय में भी फ्रानसिस यही कहता था कि हेस्टिङ्गस् ने अत्याचार किया है।

४—मिस्टर फ्रानसिस इङ्गलैण्ड पहुँचा और ईस्ट इण्डिया कम्पनी से वारेन हेस्टिङ्गस् की शिकायत की। कम्पनी के डाइरेक्टरों ने समझा कि वारेन हेस्टिङ्गस् दोषी है और फ्रानसिस सच कहता है। वारेन हेस्टिङ्गस् पर बड़े बड़े दोष लगाये गये। वारेन हेस्टिङ्गस् अपना पद छोड़ कर विलायत गया और वहां पारलिमेण्ट की सभा में उसका मुक़द्दमा हुआ। सात बर्ष उस पर बिचार किया गया और वारेन हेस्टिङ्गस् निर्दोष ठहराया गया।

५—इसी अवसर पर इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री ने एक नया क़ानून जारी कराया जिसको पिट्स इण्डिया बिल कहते हैं।

६—इस क़ानून के अनुसार एक प्रबन्धकारिणी सभा बनाई गई। इसके छः मेम्बर थे। सभा का काम यह था कि हिन्दुस्थान की गवरमेण्ट की बाग अपने हाथ में रक्खे। पारलिमेण्ट की अनुमति के बिना किसी देशी राजा या शासनकर्त्ता से सुलह या लड़ाई न की जाय। सन् १७८४ ई० से यही सभा भारत का शासन करती थी, ईस्ट इण्डिया कम्पनी नहीं।

६२—लार्ड कार्नवालिस, दूसरा गवर्नर जनरल

(सन् १७८६ ई० से १७९३ ई० तक)

१—दूसरा गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस एक धनी अंगरेज़ था। पहिले कभी हिन्दुस्थान में न रहा था। इसको जल्द ही मैसूर के साथ लड़ाई का प्रबन्ध करना पड़ा।

लार्ड कार्नवालिस

२—अब टीपू सुलतान को राज्य करते आठ बरस हो गये थे। इस समय में उसने मलयबार, कुड़ग और मैसूर के आस पास के कुछ और देश जीत लिये थे। वह बिजय के मद में मत्त था और समझता था कि हिन्द में मेरे बराबर कोई बादशाह नहीं है। औरंगज़ेब की तरह उसने भी जीते हुए देश के रहनेवालों को मुसलमान करने का उद्योग किया और जिन लोगों ने मुसलमान होना स्वीकार न किया उनका बध किया। टीपू अंगरेज़ों से जलता था और खुल्लम खुल्ला कहा करता था कि एक न एक दिन इनको इस देश से निकाल कर छोड़ूंगा।

३—अन्त को उसने ट्रैवानकोर पर चढ़ाई की। ट्रैवानकोर का राजा अंगरेज़ों का मित्र था। उसने कहला भेजा कि मुझे टीपू से बचाओ; गवर्नर जनरल ने सहायता करने की प्रतिज्ञा की और निज़ाम और मरहठों से पूछा कि तुम इस सब के बैरी से लड़ने में

साथ दोगे या नहीं। दोनों ने बड़े आदर से स्वीकार किया। टीपू से कहलाया गया कि तुम ट्रावनकोर से निकल जाओ। उसने न माना और लड़ाई की घोषणा दी गई। यह तीसरी लड़ाई थी जो अंगरेज़ों को मैसूर के साथ लड़नी पड़ी।

४—टीपू सुलतान कारनाटिक उजाड़ने लगा जैसा कि दस बरस पहिले हैदर अली ने किया था। लार्ड कार्नवालिस कलकत्ते से चल कर मदरास आया कि आप सेना की कमान करे। वह मैसूर के देश में जा घुसा और बङ्गलोर ले लिया। निज़ाम और मरहठों ने जो सेना भेजी थी किसी काम की न थी और लड़ाई में धावे पर न गई और देश लूटने में लगी रही। लड़ाई की कठिनाई और दुख सब अंगरेज़ों को झेलने पड़े।

टीपू सुलतान

५—लार्ड कार्नवालिस ने बङ्गलोर के आस पास के कई और क़िले ले लिये और फिर धीरे धीरे कूच करता हुआ श्रीरंगपत्तन पहुंचा; टीपू की सेना को परास्त कर के शहर में भगा दिया और क़िले के कोट पर गोला बरसाने लगा। टीपू ने देखा कि क़िला जल्द हाथ से जाता रहेगा, इस लिये वह सन्धि करने पर तैयार हो गया और कहने लगा कि अंगरेज़ लोग जो शर्त करें वही मुझे भी स्वीकार है।

६—अब श्रीरंगपत्तन के स्थान पर अंगरेज़ उनके दोनों साथी और टीपू सुलतान में सन्धि हुई। टीपू को अपना आधा राज

और लड़ाई का ख़र्चा तीस करोड़ रुपया देना पड़ा आधा रुपया उसी क्षण और आधा कुछ दिन पीछे। जो आधा रुपया नहीं दिया था उसके बन्धक में टीपू ने अपने दो बेटों को मोल दे दिया।

७—जो देश टीपू सुलतान से मिला था उस में निज़ाम और मरहठों का कोई हक़ न था। तो भी अंगरेज़ों ने उनके साथ बराबर बांट लिया। पश्चिमीय समुद्रतट पर मलयबार और कारनाटिक के दो ज़िले जो अब सलेम और मदूरा कहलाते हैं अंगरेज़ों के हिस्से में आये।

८—लार्ड कार्नवालिस ने बंगाले में ज़मीन का बन्दोबस्त पक्का कर दिया। मुग़लों के राज्य में ज़मीदारों को मालगुज़ारी पर धरती दी जाती थी। ज़मीदार नवाब को एक बंधी रक़म दे देते थे और प्रजा से जितना चाहते थे वसूल कर लेते थे। नवाब को रक़म देने के पीछे जो कुछ बचता था सब ज़मीदारों के पेट में जाता था। ज़मीन बादशाह की थी और ज़मीदार उसके दासों के नौकर थे। वह प्रजा को दास समझते थे और उनके साथ बड़ी निठुराई करते थे; प्रजा को ऐसा निचोड़ते थे कि किसान बेचारों की बड़ी दुर्दशा होती थी। इस बिषय में सरकार कम्पनी के पास चारों ओर से शिकायतें पहुंचती थीं।

९—इस दुख के दूर करने और सब के सुभीते के बिचार से लार्ड कार्नवालिस ने ज़मीदार को वह सारी धरती दान कर दी जिसका लगान वह वसूल करता था। ज़मीन का उसे पूरा मालिक बना दिया। जो मालगुज़ारी ज़मीदारों की ओर से सरकार कम्पनी को देनी पड़ती थी वह भी सदा के लिये एकही बार मुक़र्रर कर दी गई। लार्ड कार्नवालिस ने ज़मीदारों का एक ऐसा समाज बना दिया जो धरती के वैसे ही स्वामी रहे जैसे इङ्गलैण्ड में

रईस होते हैं। इन लोगों के पास जो धरती है वह न मोल ली हुई है न जीती हुई है। सरकार अंगरेज़ ने उन्हें सेंत दी है।

१०—लार्ड कार्नवालिस ने ज़िले ज़िले में मुकद्दमा फ़ैसला करने के लिये एक जज और सरकारी मालगुज़ारी वसूल करने का एक कलक्टर मुक़र्रर किया। लार्ड क्लाइव ने दोनों काम एक ही अफ़सर को सौंपे थे पर पीछे यह ज्ञान पड़ा कि एक ही अफ़सर से दोनों काम अच्छी तरह से नहीं हो सकते।

६३—सर जान शोर, तीसरा गवर्नर जनरल

(सन् १७९३ ई० से १७९८ ई० तक)

१—तीसरा गवर्नर जनरल सर जान शोर कलकत्ते के ईस्ट इण्डिया कम्पनी का सिविल अफ़सर था। यह पांच बरस तक गवर्नर जनरल रहा। इसके समय में कोई लड़ाई भिड़ाई नहीं हुई और न बृटिश इण्डिया के राज्यप्रबन्ध में कोई बड़ा अदल बदल हुआ।

२—इङ्गलैण्डराज की ओर से कड़ी आज्ञा हो चुकी थी कि गवर्नर जनरल किसी देशी राजा बाबू के साथ किसी प्रकार की छेड़ छाड़ न करे। गवर्नमेंट अंगरेज़ी का यह अभिप्राय था कि जो बड़े बड़े राज्य इस समय हैं वह ज्यों के त्यों बिना घट बढ़ बने रहें। न कोई अधिक बली हो जाय न कोई निर्बल हो जिससे सब जगह शान्ति बनी रहे।

३—परन्तु निज़ाम, मरहठे और टीपू सुलतान इस शान्ति के बिरोधी थे। टीपू यह चाहता था कि मेरी जो शक्ति घट गई है उसको पूरी करके पहिले सा बली बन जाऊं। मरहठों की यह इच्छा थी कि टीपू, निज़ाम और देशी राजवाड़ों से चौथ

ली जाय। निज़ाम चाहता था कि अंगरेज़ मेरी सहायता करें और मुझे मरहठों से बचायें।

४—जब मरहठों ने जाना कि अंगरेज़ निज़ाम की सहायता न करेंगे तो उन्होंने कई बरस की चौथ जो निज़ाम ने न दी थी उससे मांगी। निज़ाम के पास न देने को रुपया था न लड़ने की शक्ति। उसने गवर्नर जनरल सर जान शोर को लिखा पर वहां से उत्तर मिला कि हम इस बारे में कुछ नहीं कर सकते।

५—इस पर पेशवा ने मरहठे सरदारों को सन्देशा भेजा कि सब मिलकर निज़ाम के ऊपर चढ़ाई करें। मरहठे राजा गवालियर, इन्दौर, बरार और गुजरात से बड़ी बड़ी सेना लेकर आये और बड़ी भीड़ से निज़ाम के ऊपर टूट पड़े। सन् १७९५ ई० में करौला के स्थान पर बड़ी भारी लड़ाई हुई। निज़ाम हार गया और उसे अपना राज मरहठों को भेंट कर देना पड़ा। और जो आधा बचा उसके लिये उसने सदा चौथ देने की प्रतिज्ञा की।

६—अब मरहठे राजाओं के आपस में इस देश के बांटने मे झगड़े हुए, और तीन बरस तक पेशवा, सिन्धिया, होलकर और गायकवाड़ और भोंसला में युद्ध होता रहा।

६४—मार्किस वेलेज़ली, चौथा गवर्नर जनरल

(सन् १७९८ ई० से सन् १८०५ ई० तक)

पूर्वार्द्ध

१—चौथे गवर्नर जनरल मार्किस वेलेज़ली ने अंगरेज़ों को भारत में सब से बढ़कर शक्तिमान बना दिया। इसके साथ उसका छोटा भाई कर्नेल वेलेज़ली भी आया था जो बड़ा

वीर था और अपने सर्वोच्च वीर कर्मों के कारण पहिले सर आर्थर वेलेज़्ली हो गया ; पीछे ड्यूक ऑफ़ वेलिङ्गटन का पद पाकर अन्त में इङ्गलैंड का प्रधान मंत्री बनाया गया।

२—एक कुल के सारे बच्चे कुलपति अर्थात् अपने बाप की आज्ञा मानते हैं और बाप उनसे अच्छे काम कराता है। बच्चा कोई बुरी बात करता है तो बाप उसे दण्ड देता है। बाप बच्चों की रक्षा करता है, दुख दर्द से बचाता है और वह बातें बताता है जिनका करना उचित है या जिनको न करना चाहिये और जिनसे बचना चाहिये।

३—अच्छे राज्य में प्रजा अपने राजा की आज्ञा ऐसे ही मानती है जैसे बच्चे अपने बाप की। राजा या बादशाह अपनी प्रजा को दुख से बचाता है, अपराधियों को दण्ड देता है, निर्बलों की रक्षा करता है जिससे उस की प्रजा सुख चैन से रहती है।

४—इसी प्रकार भारत ऐसे बड़े देश में सब जगह शांति रखने और प्रजा की रक्षा के निमित्त यह परमावश्यक है कि एक शक्तिमान न्यायपरायण और सुजन हाकिम या बादशाह हो। शक्तिमान उसे इसलिये होना चाहिये कि सामंतों और हाकिमों से अपनी आज्ञा पूरी कराये, चोरों और लुटेरों को दबाने की योग्यता उस में हो जिससे सब जगह शांति रहे। उसके पास समुचित धन होना चाहिये जिससे अकाल पड़ने पर कंगालों और दीन दुखियों की सहायता कर सके। बुद्धिमान और सुजन होगा तो प्रजा के लिये अच्छे और न्याय के क़ानून बनायेगा और सब को उस क़ानून के अनुसार चलने को बाध्य करेगा।

५—वेलेज़्ली के समय तक अंगरेज़ों के मन में यह समाया ही न था कि अकबर की भांति सारे भारतवर्ष पर राज करें। अङ्गरेज़ों ने भारत के बहुत से भाग ले लिये पर उनकी दशा यह थी कि

अपनी इच्छा नहीं रहने पर भी किसी के साथ लड़ना पड़ा और युद्ध समाप्त होने पर कोई प्रान्त जीत लिया गया। अङ्गरेज़ आप से आप किसी पर चढ़ाई न करते थे। हां कोई उन्हें छेड़ता था तो अपने बचाव के लिये न लड़ते तो क्या करते? ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत में व्यापार करके रुपया कमाना चाहती थी। देश जीतना उसका अभिप्राय न था। कम्पनी ने बार बार क्लाइव, कार्नवालिस और और गवर्नर जनरलों से ताकीद की थी कि कभी किसी देशी राजा से न लड़ो और भारत का कोई देश मत लो।

६—पर लार्ड वेलेज़ली ने देखा कि भारत के हर प्रान्त में लूट मार मची है और देश का सत्यानाश हो रहा है। उसने देखा कि भारत के शासन करने वालों में अङ्गरेज़ सब से बली, सब से बुद्धिमान और सभ्य हैं और उनका धर्म है कि भारत को लूट मार और चौपट होने से बचायें। इस लिये यह परमावश्यक हो गया कि जितने शासनकर्त्ता हैं उन सब से प्रतिज्ञा करा ली जाय कि वह लोग आपस में लड़ाई दंगा न करें और अपने अपने देश का प्रबन्ध ठीक रक्खें। इसी के साथ यह भी उचित जाना गया कि जो राजा ऐसी प्रतिज्ञा करना स्वीकार न करें तो उससे बरज़ोरी से ऐसी प्रतिज्ञा कराई जाय। ऐसे अभिप्राय से एक बड़ी सेना रखने का आवश्यकता हो गई जो सारे देश में शान्ति रक्खे और इस सेना का ख़रचा सब मिलकर दें। अङ्गरेज़ों का यह धर्म रहा कि जो प्रान्त अपने हिस्से का ख़रचा दे उसको बैरियों से रक्षा करें।

७—इस समय की बड़ी बड़ी रियासतें यह थीं। मरहठों के पांच सरदार पेशवा, सिन्धिया, होलकर, गायकवाड़ और भोंसला, निज़ाम और टीपू सुलतान। सिख लोग भी बलवान होते जाते थे पर अभी तक उनकी कार्रवाही पंजाब के बाहर न हुई थी,

मुग़लवंश का बादशाह शाह आलम, बूढ़ा और दीन निःसहाय सिन्धिया की क़ैद में था। अवध के नवाब की शक्ति बहुत कम थी।

८—इसी अवसर पर फ्रांस में एक बड़ा राजविप्लव हुआ। फ्रांसबासी अपने बादशाह से बिगड़ गये और बादशाह और उसकी मलका दोनों को मार डाला। एक फ़रांसीसी सेनापति नेपोलियन नामी फ्रांस का हाकिम बन बैठा। उसके पास एक बड़ी शक्तिशालिनी सेना थी। उसने यूरोप के कई देश जीत लिये। अङ्गरेज़ों के साथ भी उसने लड़ाई छेड़ दी और कहने लगा कि इङ्गलैंड पर चढ़ाई करूंगा और उसे जीत कर छोड़ूंगा।

९—लार्ड वेलेज़ली ने देखा कि निज़ाम टीपू और सिन्धिया सब के पास बड़ी बड़ी सेनायें हैं जिनको फरांसीसियों ने पलटन की क़वाइद और युद्ध की रीति सिखाई थी। फ़रांसीसियों का प्रसिद्ध सेनापति मिश्र देश तक आ पहुंचा था। टीपू ने नेपोलियन को लिखा कि तुम आओ और अङ्गरेज़ों को भारत से निकालने में मेरी सहायता करो। नेपोलियन ने उसका साथ देना स्वीकार किया। ऐक छोटी सी फरांसीसी पलटन मंगलोर में भी पहुंच गई। पर यह पाण्डीचरी न जा सकी क्योंकि अङ्गरेज़ों ने पहिले वहां अपना अधिकार जमा लिया था।

१०—इस समय गवर्नर जनरल ने निज़ाम, टीपू सुलतान और पेशवा को जो अभी तक मरहठा जाति का सिरताज समझा जाता था, यह लिखा कि फरांसीसी अङ्गरेज़ों की जान के गाहक हैं; इस लिये जो फरांसीसी उनके यहां नौकर हों उन्हें निकाल दें और अपने अपने देश में शान्ति रखने और रक्षा के लिये अङ्गरेज़ी सेना रक्खें और उसका ख़र्चा दें। इस सेना से अभिप्राय यह था कि शासनकर्त्ताओं को अपने अपने देश में शान्ति रखने में सहायता

करें। इस लिये उसको सहायकसेना कहते हैं और जिस रीति पर उसको वेलेज़ली ने चलाने का विचार किया था वह सहायक रीति के नाम से प्रसिद्ध है।

११—इन तीनों में निज़ाम सब से निर्बल था और मरहठों से बहुत डरता था। उसने वेलेज़ली का मत तुरन्त स्वीकार कर लिया। सन्धि यह थी कि अङ्गरेज़ मरहठों से उसकी रक्षा करें और उससे चौथ देने का भार उतरवा दें। निज़ाम ने फ़रांसीसी सिपाही सब छुड़ा दिये और एक अङ्गरेज़ी पलटन हैदराबाद में पहुंच गई। उस समय निज़ाम वैरियों से निर्भय हो गया और आज तक जितने निज़ाम हुए सब ने निश्चिन्त होकर शान्तिपूर्वक अपने देश का शासन किया है और अङ्गरेज़ों के मित्र और सहायक रहे हैं। टीपू सुलतान और मरहठे भी वेलेज़ली को इस उत्तम नीति को मान लेते तो निज़ाम की नाईं वह लोग भी ऐसेहीं हरे भरे देख पड़ते और उनको सन्तान राज करती होती।

१२—पर टीपू ने न माना। जो अङ्गरेज़ी अफ़सर गवर्नर जनरल को सेना लेकर उसके पास गया था उससे टीपू ने भेंट भी न की। चौथी बार मैसूर के साथ लड़ाई की घोषणा की गई। पेशवा सिन्धिया से डरता था। उसने यह प्रतिज्ञा की कि मैं अङ्गरेज़ों की सहायता करूंगा जो अङ्गरेज़ सिन्धिया से मुझे बचायें, और मरहठे राजा सब अलग थे।

१३—दो अङ्गरेज़ी सेना, एक बम्बई से और दूसरी मद्रास से मैसूर पहुंचीं। मद्रास की पलटन का कमानियर जनरल हैरिस था। कर्नल वेलेज़ली भी उसके साथ था। पहिले टीपू ने बम्बई की पलटन पर धावा मारा पर हार गया। फिर पीछे हट कर दूसरी पलटन पर टूट पड़ा, यहां भी हारा। अब दोनों अङ्गरेज़ी सेनाओं ने उसे आ दबाया और वह अपनी राजधानी श्रीरंगपत्तन में घिर गया।

थोड़े दिन गोले बरसे और कोट का कोना टूटा गया। जब पूरी तैयारी हो गई तो जनरल पेटर्ड जो पहिले बहुत दिनों तक श्रीरङ्गपत्तन में क़ैद रह कर टीपू के हाथ से दुख पा चुका था और पहिली लड़ाई की समाप्ति पर छोड़ दिया गया था अङ्गरेज़ी पलटन लेकर क़िले पर चढ़ा। सात मिनट में कोट पर पहुंच गया और एक घंटे में क़िला ले लिया गया। टीपू सुलतान फाटक पर लड़ता हुआ मारा गया।

१४—अब मैसूर देश जीत लिया गया। गवर्नर जनरल चाहता तो उसे अङ्गरेज़ी राज्य में मिला लेता परन्तु गवर्नर जनरल ने पांच बरस के छोटे बच्चे को जो उस हिन्दू राजा के वंश में था जिसको हैदर अली ने उतार दिया था मैसूर की गद्दी पर बैठाया। उसका नाम कृष्णराज था। देश का वह भाग जो मैसूर से अलग था और हैदर अली और टीपू ने जीत कर मिला लिया था अङ्गरेज़ निज़ाम और मरहठों में बंट गया। अङ्गरेज़ों को वह इलाक़ा मिला जो अब कानारा और कोयमबटूर के नाम से प्रसिद्ध है। टीपू सुलतान के बेटों के साथ बड़े मित्र भाव का बर्ताव किया गया। उनके लिये बड़ी बड़ी पेनशनें कर दी गईं और वह बेलौर भेज दिये गये जहां वह आराम से रहें सहें।

६५—मार्क़िस वेलेज़ली (उत्तरार्द्ध)

१—कुछ दिन पीछे निज़ाम ने यह प्रार्थना की कि जो अङ्गरेज़ी सेना मेरी सहायता के लिये हैदराबाद भेजी गई है उसका ख़र्चा नगद लेने के बदले मुझ से वह ज़िले ले लिये जायं जो मुझे अभी मिले हैं। कम्पनी ने यह बात मान ली और सन् १७९९ ई० में तुंगभद्रा और मैसूर के बीच का इलाक़ा जो अब बिलारी और

कड़ापा के ज़िले कहलाते हैं समर्पित देश के नाम से अंगरेज़ी राज्य में आ गये।

मार्किस वेलेज़ली

२—तंजौर का देश जिसके बीच में हो कर कावेरी नदी बहती है, इतना उपजाऊ है कि उसे दक्खिन का बाग कहते हैं। उसको शिवाजी के भाई ने जीत लिया था और डेढ़ सौ बरस तक मरहठे इसका शासन करते रहे। यहां का अन्तिम मरहठा राजा बड़ा अत्याचारी था। उसने इतना कर लगाया कि प्रजा के पास बड़ी कठिनाई से खाने को बचता था। हज़ारों आदमी उससे बचने के लिये तंजौर छोड़ कर चले गये। कुछ दिन पीछे राजा भी निःसन्तान मर गया। उसके कुल के दो कुंवर गद्दी के दावादार निकले। लार्ड वेलेज़ली ने इस बिचार से कि इन दोनों में लड़ाई दंगा न हो और देश का प्रबन्ध भी संभल जाय तंजौर के इलाके को अंगरेज़ी राज्य में मिला लिया और दोनों के लिये बड़ी बड़ी पेनशनें कर दीं।

३—महम्मद अली जिसको क्लाइव ने सन् १७५६ ई० में उसके बैरियों से बचाया था सन् १७५६ ई० से लेकर १७६५ ई० तक कारनाटिक का नवाब रहा। उसका प्रबन्ध कभी अच्छा न था। हैदर अली और टीपू के साथ जो लड़ाई हुई उसका भी अभिप्राय यह था कि कारनाटक देश की रक्षा हो। फिर भी महम्मद अली ने अंगरेजों की सहायता न की। जहां तक हुआ उसके अफ़सर उलटे बैरी की मदद करते रहे। उसने अपने सिपाहियों को

तनख़ाह न दी। बहुत से सिपाही टीपू के पास चले गये और अंगरेज़ों के विरुद्ध लड़ने लगे। देश की मालगुज़ारी निज के खेल तमाशे में बिगाड़ता रहा और इतना कर्ज़ा कर लिया कि उसे वह पटा न सका। छिआलिस बरस राज करके महम्मद अली मर गया और उसका बेटा उमदतुल-उमरा सिंहासन पर बैठा। जब अंगरेज़ों ने श्रीरंगपत्तन ले लिया, उनके हाथ कुछ ऐसी चिट्ठियां लगीं जो महम्मद अली और उसके बेटे ने छिप छिप कर हैदर अली और टीपू के नाम भेजी थीं और जिनमें दोनों ने अंगरेज़ों के विरुद्ध प्रतिज्ञा की थी। उसी समय तीन बरस नवाबी करके उमदतुल-उमरा भी मर गया। उसका प्रबन्ध बाप से भी बुरा था। उसने कोई बेटा न छोड़ा। इस पर लार्ड वेलेज़ली ने कारनाटिक को अंगरेज़ी शासन में ले लिया और महम्मद अली के भतीजों और नातेदारों के लिये बड़ी बड़ी पेनशनें कर दीं।

४—इस रीति से मद्रास हाता बन गया। इसका आरम्भ १७५६ ई० में करनल क्लाइव ने किया था जब उसने फ़रांसीसियों से उत्तरीय सरकार का इलाक़ा लिया था। टीपू के साथ पहिली लड़ाई के पीछे १७६२ ई० में लार्ड कार्नवालिस ने मलयबार, सलेम और मदुरा का इलाक़ा मिला लिया था। लार्ड वेलेज़ली ने कनाड़ा, कोयमबटूर, तंजौर और कारनाटिक जोड़ कर हाता पूरा कर दिया, उस दिन से आज तक सौ बरस के समय में कोई लड़ाई दङ्गा झगड़ा बखेड़ा नहीं हुआ और प्रजा हरी भरी धन धान से पूरी है।

५—फिर लार्ड वेलेज़ली ने अवध के नवाब को लिखा कि तुम भी हैदराबाद के निज़ाम की तरह सहायक श्रेणी में आना अङ्गीकार करो। पहिले तो नवाब ने न माना पर पीछे जो उसने देखा कि न मानने और हठ करने से कोई लाभ नहीं है तो वह

भी मान गया। एक अंगरेज़ी सेना अवध को भेजी गई और उसके ख़र्चे को नवाब ने गंगा यमुना के बीच का दोआबा अंगरेज़ों को सौंप दिया। यह वही दोआबा है जो और कुछ ज़िलों के मिल जाने से संयुक्त प्रान्त कहलाता है।

६६—मार्क्विस वेलेज़ली (समाप्त)

१—अब एक मरहठे बचे जो अंगरेज़ों के बस में न आये थे और जिन्हों ने गवर्नर जनरल लार्ड वेलेज़ली की नई रीति स्वीकार न की थी। मैसूर की अन्तिम लड़ाई की समाप्ति पर लार्ड वेलेज़ली ने राघोबा के बेटे पेशवा बाजीराव को लिखा कि तुम वह शर्तें मान लो जो निज़ाम ने मान ली हैं और फ़रांसीसी सिपाहियों को निकाल दो और उनकी जगह अपनी मदद के लिये अंगरेज़ी सेना रख लो तो मैसूर से जीते हुए देश का तिहाई भाग तुमको दे दूंगा। मगर पेशवा ने अपने बूढ़े ब्राह्मण मन्त्री नाना फड़नवीस के कहने में आकर इन शर्तों को न माना।

बाजीराव

२—दूसरे साल सन् १८०० ई० में नाना फ़ड़नवीस मर गया। नये पेशवा ने तुरन्त होलकर से लड़ाई ठान ली। होलकर ने पूना ले लिया और एक नया पेशवा गद्दी पर बिठा दिया। बाजीराव अपने प्राणों के डर से भाग कर बम्बई पहुंचा और वहीं से लार्ड वेलेज़ली को लिखा कि जो अङ्गरेज़ मुझे पूने की गद्दी

पर बैठा दें तो मैं उनकी शर्तें मान लूं। १८०२ ई० में बसीन के किले में जो बम्बई से बीस मील उत्तर है पेशवा ने सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर किये और यह प्रतिज्ञा की कि अब से पेशवा के पद से मैं मरहठा सरदारों का मुखिया न बनूंगा, न अङ्गरेज़ों की अनुमति बिना और किसी मरहठा सरदार से कोई सम्बन्ध रक्खूंगी, और अपने देश की रक्षा के लिये अङ्गरेज़ी सेना रक्खूंगा। इस फौज के ख़र्चे के लिये पेशवा ने कुछ ज़िले कम्पनी को दिये जो अब बम्बई हाते में मिल गये हैं।

नाना फड़नवीस

३—इसी समय गुजरात के राजा गायकवाड़ ने पेशवा को तरह अङ्गरेज़ों के साथ एक सन्धि की जिसके अनुसार उसने अङ्गरेज़ों को भारत का सम्राट मान लिया; अपनी सहायता के लिये अपने देश में अङ्गरेज़ी सेना रखना स्वीकार किया और उस सेना का ख़र्चा देने की प्रतिज्ञा की।

४—दौलत राव सिन्धिया और राघोजी भोंसला ने सन्धि करना स्वीकार न किया; बसीन के सन्धिपत्र का हाल सुन कर बहुत बिगड़े और इस बात का उद्योग किया कि होलकर टूट कर उन से मिल जाय और अङ्गरेज़ों से लड़ें। दोनों ने अपनी पलटनें सजीं और लड़ाई की तैयारी कर दी।

५—लार्ड वेलेज़ली ने भी हाल सुना। वह भी लड़ाई के लिये तैयार हो गया। जनरल लेक सेना लेकर सिन्धिया का सामना करने के लिये उत्तरीय भारत में पहुंचा। करनैल वेलेज़ली और

करनल स्टिवेनसन् एक और सेना लेकर दक्षिण से आये। सन् १८०३ ई० में असेई के स्थान पर जो निज़ाम के राज में है सिन्धिया और राघोजो भोंसला को पलटन से करनैल वेलज़ली का सामना हुआ। इसके पास पांच हज़ार से कम सिपाही थे। मरहठों के पास पांच हज़ार थे। फिर भी करनैल वेलज़ली की जीत हुई। इसी साल अरगांव के स्थान पर करनैल वेलेज़ली ने मरहठों को फिर हरा दिया।

६—इसी बीच में उत्तरीय हिन्दुस्थान में लांसवारी के स्थान पर सिन्धिया की फ़रांसोसी सेना से जनरल लेक का सामना हुआ। जनरल लेक ने फ़रांसोसियों को भगा दिया और दिल्ली और आगरा को जो बहुत दिनों से मरहठों के अधिकार में थे ले लिया। दिल्ली में लार्ड लेक ने बेचारे बूढ़े शाह आलम को देखा जो अन्धा क़ैद में पड़ा था। अङ्गरेज़ों ने उसे क़ैद से निकाला और एक अच्छी पेनशन बांध कर उसको आज्ञा दे दी कि बादशाही महल में रह कर अपने दिन काटें।

७—अब सिन्धिया और राघोजो भोंसला ने भी अङ्गरेज़ों के साथ ऐसीही सन्धियां कर लीं जैसी बसीन में हो चुकी थीं। सिन्धिया ने यमुना के उत्तर का सारा देश छोड़ दिया; राजपूतों और निज़ाम से चौथ मांगने से हाथ खींचा। सिन्धिया ने अरजुनगांव के पास इस सन्धिपत्र पर दस्तख़त किये थे। इस लिये यह अरजुनगांव का सन्धिपत्र कहलाता है। भोंसला के साथ देवगांव में सन्धि हुई; उसके अनुसार भोंसला ने पूर्व में कटक और पश्चिम में बरार अङ्गरेज़ों को भेंट कर दिया। लार्ड वेलेज़ली ने बरार निज़ाम को दे दिया। यह सब घटनायें १८०३ ई० की हैं। अङ्गरेज़ी सेना पूना और नागपुर में ठहराई गई और भोंसला नागपुर का राजा कहलाने लगा।

८—इसी समय राजपूत राजाओं ने भी लार्ड वेलेज़ली की सहायक श्रेणी में मिल जाना स्वीकार कर लिया और जो लड़ाइयां उनके आपस में या मरहठों के साथ होती थीं बन्द हो गईं।

९—अब भारत में होलकर ही एक बड़ा राजा था जो वेलेज़ली के घेरे में नहीं आया था। जसवन्तराव होलकर कहता था कि मुझ को अधिकार है कि उत्तर भारत में जहां चाहूं जाऊं; सब से चौथ लूं और जो न दे उसे लूटूं मारूं। जब अङ्गरेज़ी सेना मरहठों से लड़ने में फंसी थीं तब जसवन्तराव होलकर राजपूताने के राजाओं को जो उससे लड़ने की शक्ति न रखते थे लूट रहा था। यह राजा अङ्गरेज़ों की शरन में आ चुके थे। इस कारण लार्ड वेलेज़ली ने होलकर से कहा कि इनको न सताओ और अपने देश को लौट जाओ। होलकर ने उत्तर दिया कि मैं नहीं जाऊंगा और सदा राजपूतों से चौथ लूंगा। गवर्नर जनरल का धर्म था कि सन्धिपत्र के अनुसार राजपूतों का पक्ष ले और उनकी रक्षा करे। १८०४ ई० में होलकर के साथ लड़ाई छेड़ दी गई।

१०—गवर्नर जनरल को मालूम न था कि होलकर में कितनी शक्ति है और कितनी सेना उसके पास है। इस लिये उसने बंगाल से करनैल मानसन को कुछ थोड़ी सी सेना दे कर सिन्धिया को एक सेना के साथ भेजा। करनैल मानसन को भी होलकर या उस की सेना का कुछ पता न था। वह बेधड़क होलकर के देश में बढ़ा चला गया पर अचानक एक बड़ी सेना के बीच में घिर गया। सिन्धिया के सिपाही टूट कर दूसरे पक्ष से जा मिले करनैल मानसन सहायता की आशा से मूर्खता करके आगरे की तरफ़ हटा। जूलाई का महीना था, मूसलाधार वर्षा हो रही थी। नदियां बढ़ी हुई थीं; करनैल मानसन को आगरे पहुंचने में

लाट वीलेसली के समय की
ब्रिटिश इण्डिया।
सन १७९९ ईस्वी।
काश्मीर
पंजाब
सिक्खों का
नेपाल
सिन्ध नं
राजपुताना
अवध
चम्बल नदी
गंगा नदी
मरहट्ठों का राज्य
बंगाल हाता
कलकत्ता
आसाम
गुजरात
नर्मदा
बम्बई
निज़ाम राज्य
मैसूर
मद्रास
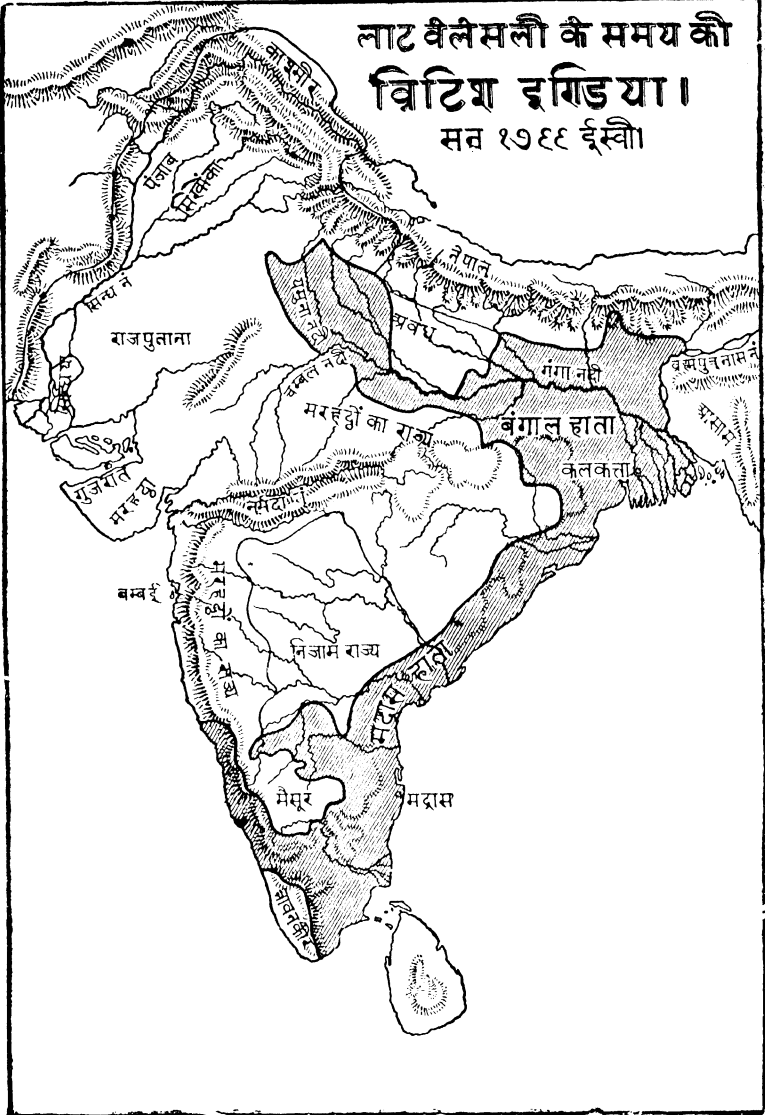
बड़ी दिक़्क़त हुई। इसी समय होलकर ने दिल्ली पर धावा किया। दिल्ली तो न ले सका पर आस पास के देश को लूटने लगा। सिन्धिया भी एक बड़ी सेना लेकर होलकर के साथ मिल गया।

११—अब जनरल लेक भी एक बड़ी सेना लेकर आगरे को बढ़ा; सन् १८०४ ई० में डोग की लड़ाई में लेक ने होलकर के दलबादल को राई काई करके भगा दिया, और डोग का मज़बूत क़िला लेकर भरतपुर के क़िले को घेर लिया। भरतपुरवाला होलकर का सहायक था। कुछ देर तक तो उसने बहादुरी के साथ भरतपुर की रक्षा की। पर जब उसने देखा कि अब क़िला जीत ही लिया जायगा तो राह पर आया और अंगरेज़ों के साथ उसने सन्धि कर ली। होलकर सब जगह से मार खाता भागा और अपने देश में चला गया।

१२—जनरल लेक लड़ाई बन्द कर देता और होलकर को ज़बरदस्ती लार्ड वेलेज़ली की शर्तों पर राजी करता पर लार्ड वेलेज़ली की गवर्नर जनरली समाप्त हो गई। वह विलायत चला गया और उसकी जगह जो दूसरा गवर्नर जनरल आया उसने जनरल लेक को अपना विचार पूरा करने की आज्ञा नहीं दी।

६७—लार्ड कार्नवालिस, पांचवां गवर्नर जनरल, सर जान बारलो, लार्ड मिण्टो, छठा गवर्नर जनरल

१—ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अभी तक बिना किसी दूसरे के सांझे के भारत में व्यापार करने का अधिकार था। उसने देखा कि व्यापार का कुल लाभ टीपू और मरहठों के साथ लड़ाइयों में ख़र्च

हो गया। कम्पनी को अपने लाभों ही से मतलब था। इस लिये नया गवर्नर जनरल जो आया तो यह हुक्म लेकर आया कि होलकर से तुरंत सन्धि कर ली जाय, और कम्पनी भारत के किसी रईस से छेड़ छाड़ न करे। पहिले इसी तरह के हुक्म सर जान शोर को भी मिल चुके थे।

२—लार्ड कार्नवालिस पहिले भी एकबार गवर्नर जनरल रह चुका था। अब सत्तर बरस के लगभग उसकी उमर हो चुकी थी; वह बंगाले के गरम और सीले देश में रहने के लायक़ न था। यहां आये तीन महीने भी न बीते थे कि मर गया।

३—सर जान बारलो इसकी जगह पर कुछ दिनों के लिये गवर्नर जनरल हुआ। होलकर खुशी से वही शर्त मान लेता जो और मरहटा राजाओं ने की थी। पर सर जान बारलो को जो हुक्म इंगलिस्तान से मिले थे उन को मान कर होलकर से सन्धि कर लेनी पड़ी। होलकर, बाजीराव पेशवा, राघोजी भोंसला सिन्धिया किसी की समझ में न आया कि यह गवर्नर जनरल लार्ड वेलेज़ली के अभिप्राय के विरुद्ध क्यों कारवाई कर रहा है। यह सब यही समझे कि नया गवर्नर जनरल होलकर से डर गया। फिर तो इनके मन में बड़ा पछतावा हुआ कि हमने क्यों अंगरेजों के साथ ऐसी प्रतिज्ञा कर ली। यह लोग सात बरस तक लड़ाई की तैयारी करते रहे और यह प्रबन्ध सोचते रहे कि किस तरह अपनी पुरानी दशा और अधिकार को फिर पा जायं और फिर दूसरे देशों से चौथ लें।

४—सिन्धिया से जो होलकर के साथ मिल गया था एक नई सन्धि की गई। ग्वालियर का मज़बूत क़िला जो पहिले जीत लिया गया था उसको लौटा दिया गया और चम्बल नदी उसके और सरकार कम्पनी के इलाक़ों में सरहद बनाई गई।

५—इसी समय टीपू के बेटों ने जो बेलोर के क़िले में रहते थे और अंगरेज़ों से पेनशन पाते थे, देशी सिपाहियों को भड़का कर उनसे बिद्रोह करा दिया। बहुत से अंगरेज़ मारे गये। फिर भी थोड़े से अंगरेज़ बहादुरी के साथ क़िले में बैठे लड़ते रहे। जब अरकाट से मदद पहुंची बिद्रोह दब गया और टीपू के बेटे कलकत्ते भेज दिये गये और वहीं रहने लगे।

६—इसके पीछे लार्ड मिण्टो गवर्नर जनरल हुआ। उसने सात बरस तक शासन किया और देशी रईसों को बिलकुल नहीं छेड़ा। पर यह कोई अच्छी बात न थी क्योंकि वह सब आपस में लड़ते भिड़ते रहे और अंगरेज़ों पर धावा करने की तैयारी करते रहे। यह भी क्या करता इङ्गलिस्तान से जैसे हुक्म आते थे उन्हों के अनुसार चलता था।

७—रानी एलिज़बेथ ने सन् १६०० में ईस्ट इंडिया कम्पनी को एक आज्ञापत्र दिया था जिसके अनुसार कम्पनी को भारत के साथ व्यापार करने की आज्ञा मिल गई थी। इस के पीछे नई नई आज्ञायें निकलती रहीं। सन् १७७३ के पीछे जब रेग्युलेटिंग ऐक्ट नाम का क़ानून पास हुआ तब से यह दस्तूर हो गया कि बीस बीस बरस पर कम्पनी को नया आज्ञा पत्र मिले। दो सौ तेरह बरस तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अकेले इस व्यापार करने का अधिकार रहा और कोई अंगरेज़ व्यापारी देश में व्यापार करने का अधिकारी न था। सन् १८१३ में इङ्गलैण्ड की पारलिमेण्ट ने यह ठीका तोड़ दिया और आज्ञा दे दी कि जिसका जो चाहे इस देश से व्यापार करे।

८—फिर भी बीस बरस तक इस आज्ञा से किसी को लाभ न हुआ क्योंकि कम्पनी का एक पुराना नियम था कि बिना कम्पनी की आज्ञा के कोई अंगरेज़ कम्पनी के इलाक़ा में घुस नहीं सकता था।

६८—लार्ड हेस्टिङ्गस्, सातवां गवर्नर जनरल

(सन् १८१३ ई० से सन् १८२३ ई० तक)

मरहठों की प्रतिष्ठा का अन्त

१—नया गवर्नर जनरल लार्ड हेस्टिङ्गस् जो १८१३ ई० में भारत में आया बहुत बड़ा रईस और जरनल था। यह बहुत सी लड़ाइयां लड़ चुका था। पहिले गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिङ्गस् से इसका कोई सम्बन्ध न था; यद्यपि दोनों का उपनाम एक ही था। यह तीसरा वीर है जिसे भारत में बृटिश राज्य का स्थापन करनेवाला कह सकते हैं। इसने दस बरस तक यहां शासन किया। इसके पहिले दो मनुष्य जो बृटिश राज्य स्थापन करनेवाले प्रसिद्ध हैं उनमें पहिला लार्ड क्लाइव और दूसरा लार्ड वेलेज़ली था।

लार्ड हेस्टिङ्गस्

२—लार्ड वेलेज़ली की नीति चल जाती तो उसी समय भारत के कोने कोने में शान्ति हो जाती, जैसी अब है। परन्तु शान्ति की जगह मरहठों के देश में चारों ओर लड़ाई का सामान देख पड़ता था। पिछले दस बरस में भारत में एक नया शक्तिमान बेड़ा उठ खड़ा हुआ था। यह पिंडारे थे।

३—पिंडारे डाकू थे। इनमें बहुत से मुसलमान पठान और कुछ हिन्दू मरहठे थे। जो राजद्रोही या अपराधी सज़ा से

डरता था वह पिंडारों में मिल जाता था। इनका न कोई देश था न घर। यह लोग लड़ाई के मर्द न थे। यह लोग इस बात में अपनी बड़ाई समझते थे कि हम इतना जल्द भागते हैं कि हमको कोई पकड़ नहीं सकता। इनका अभिप्राय यह न था कि देश जीतें और राज्य स्थापन करें बरन् यह था कि जो कुछ हाथ लग जाय लूट पाट के भाग जायं। जो लोग अपना गड़ा छिपा धन बताने में मीन मेष लाते थे उनको बहुत दुख देते थे। उनके तलवों को गरम लोहे की छड़ों से दागते थे; उनके कपड़ों में तेल डालकर आग लगा देते थे। अगले दिनों में यह लोग सिन्धिया और पेशवा की सेना में भरती होकर लूट मार करने जाते थे। जब मरहठे सरदारों ने लूट मार की मुहिम छोड़ दी तो पिंडारे आप लूटने और चौथ उगाहने निकले। इनके कई सरदार थे। इनमें अमीर खां और चीतू सब से बड़े थे। कोई इनका सामना न करता इस कारण इनकी समाज बढ़ते बढ़ते साठ हज़ार की हो गई।

४—बड़े बड़े मरहठे राजा ऊपर से तो अङ्गरेज़ों से मिले रहते थे और उनके मित्र और सहायक थे पर मन में कुढ़ते थे कि अपना पुराना गौरव हमको फिर मिल जाय और पहिले की नाईं फिर लूट खसोट का धन्धा चले; इस लिये छिप छिप कर जैसे हो सकता था पिंडारों की सहायता करते थे। वह यह समझते थे कि पिंडारे अङ्गरेज़ों को हरा देंगे। और अङ्गरेज़ इनसे न भी हारे तो उनको पिंडारों की लड़ाई से इतनी छुट्टी न मिलेगी कि हम सिर उठायें तो हम से लड़ सकें।

५—यहां पहुंचते ही लार्ड हेस्टिङ्गस् ने देखा कि लार्ड वेलेज़ली की रीति पर न चला गया और निबल को बली के विरुद्ध सहायता न दी गई तो थोड़े ही दिनों में भारत की वही

दशा हो जायगी जो वेलेज़ली के समय से पहिले थी और जिससे वेलेज़ली ने उसे निकाला था। उसने इङ्गलिस्तान को लिखा और सरकार को जताया कि वेलेज़ली की तदबीर पर चलने से यह देश बरबादी से बच सकता है; क्योंकि उत्तर में गोरखों ने अङ्गरेज़ी अमलदारी पर आक्रमण कर रखा था, दक्षिण में पिंडारियों ने लूट मार मचा रक्खी थी और मध्य देश में मरहठे सरदार विद्रोह करने के लिये तैयार बैठे थे। निज़ाम मरहठों से डरता था और यही एक रईस अङ्गरेज़ों का विश्वासी था। सरकार अङ्गरेज़ को लार्ड हेस्टिङ्गस् पर पूरा भरोसा था। उसने देखा कि गवर्नर जनरल सच कहता है। इस लिये हुक्म दे दिया कि लार्ड वेलेज़ली की तदबीर पर पूरी कार्रवाई की जाय।

६—गोरखे नैपाल को शासन करनेवाली जाति के लोग थे। नैपाल तिब्बत और हिन्दुस्थान के बीच में हिमालय के पास कश्मीर से पूर्ब है। इसकी लम्बाई सात सौ मील और चौड़ाई सौ मील है। लार्ड हेस्टिङ्गस् के भारत में आने के थोड़ा आगे पीछे गोरखों ने अवध के कुछ गांव छीन लिये और वहां के लम्बरदारों को मार डाला। इसलिये लड़ाई छेड़ दी गई और चार सेनायें उनका सामना करने के लिये भेजी गईं। एक तो भारी तोपों को खींच कर हिमालय पर चढ़ाना बड़ा कठिन था दूसरे गोरखे बड़ी बहादुरी से लड़े। कम्पनी के बहुत सिपाही मारे गये और चार में तीन सेनाओं को हिन्दुस्थान की तरफ़ लौटना पड़ा। लेकिन चौथी सेना, जिसका सेनापति जनरल अख़्तरलोनी था, गोरखों को बार बार हराती हुई, उनकी राजधानी खाटमांडू के पास जा पहुंची। तब तो राजा ने अङ्गरेज़ों से सन्धि कर ली। १८१६ ई० में सुगौली का सन्धि पत्र लिखा गया। इसके अनुसार

कुमाऊँ का कुल देश जो नैपाल का पश्चिमीय भाग था अङ्गरेज़ों को दे दिया गया। मंसूरी, नैनीताल और शिमला जहां गरमी के मौसिम में गवर्नर जनरल रहते हैं इसी देश में हैं। खाटमांडो में अङ्गरेज़ों का रेज़ीडेण्ट नियुक्त है।

७—उस समय से आज तक नैपाल का राजा अङ्गरेज़ों का मित्र और सहायक है और बहुत से गोरखे अङ्गरेज़ी सेनाओं में अङ्गरेज़ी अफ़सरों के नीचे भरती हैं। अङ्गरेज़ी सेना में गोरखे भी बड़े बीर और अच्छे सिपाहियों में गिने जाते हैं।

अमीर खां

८—जिस समय अङ्गरेज़ी सेना गोरखों से लड़ रही थी, पिंडारी पहिले से भी अधिक ढीठ हो रहे थे और बाजीराव पेशवा उनको बहका कर चारों ओर लूट मार करा रहा था। लार्ड हेस्टिङ्गस् ने १८१६ ई० में एक लाख बीस हज़ार आदमियों का एक बड़ी सेना इकट्ठी की। उसमें मद्रास, बम्बई और बङ्गाले की सेनायें थीं। इस बड़ी सेना के बीच में पिंडारी ऐसे घिर गये कि एक आदमी भी भाग न सका। लड़ाई तो कोई नहीं हुई, क्योंकि पिंडारी लड़ना नहीं चाहते थे। पर उनमें से बहुत मारे गये। बचे खुचे हथियार डालकर भाग गये और गांव में बस गये। उनका एक सरदार चीतू एक चीते के हाथ से मारा गया। बचे हुए सरदारों ने अपने अमीर खां को अङ्गरेज़ों की दया पर छोड़ दिया। वह लोग क्षमा कर दिये गये और उनको छोटी छोटी जागीरें दे दी गईं। अमीर खां को राजपूताने में टोंक की छोटी रियासत मिली और नवाब का पद दिया गया।

१८१८ ई० में पिंडारियों का नाम भी न रहा और भारतवासी उनके अत्याचार से छुटकारा पा गये।

६६—लार्ड हेस्टिङ्गस् (समाप्ति)

१—इसी अवसर पर बाजीराव पेशवा ने यह समझा कि अङ्गरेज़ पिंडारियों को न जीत सकेंगे और एक बड़ी भारी सेना इकट्ठी करके जो अङ्गरेज़ी सेना पूना के पास खिड़की में रहती थी उस पर धावा मार दिया। पर उसके बहुत से सिपाही मारे गये और उसे लौटना पड़ा। कुछ दिन इधर उधर देश में मारा मारा फिरा। अन्त को उसने अपने को अङ्गरेज़ों के हवाले कर दिया। लार्ड हेस्टिङ्गस् जानता था कि इसकी बात का बिश्वास नहीं है क्योंकि यह कई बार प्रतिज्ञा भङ्ग कर चुका था। इस लिये उसने पेशवा का सारा देश ले लिया, और एक बड़ी पेनशन करके उसे कानपुर के पास बिठूर भेज दिया।

२—नागपुर का बूढ़ा राजा राघोजी भोंसला इससे कुछ पहिले मर चुका था। उसका भतीजा अप्पा साहब नागपुर का राजा था उसने अङ्गरेज़ों के साथ सन्धि करली थी; पर छिप छिप कर पेशवा के साथ कपटप्रबन्ध कर रहा था। जब उसने सुना कि बाजीराव ने खिड़की पर हमला कर दिया है; तो उसने भी १८१७ ई० में अङ्गरेज़ों के रेज़ीडेंट पर जो नागपुर के पास सीता-बल्दी की पहाड़ी पर ठहरा था धावा मार दिया। रेज़ीडेंट जेनकिन्स के पास गोरों की सेना कुछ भी न थी, कुल चौदह सौ हिन्दुस्थानी सिपाही अङ्गरेज़ी अफ़सरों की कमान में थे। अप्पा साहेब के पास अठारह हज़ार की भीड़ थी। वह समझता था कि अङ्गरेज़ों के थोड़े से सिपाहियों को पीस डालूंगा। रात से

लाट हेस्टिंस के समय की
ब्रिटिश इण्डिया
सन १८२३ ईस्वी
पंजाब सिक्खों
नेपाल
अवध
गंगा
राजपुताना
सिन्ध
चम्बल नं
सिंधिया
होलकर
नर्मदा नं
गुजरात
गाइकवाड़
बंगाल हाता
कलकत्ता
आसाम
बरार
निजाम राज्य
बम्बई
हाता
मैसूर
मद्रास
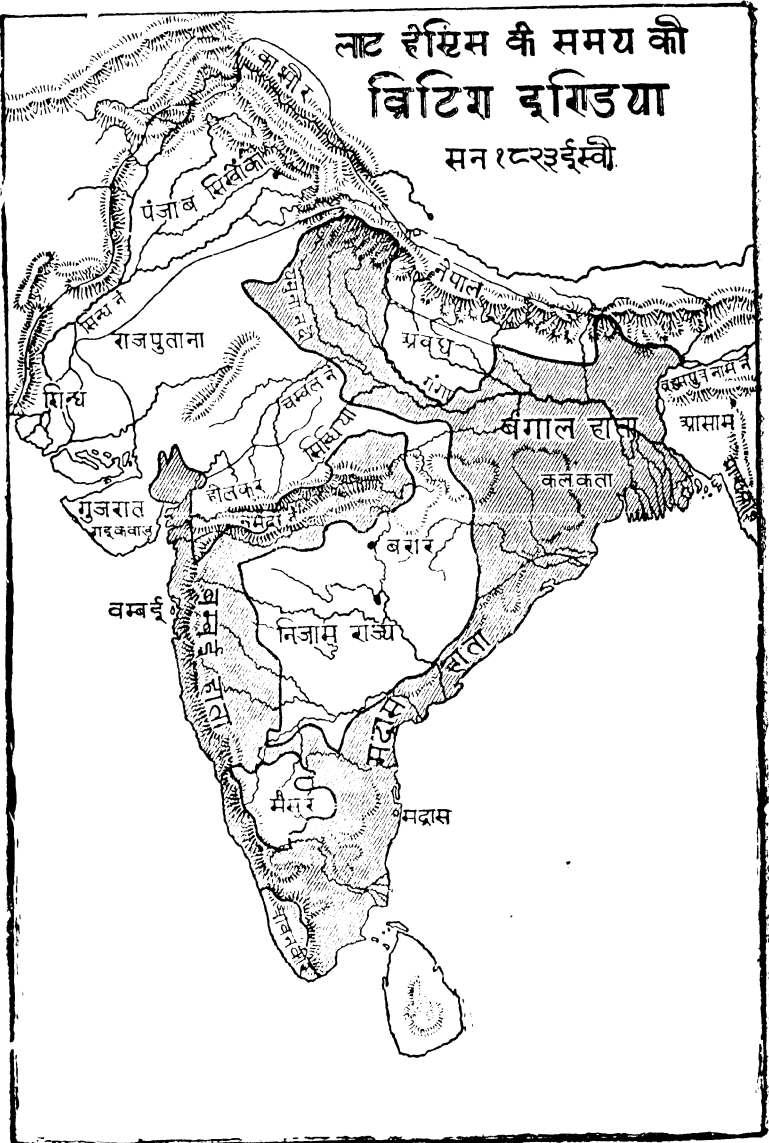
लड़ाई होने लगी दूसरे दिन बराबर लड़ाई होती रही अन्त को अप्पा साहेब हार गया और राजपूताने में चला गया और वहां कई बरस पीछे मर गया। अङ्गरेज़ों ने राघोजी भोंसला के एक दूध पीते पोते को राजगद्दी पर बैठा दिया।

३—जसवन्त राव होलकर भी मर चुका था। उसकी रानी तुलसी बाई राज करती थी। जब उसने सुना कि बाजी राव अङ्गरेज़ों से लड़ रहा है तो यह भी अपनी सेना लेकर बाजी राव की सहायता करने को दक्षिण की ओर चली। उधर से सर जान मालकम की कमान में अङ्गरेज़ी सेना चली आती थी दोनों का सामना हो गया। सर जान मालकम ने चाहा कि तुलसी बाई सन्धि करले और समझ जाय कि बाजी राव की सहायता को जाना व्यर्थ है। तुलसी बाई आप सन्धि करने को तैयार थी पर उसकी सेना के मरहठा अफ़सरों ने जो यह हाल सुना तो उनको बड़ा क्रोध हुआ और उन्हों ने तुलसी बाई को मार डाला। सन् १८१७ ई० में इन मरहठा सरदारों ने महीदपुर के स्थान पर अङ्गरेज़ी सेना पर चढ़ाई की। सर जान मालकम ने उनको परास्त कर दिया। लार्ड हेस्टिङ्गस् ने जसवन्त राव होलकर के दूध पीते बेटे मल्हार राव को इन्दौर का राजा बनाया और उसके देश की रक्षा के निमित्त अङ्गरेज़ी सेना स्थापित कर दी।

४—बसीन के सन्धिपत्र के अनुसार कुछ इलाका बाजी राव ने सन् १८०२ ई० में दिया था। कुछ देश पांचों मरहठा राजाओं ने उस सेना के खर्चे के बदले दिया था; जो उनके राज्यों की रक्षा के लिये नियुक्त थी। इन सब को मिला कर सन् १८०८ ई० में लार्ड हेस्टिङ्गस् ने बम्बई का हाता बना दिया।

५—सन् १८२३ ई० में लार्ड हेस्टिङ्गस् भारत के शासन से अलग हुआ। पांच बरस में उसने वह बड़ा काम पूरा कर दिया जिसको

जड़ लार्ड वेलेज़ली ने जमाई थी और अङ्गरेज़ों को भारत में सब से बढ़ कर शक्तिमान बना दिया।

७०—लार्ड अम्हर्स्ट, आठवां गवर्नर जनरल

(सन् १८२३ ई० से सन् १८२८ ई० तक)

१—१८२३ ई० में ब्रह्मा के राजा ने आसाम का देश जो बङ्गाले की सीमा से मिला हुआ है ले लिया। १८२४ ई० में उसने अङ्गरेज़ों पर चढ़ाई की और उनके कुछ सैनिक जो समुद्रतट के पास टापू की रक्षा के लिये नियुक्त थे मार डाले। गवर्नर जनरल ने इसका कारण पूछा तो ब्रह्मा के राजा ने उसका कुछ उत्तर न दिया और कछार देश जो बङ्गाले के अग्नि कोण में है उसमें एक सेना भेज दी। यह हार गई और एक अङ्गरेज़ी सेना जहाज़ों में बैठ कर समुद्र की राह से रंगून भेजी गई। रंगून जीत लिया गया।

२—ब्रह्मा का राजा अङ्गरेज़ों की शक्ति को न जानता था। उसने अपने सेनापति बन्दोला को एक बड़ी सेना देकर भेजा कि वह अङ्गरेज़ी सेनापति सर ए० कम्बल को देश से निकाल दे। बन्दोला अपने साथ सोने की बेड़ियां भी लाया था। उसका यह विचार था कि गवर्नर जनरल को यही बेड़ियां पहना कर अपनी राजधानी में ले जाय। पर अङ्गरेज़ों ने उस सेना को बड़ी सुगमता से हरा दिया और बन्दोला उसी लड़ाई में मारा गया। अङ्गरेज़ी सेनापति ने सारे आसाम और आराकान पर अपना अधिकार जमा लिया और इरावती नदी की राह आवा पर चढ़ गया। जब वह आवा के पास पहुंचा तो ब्रह्मा के राजा ने घबड़ा कर आधीनता स्वीकार कर ली और १८२६ ई० में यनदबू की सन्धि हुई।

३—इस सन्धिपत्र के अनुसार ब्रह्मा के समुद्रतट का देश

और आसाम, आराकान और तनासिरम अङ्गरेज़ों के अधिकार में आ गये।

४—भारत में भरतपुर का क़िला बड़ा मज़बूत समझा जाता था। अङ्गरेज़ों ने उसे दो बार घेरा पर सफलता न हुई। भरतपुर का राजा और बहुत से राजा यह समझने लगे कि भरतपुर को अङ्गरेज़ न जीत सकेंगे। १८२६ ई० में वहां का राजा मर गया। एक सरदार जिसका कोई अधिकार न था गद्दी पर बैठ गया। लार्ड अम्हर्स्ट ने लार्ड कामबरमीर को एक बड़ी सेना दे कर भरतपुर भेजा कि अनधिकारी को उतार कर मृत राजा के बेटे को गद्दी पर बैठा दे। परिणाम यह हुआ कि भरतपुर-कोट बारूद से उड़ा दिया गया। गढ़ी सर हुई और अधिकारी भरतपुर की गद्दी पर बैठ गया।

७१—लार्ड विलियम बेण्टिङ्क, नवां गवर्नर जनरल

(सन् १८२८ ई० से १८३५ ई० तक)

१—लार्ड विलियम बेण्टिङ्क बुद्धिमान, दयावान और सुजन गवर्नर था। अपनी सात वर्ष की हुकूमत में उसने भारत-वासियों के साथ हर एक काम किये जो पहिले किसी गवर्नर ने नहीं किये थे। उस को यह बड़ाई इस कारण मिली कि देश में कोई दंगा बखेड़ा नहीं था; शान्ति का डङ्का बज रहा था।

२—पहिला काम जो बेण्टिङ्क ने किया वह रास्तों और सड़कों पर की रक्षा थी। अब मरहठों का समय न था और पिण्डारे भी दब चुके थे। पर डाकुओं और ठगों के झुण्ड के झुण्ड चारों ओर फिर रहे थे। डाकू रास्ते में लूटते थे और ठग बटोहियों का गला घोंट कर मार डालते थे और उनका माल असबाब ले जाते थे।

बहुत से लोग जो परदेश करने जाते थे घर फिर कर न आते थे। बहुतेरे घर से गये और उनका कोई हाल न मिला कि क्या हुए कहां गये। कारण यह था कि डाकू और ठग उनको लूट कर जान से मार डालते थे।

लार्ड विलियम बेंटिङ्क

३—डाकू साधारण यात्रियों के भेष में तीस तीस चालीस चालीस की टोलियों में फिरा करते थे; धनी लोगों के घरों का पता लगा कर रात को मशालें लेकर उन पर डाका डालते थे। उनका धन लूट लेते थे; और उनको नाना प्रकार के दुख देते थे, और कभी कभी उनको मार भी डालते थे।

४—ठग काली को पूजते थे। दस दस बारह बारह की टोलियां बना कर निकलते थे। यह भी शान्त भले मानस गांववालों का भेष बनाते थे। रास्ते में कोई यात्री मिलता था तो उसके मित्र बन जाते थे। जब वह अकेला रास्ते या घने बन में पहुंचता था तो उसके गले में रूमाल डाल कर ऐसा ऐंठते थे कि वह मर जाता था। फिर उसकी लाश को गाड़ देते थे और उसका माल असबाब ले लेते थे। वह समझते थे कि इस रीति से बध करने से देवी प्रसन्न होती है। जब इस काम से छुट्टी पाते थे तो खेती बारी और दुकानदारी के धन्धे में लग जाते थे, और किसी को यह सन्देह न होता था कि यह लोग पापी बदमाश हैं। ठगों की एक बोली और बंधे इशारे थे जिनको उनके सिवाय और कोई नहीं समझता था।

५—बेण्टिङ्क ने अङ्गरेज़ो अफ़सरों को आज्ञा दी कि जाओ ठगों और डाकुओं को जड़ खोद डालो। सात आठ बर्ष में पन्द्रह सौ ठग पकड़े गये। कुछ दिन पीछे एक भो ठग और डाकू न बचा। रास्तों और सड़कों पर ऐसा सुख चैन हो गया जो सैकड़ों बरस से किसी को न मिला था।

ठग

६—कहीं कहीं हिन्दुओं में बहुत दिनों से सती की रीति चली आती थी। इसमें बड़ी निठुराई होती थी। पति मरता था तो उसकी स्त्री को भी उसके साथ चिता पर रख कर फूंक देते थे। इस रीति से हज़ारों अनाथ बिधवायें जला कर राख कर दी गईं। कौन मानेगा जो यह कहा जाय कि इस बुरी रीति के कारण बेटे अपनी माताओं को जीते जी भस्म कर देते थे। १८१७ ई० में बङ्गाल देश में सात सौ बिधवायें जीती जला दी गईं। शाहनशाह अकबर ने इस बुरी रीति के रोकने का उद्योग किया था पर वह सफल न

हुआ। बेण्टिङ्क ने सदा के लिये यह पाप काट दिया भारतवासी उनके बड़े कृतज्ञ हैं। उन्हों ने बड़े पुण्य का काम किया।

७—१८३३ ई० के पहिले ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारतवासियों को बड़ी तनख़ाहों के ओहदे न देती थी। उस साल यह कानून बन गया कि जितने ओहदे हैं सब भारतवासियों को मिल सकते हैं शर्त यह है कि वह सब तरह से उसके योग्य हों। पहिले योग्य भारतवासी नहीं मिलते थे पर कई बरस कम्पनी की सेवा में
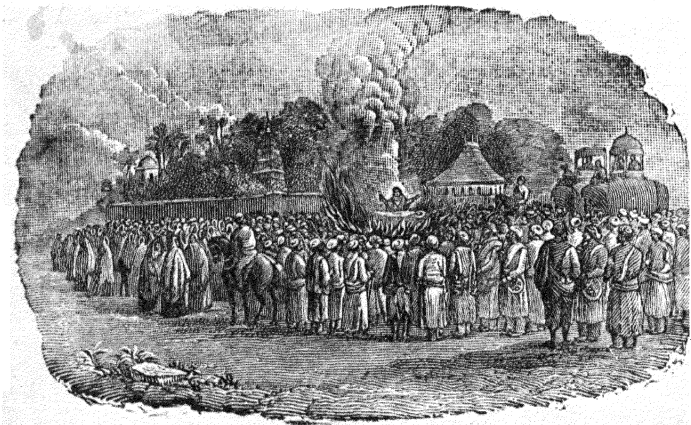
सती

रहते रहते उनकी संख्या बढ़ गई। यहां तक कि आज दिन सरकारी नौकरी में बहुत से ओहदे और जगहें भारतवासियों से भरी हैं। लार्ड बेण्टिङ्क ने पहिले पहिल भारतवासियों के लिये सरकारी नौकरी का दरवाज़ा खोला था और तब से आज तक वह दरवाज़ा खुला है। बहुत से भारतवासी डिप्टी कलेक्टरी और मातहत जजी पर मुक़र्रर कर दिये गये हैं।

८—अङ्गरेज़ी सरकार की सेवा में इतने भारतवासी आगये

और उनको अङ्गरेज़ों से इतना काम पड़ने लगा कि उनको अङ्गरेज़ी भाषा को लिख पढ़ लेने और बोलने कि बड़ी आवश्यकता हुई। इसके सिवाय अङ्गरेज़ी किताबों में परम उपयोगी विद्या और कला का इतना भंडार भरा है जो भारत की भाषाओं में कहीं पाया नहीं जाता। भारतवासी बिना अङ्गरेज़ी सीखे इस विद्याधन से कैसे लाभ उठा सकते थे। संसार की किताबों में जो अच्छी और काम की बातें हैं सब अङ्गरेज़ी किताबों में भरी हैं; क्योंकि अङ्गरेज़ दुनिया भर में घूमते फिरते, हर देश की भाषा सीखते और जो उपयोगी बात किसी दूसरी भाषा में देखते हैं उसका अपनी भाषा में अनुवाद कर लेते हैं। इस कारण अङ्गरेज़ी भाषा मानो एक बड़ा ख़ज़ाना है जिस में संसार भर की बुद्धि और विद्या इकट्ठा करके रक्खी है। इस ख़ज़ाने की कुंजी अङ्गरेज़ी भाषा का ज्ञान है जिससे यह ख़ज़ाना खुल सकता है और जो कुछ कोई चाहे इस में से ले सकता है। बेण्टिङ्क ने आज्ञा दी कि भारतवासियों को अङ्गरेज़ी भाषा सिखाने के लिये अङ्गरेज़ी मदरसे खोले जायं। आज कल इन स्कूलों की संख्या दिन दिन बढ़ती चली जा रही है। यहां तक कि अब अङ्गरेज़ी स्कूलों की संख्या हज़ारों तक पहुंच गई है।

६—भारत की प्रजा बहुत सी जातियों और समाजों में बंटी है। हर जाति की एक अलग भाषा है। एक समय था कि मदरासी पंजाबी की भाषा न समझ सकता था। क्योंकि दोनों की भाषायें अलग थीं। अब पंजाबी मदरासी आपस में अङ्गरेज़ी में बात कर सकते हैं क्योंकि अङ्गरेज़ी भाषा पंजाब और मदरास दोनों के स्कूलों में पढ़ाई जाती है। इस में बड़ा लाभ यह है कि पंजाबी और मदरासी एक ही भाषा में बोल सकते है क्योंकि दोनों एक ही बादशाह की प्रजा हैं और एक ही देश में रहते हैं।

१०—जब भारत में मुग़ल और अफ़ग़ान राजा थे तो अदालतों

और दफ़्तरों की भाषा फ़ारसी थी। अब अङ्गरेज़ भारत में बादशाह हुये तो बेण्टिङ्क ने फ़ारसी की जगह अङ्गरेज़ी अदालतों और दफ़्तरों की भाषा बना दी।

७२—लार्ड विलियम बेण्टिङ्क—सर चार्लस् मेटकाफ क़ायममुक़ाम गवर्नर जनरल

(सन् १८३५ ई० से १८३६ ई० तक)

१—गवर्नर जनरल राजाओं का राजा था। इस अधिकार से उसका धर्म था कि देश के राजाओं को आपस की लड़ाई दंगे से रोके और देखता रहे कि यह लोग अपनी प्रजा का शासन अच्छा और अच्छे प्रबन्ध से करते हैं और किसी को दुख नहीं देते।

ग्वालियर में दौलत राव सिन्धिया मर गया। उसने कोई बेटा न छोड़ा। उसकी बिधवा रानी और दरबार के अमीरों में लड़ाई होने लगी। बेण्टिङ्क ने रानी से कहकर जंकाजी को गोद लिवा दिया; और जब वह सयाना हुआ तो उसको गद्दी देकर राज का अधिकारी कर दिया।

मल्हार राव होलकर भी मर गया। उसके भी कोई बेटा न था। उसकी रानी ने आप गद्दी पर बैठना चाहा। परिणाम यह हुआ कि घरेलू लड़ाई होने लगी। बेण्टिङ्क ने मल्हार राव के एक नातेदार को जिसे प्रजा बहुत चाहती थी गद्दी पर बैठाकर झगड़ा निपटा दिया।

राजपूताने के कई राज्यों में भी बेण्टिङ्क ने यही काम किया। जिस किसी ने अपने अधिकारी राजा से बिद्रोह किया उसको दबा दिया। लड़ाई होती तो हज़ारों मरते पर उसने लड़ाई होने न दी और हज़ारों के प्राण बचा दिये।

२—हम ऊपर लिख चुके हैं कि जब १७९९ ई० में टीपू सुलतान मरा तो लार्ड वेलेज़ली ने कृष्णराजा नाम एक छोटे लड़के को मैसूर का राजा बना दिया था। जब कृष्णराजा सोलह बरस का हुआ तो वह गद्दी पर बैठाया गया। पर यह बड़ा

कृष्णराजा, मैसूर

अत्याचारी निकला। उसने सारा ख़ज़ाना अपने भोग बिलास में बिगाड़ दिया। विद्वान् और योग्य लोगों को अच्छे अच्छे ओहदों पर रखने के बदले वह ओहदे बेचने लगा। जिस ने बढ़िया दाम लगाया उसको ओहदा दिया गया। यह सिपाहियों को तनख़ाह

नहीं देता था। प्रजा कंगाल हो गई और घबराने लगी और १८३० ई० में अपने राजा से बिगड़ गई। तब बेण्टिङ्क ने झगड़ा दबाने और शान्ति स्थापन करने के लिये एक सेना भेज दी। राजा को पेनशन कर दी गई और पचास बरस तक अङ्गरेज़ी अफसरों ने मैसूर का प्रबन्ध किया जिसका फल यह हुआ कि देश धन संपति से भरापुरा हो गया। प्रजा सुचित और प्रसन्न देख पड़ने लगी। राजा को आज्ञा मिल गई कि किसी को गोद ले ले। जब यह गोद लिया हुआ लड़का सयाना हुआ तो मैसूर का राजा बना दिया गया और अङ्गरेज़ी प्रबन्ध उठा लिया गया।

३—१८१३ ई० तक अङ्गरेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत और चीन में बिना किसी के साझे के व्यापार करने का अधिकार था। १८१३ ई० में लार्ड हेस्टिङ्गस् के समय में भारत का व्यापार सब के लिये खोल दिया गया और यह घोषणा कर दी गई कि जिसका जी चाहे भारत में व्यापार करे। हम ऊपर लिख चुके हैं कि इस आज्ञा से किसी को कुछ लाभ न हुआ। क्योंकि यह नियम था कि बिना ईस्ट इण्डिया कम्पनी की आज्ञा के कोई भारत में आकर बस नहीं सकता था। बीस बरस पीछे १८३३ ई० में इङ्गलैण्ड की पारलिमेण्ट ने कम्पनी को आज्ञापत्र तो दे दिया पर यह भी नियम कर दिया कि अब से कम्पनी भारत में व्यापार न करे, देश का शासन करे और प्रबन्ध रक्खे। मानो अब से यह नियम हो गया कि जिस अङ्गरेज़ का जो चाहे भारत में रहे। किसी से आज्ञा लेने का काम न रहा। इसपर बहुत से अङ्गरेज़ व्यापार करने और देश देखने भारत में चले आये। व्यापार की बड़ी उन्नति हुई और भारतवासियों को भी बड़ा लाभ हुआ। इन्हीं दिनों चीन का व्यापार भी खुल गया और वहां किसी तरह की रोक टोक न रही।

४—वह देश जो १८०१ ई० में अवध के नवाब ने अंगरेज़ों को भेंट दिया था और वह देश जो सिन्धिया से ले लिया था दोनों को मिला कर एक लेफ़टिनेण्ट गवर्नर के आधीन पश्चिमोत्तर देश का सूबा बनाया गया जो अब आगरे का सूबा कहलाता है।

५—पश्चिमीय घाट पर मैसूर के पश्चिम में कुड़ग का छोटा सा पहाड़ो देश है। हैदर अली और टीपू सुलतान दोनों ने इस देश को जीता पर दोनों के हाथ से निकल गया क्योंकि वहां की प्रजा बार बार बिद्रोह करती थी। टीपू सुलतान के मरने पर कुड़ग का राजा निश्चिन्त हो गया। उसके पीछे जो दो राजा हुए उनका प्रबन्ध बुरा था। बेण्टिङ्क के समय में जो राजा शासन करता था वह पहिले के सब राजाओं से खोटा था। उसने सैकड़ों आदमी मरवा डाले, अपने भाई बहिनों को भी जीता न छोड़ा। कोई अपना पराया न था। जिस से हो सका देश छोड़ कर चला गया। कई अंगरेज़ी अफ़सर उसके पास यह कहने को भेजे गये कि तुम किसी को गोद ले लो पर उसने किसी की न मानी; अन्त को १८३४ ई० में बेण्टिङ्क ने कुड़ग में अंगरेज़ी सेना भेज दी। राजा के सिपाही बड़ी बीरता से लड़े पर राजा भाग कर बन में छिपा और फिर पकड़ा गया। गवरनर जनरल ने कुड़ग के सरदारों को यह आज्ञा दी कि अपना राजा आप चुन लें। सब ने मिल कर यह प्रार्थना की कि राजा की आवश्यकता नहीं है; सरकार कम्पनी आप कुड़ग का प्रबन्ध करे। गवर्नर जनरल ने यह प्रार्थना मान ली और कुड़ग सरकारी अमलदारी में मिला लिया गया। तब से यह आज्ञा है कि कुड़ग के रहनेवाले हथियार बांधें। उनको लैसेन्स लेने का काम नहीं।

६—१८३५ ई० में पश्चिमोत्तर देश का लेफटिनेण्ट गवनर सर चार्लस् मेटकाफ़ बेण्टिङ्क की जगह एक साल तक क़ायम मुक़ाम गवर्नर जेनरल रहा। इस ने भारतवासियों को समाचारपत्र निकालने की आज्ञा दे दी और यह अधिकार दिया कि बिना पूछे स्वतंत्रता से जो जो मैं आये समाचारपत्रों में लिखें। हां ऐसी बात न हो जिससे दूसरों की हेठी या हानि हो। १८३५ ई० के पहिले देश भर में छः समाचारपत्र थे। अब छः सौ से भो अधिक हैं।

सर चार्लस मेटकाफ़

७३—लार्ड आकलैंड, दसवां गवर्नर जनरल

(सन् १८३६ ई० से १८४२ ई० तक)

१—इस समय अफ़ग़ानिस्तान की गद्दी पर दो आदमी बैठना चाहते थे, एक शुजा जो अहमदशाह के वंश में था और दूसरा दोस्त महम्मद जो अहमदशाह के प्रधान मंत्री के घराने का था। दोस्त महम्मद ने शुजा को परास्त किया और उसको काबुल से निकाल दिया। शाह शुजा भाग कर भारत में चला आया। यहां अंगरेज़ों ने उसके गुज़ारे के लिये पेनशन कर दी।

२—गवर्नर जनरल ने सोचा कि अफ़ग़ानिस्तान में ऐसा हाकिम हो कि जो अंगरेज़ों से मित्रता रक्खे तो बहुत अच्छा होगा क्योंकि जो रूसी भारत पर चढ़ाई करें तो अंगरेजों की सहायता

करेगा और रूसियों से लड़ेगा। उसने विचार किया कि शाह शुजा को अफ़ग़ानिस्तान की गद्दी पर फिर बैठावें क्योंकि पहले तो वह हक़दार था और दूसरे अंगरेज़ों से मित्रता का भाव रखता था।

३—१८३६ ई० में अंगरेज़ी सेना सिन्धु नदी को पार करके बोलनदर्रा की राह से बिलोचिस्तान होती हुई कन्दहार पहुंची और कन्दहार को लेकर ग़ज़नी पर जा खड़ी हुई। यहां बड़ी लड़ाई हुई; अन्त को ग़ज़नी भी ले ली गई। दोस्त महम्मद उत्तर की ओर बुख़ारा को भाग गया और शाह शुजा अफ़ग़ानिस्तान के सिंहासन पर बैठा दिया गया और एक अंगरेज़ी अफ़सर सर विलियम मैकनाटन राज्यप्रबन्ध में उसकी सहायता के निमित्त नियुक्त हुआ।

शाह शुजा

४—दूसरे बरस दोस्त महम्मद ने अपने आपको अंगरेज़ों के हाथ समर्पण कर दिया। वह कलकत्ते भेज दिया गया और यहां अंगरेज़ों ने उसके साथ मित्रता का बर्ताव किया। पर उसका बेटा अकबर खां जवान और क्रोधी था। वह न आया और उसने बहुत से पठानों को अपने पक्ष में कर लिया। शाह शुजा निर्बल और निरुत्साही था। राज्य करने की योग्यता उसमें न थी और न प्रजा उससे सन्तुष्ट थी। उसके सिंहासन पर बैठाने के पीछे अंगरेज़ी सेना का कुछ भाग भारत को लौट आया और थोड़े से सिपाही अफ़सरों की रक्षा के लिये काबुल में रह गये।

५—शाह शुजा को सिंहासन पर बैठे दो बरस हुये थे कि १८४२ ई० में अफ़ग़ान उससे बिगड़ गये। अकबर खां बिद्रोहियों का मुखिया था। सर विलियम मैकनाटन चाहता था कि मेल हो जाय और इसी अभिप्राय से निहत्था मित्रभाव से अकबर खां से बातें कर रहा था कि एकाएक अकबर खां ने उसे गोली से मार डाला और अफ़ग़ानों ने उसकी बोटी बोटी काट डाली।

अकबर खां

६—अंगरेज़ों ने काबुल पर चढ़ाई की। अंगरेज़ी सेनापति अफ़-ग़ानों की भीड़ देख कर सोचने लगा कि मैं इन से कैसे लड़ूंगा खाने पीने की सामग्री भी निपट चुकी थी। इससे वह हिन्दुस्थान लौट जाने पर राज़ी हो गया। यह बड़ी भूल हुई। उसको चाहिये था कि काबुल के क़िले में बैठा लड़ता जाता जिस तरह सहायता पहुंचने तक अरकाट के क़िले में क्लाइव लड़ता रहा। अफ़ग़ानों ने यह क़रार किया कि हम लौटती हुई अंगरेज़ी सेना पर चढ़ाई न करेंगे। पर उन्हों ने अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ दिया। जिस समय गोरे और हिन्दुस्तानी सिपाही दर्रा खुर्दकाबुल में घुसे तो हज़ारों अफ़ग़ानों ने इधर उधर की पहाड़ियों पर से गोली चलाई। एक डाक्टर ब्राइडन तो बचा, और सब अफ़ग़ानों के हाथ से मारे गये।

७४—लार्ड एलेनबरा, ग्यारहवां गवर्नर जनरल

(सन् १८४२ ई० से सन् १८४४ ई० तक)

१—काबुल से सेना लौटने के पीछे लार्ड आकलैण्ड विलायत चला गया और लार्ड एलेनबरा गवर्नर जनरल होकर आया।

२—अफ़ग़ानिस्तान में अंगरेज़ी सेना की दो छोटी छोटी पल्टनें बच रहीं थीं, एक जनरल नाट के आधीन कन्दहार में और दूसरी जनरल सेल के आधीन जलालाबाद में। यह दोनों पल्टनें अपनी अपनी जगह बीरता से लड़ती रहीं। भारत से जनरल पालक एक बड़ी सेना लेकर चला और ख़ैबर के दर्रे से निकल कर जलालाबाद पहुंचा यहां उसने जनरल सेम का छुटकारा किया। अकबर खां और अफ़ग़ानों के साथ बड़ी भारी लड़ाई हुई अफ़ग़ान भाग गये। यहां से जनरल पालक काबुल गया और उस शहर को फिर से सर किया। यहां उसने जाना कि अंगरेज़ों के न रहने पर अकबर खां के सिपाहियों ने शाह शुजा को मार डाला। काबुल का क़िला गिरा दिया गया और अंगरेज़ी सेना भारत को लौटा दी गई। दोस्त महम्मद कलकत्ते में छोड़ दिया गया कि काबुल चला जाय और वहां अंगरेज़ों का मित्र बन कर राज करे।

लार्ड एलेनबरा

३—सिन्ध के अमीरों ने सुना कि अफ़ग़ानों ने एक अंगरेज़ी सेना को काट डाला। उन्होंने भी सन्धि के विरुद्ध अंगरेज़ों के

साथ लड़ाई भिड़ाई की तैयारी कर दी और अंगरेज़ी रेज़िडेण्ट जनरल औट्रम पर धावा मार दिया। जनरल औट्रम जान बचा कर भागा। सर चार्ल्स नेपियर ने तीन हज़ार की भीड़ के साथ सिन्ध पर चढ़ाई की। सिन्ध के अमीरों के साथ तीस हज़ार बिलोची सेना थी। १८४३ ई० में मियानी और हैदराबाद पर दो बड़ी लड़ाइयां हुई। दोनों में अंगरेज़ों की जीत रही और गवर्नर जनरल ने सिन्ध को अंगरेज़ी राज में मिला लिया।

सिन्ध के अमीर

४—ग्वालियर का राजा जंकाजी सिन्धिया जिसको लार्ड बेण्टिङ्क ने गद्दी पर बैठाया था मर गया। उसके कोई लड़का न था। वह आप भी निरुत्साही और निकम्मा था। उसके अहलकार उसका हुक्म न मानते थे। सरदारों ने जो सेना रख छोड़ी थी उसका खर्च इतना बढ़ गया कि रियासत की दो तिहाई आमदनी उसी में लग जाती थी। सिन्धिया की बिधवा की आयु कुल बारह बरस की थी। उसको आज्ञा दी गई कि किसी को गोद ले ले। उसके थोड़े दिनों पीछे रानी ने उस पुराने

मन्त्री को निकाल दिया जो राजा के समय से राज्य का काम करता था और अंगरेज़ों से लड़ाई कर ली।

५—सर ह्यूगफ आगरे से सेना लेकर चला और १८४३ ई० में ग्वालियर के सरदारों को महाराजपुर और पनिआर की दो लड़ाइयों में हराया। गवर्नर जनरल ने बड़े मरहठा सरदारों की एक सभा बनाई। वह सभा तब तक राज्य प्रबन्ध करती रही जब तक कि जियाजी राव जिस को रानी ने गोद लिया था सयाना हो गया। राजा की सेना चालीस हज़ार से घटा कर नौ हज़ार कर दी गई और शान्ति रखने के लिये ग्वालियर में अंगरेज़ी सेना नियुक्त की गई।

७५—लार्ड हार्डिंज, बारहवां गवर्नर जनरल

(सन १८४४ ई० से सन् १८४८ ई० तक)

१—रणजीत सिंह ने पंजाब में एक बड़ा शक्तिमान राज्य बना लिया था और पंजाब का सिंह कहलाता था। वह लिखना पढ़ना न जानता था, किसी चीज़ की गिनती और हिसाब रखना होता था तो नरम लकड़ी पर उतने ही निशान डालता जाता था। वह नाटा था, आंख एक ही थी, दूसरी आंख बचपन में शीतला से जाती रही थी। सारे मुंह पर शीतला के दाग़ थे। यह अंगरेज़ों का पक्का मित्र था; बुद्धिमान और

लार्ड हार्डिंज (पहिला)

प्रभावशाली शासक था; अपने सब अफ़सरों और सेवकों को अपने बस में रखता था। प्रजा भी उससे बहुत प्रसन्न थी। उसके पास बहुत सी तोपें थीं और एक बली सेना थी जिसको फ़रासीसी अफ़सरों ने लड़ना और हथियार चलाना सिखाया था। इस सेना और तोपख़ाने की सहायता से रणजीत सिंह ने काश्मीर देश भी जीत लिया था।

२—चालीस बरस राज्य करने के पीछे १८३९ ई० में रणजीत सिंह मर गया। उसकी पांच रानियां उसके साथ सती हो गईं।

रणजीत सिंह

उसका बड़ा बेटा गद्दी पर बैठाया गया पर थोड़े ही दिनों के पीछे उतार दिया गया। फिर झगड़े बखेड़े होने लगे। रणजीत सिंह के वंश के बहुत से राजकुमार मारे गये और सिक्खों की सेना के सेनापति तेजसिंह ने सब को दबा लिया। अंगरेज़ों के अफ़ग़ानिस्तान से लौटने के समय से सिख सिपाही इस घमंड में थे कि हम अंगरेज़ों से लड़ने की योग्यता रखते हैं और दिल्ली लूटेंगे। यह लोग सतलज पार होकर अंगरेज़ी इलाक़े में घुस आये। सिखों और अंगरेज़ों में तीन हफ़ते के भीतर भीतर चार लड़ाइयां हुईं। सिख क़वायद जानते थे और हथियार चलाने में चतुर थे, बहादुरी के साथ लड़े। अंगरेज़ों को भारत में अब तक जिन लोगों से लड़ने का काम पड़ा था, उनमें सिख सब से प्रबल थे। पर वह दिसम्बर १८४५ ई० में मुदकी और

फिरोज़पुर के मैदानों में सर ह्यूगफ़ प्रधान सेनापति और लार्ड हार्डिंज गवर्नर जनरल के हाथों से और जनवरी १८४६ ई० में अलीवाल और सुबरांव पर सर हैरी स्मिथ और सर ह्यूगफ़ के हाथों परास्त हुए।

३—अब पंजाब की पहिली लड़ाई समाप्त हो गई। सिखों की सेना घटा कर बीस हज़ार कर दी गई और सतलज और रावी के बीच का इलाक़ा अंगरेज़ों ने ले लिया। गुलाब सिंह राजपूत जो रणजीत सिंह के आधीन काश्मीर का सूबेदार था काश्मीर का राजा बनाया गया। उसके बदले उसने अंगरेज़ों को लड़ाई का खर्चा दिया। रणजीत सिंह का छोटा लड़का दलीप सिंह पंजाब का राजा हुआ और जब तक वह सयाना न हो उसकी मां प्रबन्धकारिणी बनाई गई।

७६—लार्ड डलहौज़ी, तेरहवां गवर्नर जनरल

(सन् १८४८ ई० से सन् १८५६ ई० तक)

१—लार्ड डलहौज़ी १८४८ ई० में भारत में आया और आठ बरस तक गवर्नर जनरल रहा। यह चौथा अंगरेज़ है जिसने भारत में अंगरेज़ी राज की नेव जमाई। लार्ड क्लाइव, लार्ड वेलेज़ली और लार्ड हेस्टिंग की तरह इसने भी बहुत सी रियासतों को अंगरेज़ों के आधीन किया और बहुत से काम ऐसे किये जिन से यह देश पहिले की अपेक्षा बहुत सुरक्षित और धनी हो गया।

२—लार्ड डलहौज़ी को भारत में आये छः महीने भी न बीते थे क पंजाब की दूसरी लड़ाई छिड़ गई। मुलतान के हाकिम मूलराज ने दो अंगरेज़ी अफ़सर मार डाले और सिखों को घोषणा दी कि अंगरेज़ों से लड़ें। सिख सरदारों ने उन पुराने

सिपाहियों को फिर घर से बुलाया जो दो तीन साल पहिले छुड़ा दिये गये थे और १८४६ ई० में अपने सेनापति के साथ बड़ी भारी सेना लेकर फिर अंगरेज़ों पर चढ़ दौड़े।

लार्ड डलहौज़ी

३—सर ह्यू गफ़ उनका सामना करने के लिये आगे बढ़ा। चिलयानवाले पर घमसान लड़ाई हुई, अंगरेज़ों की जीत हुई, परन्तु हानि भी बड़ी भारी हुई। इसके थोड़े दिनों के पीछे गुजरात की लड़ाई हुई।

४—लार्ड डलहौज़ी ने इस अभिप्राय से कि फिर झगड़ा बखेड़ा न हो और पठानों की लूट मार से भी बचा रहे, पंजाब को सन् १८४६ ई० में अंगरेज़ी राज्य में मिला लिया; दिलीप सिंह को एक बड़ी पेनशन कर दी और उसे इंगलैण्ड भेज दिया जहां वह अंगरेज़ अमीरों की तरह रहने लगा। मिस्टर जान लारेंस जो पीछे गवर्नर जनरल हो गये थे पंजाब सूबे के चीफ़ कमिश्नर बनाये गये। बहादुर सिख सिपाही अंगरेज़ी अफ़सरों की कमान में अंगरेज़ी सेना में भरती होने लगे और अब सिख और गोरखे अंगरेज़ी सेना के बड़े स्तम्भ माने जाते हैं। पंजाब की धरती नापी गई, रणजीत सिंह के राज में पैदावार का आधा सरकार लेती थी। अंगरेज़ों ने घटा कर सरकारी जमा चौथाई से भी कम कर दी। व्यापार के माल पर जो देश में कई जगह महसूल लिया जाता था, उठा दिया गया। डाकुओं और लुटेरों को दण्ड दिया गया और उनकी जड़ खोद डाली गई। अंगरेज़ी

सरकार ने सड़कें बनाईं, नहरें निकालीं, मदरसे खोले और इन्साफ़ के अच्छे क़ानून बनाये। पंजाब का ऐसा अच्छा प्रबन्ध हो गया जैसा पहिले कभी नहीं था।

५—१८२६ ई० में जो यन्दाबू की सन्धि हुई थी उसको ब्रह्मा का राजा कई बार तोड़ चुका था। ब्रह्मावालों ने अंगरेज़ी जहाज़ों के कप्तानों को क़ैद कर लिया और जब एक अंगरेज़ी अफ़सर ने उसका कारण पूछा तो इसे भी मारने पर उतारू हो गये।

६—इस कारण १८५२ ई० में ब्रह्मा से दूसरी बार लड़ाई छिड़ गई। लड़ाई रंगून के बड़े मन्दिर पर हुई। ब्रह्मावाले जानते थे कि आराकान और तिनासरिम का प्रबन्ध अंगरेज़ों के हाथ में ऐसा अच्छा हो गया है जैसा ब्रह्मा के राजा ने कभी न किया था। वह आप चाहते थे कि अंगरेज़ ब्रह्मा में राज करें। यही कारण है कि उन्हों ने अंगरेज़ों को रसद दी और उनकी सारी आवश्यकतायें निपटा दीं।

७—ब्रह्मा का राजा ब्रह्मा के ऊपर के भाग में आवा शहर में रहता था। उसने सन्धि करना स्वीकार न किया। लार्ड डलहौज़ी ने १८५३ ई० में पहिले दो इलाक़ों के साथ पेगू का तीसरा ज़िला मिला कर ब्रह्मा का सूबा बना दिया और रंगून उसकी राजधानी हुई। तब से रंगून एक बड़ा बन्दरगाह बन गया है। अब इसमें पहिले से बीस गुने आदमी रहते हैं। सारा देश सुचित्त है और धन से भरा हुआ है। अब न पहिले की तरह झगड़ा बखेड़ा है और न यह हाल है कि अत्याचारी बादशाह जब चाहे सैकड़ों प्रजा का बध करा दे। इसकी जगह नेकनीयती और प्रजा पालन का राज्य है; न्याय और इनसाफ़ के क़ानून हैं; सब जगह शान्ति और सुख है; देश हरा भरा और प्रजा प्रसन्न है।

लाट डलहौसी के समय की
ब्रिटिश इण्डिया।
सन १८५६ ईस्वी
काश्मीर
पंजाब
राजपूताना
सिन्ध
गुजरात
बम्बई
बम्बई हाता
पश्चिमोत्तर प्रदेश
गंगा
मध्य भारत वर्ष की रियासतें
बंगाल हाता
कलकत्ता
मध्य प्रदेश
बरार
निज़ाम राज्य
मैसूर
मद्रास
मद्रास हाता
नेपाल
ब्रह्मा
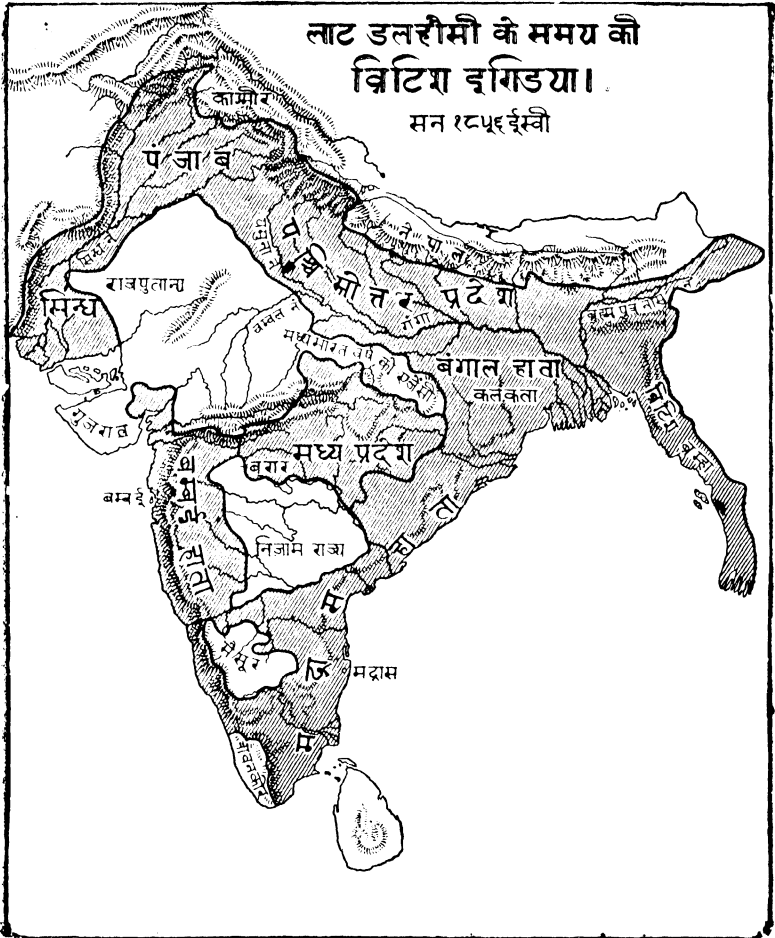
८—१८१८ ई० में पेशवा के पदच्युत होने पर सितारे की छोटी सी रियासत शिवाजी के वंश के एक राजकुमार को दी गई थी। यह राजकुमार मर गया; और उसने कोई बेटा न छोड़ा। इस लिये १८४८ ई० में रियासत बम्बई हाते में मिला ली गई।

९—१८५३ ई० में नागपुर का अन्तिम भोंसला राजा मर गया। इसके कोई सन्तान न थी; इसलिये उसका राज अङ्गरेज़ी अमलदारी में मिला लिया गया और मध्यप्रदेश के नाम से एक चीफ़ कमिश्नरी बनाई गई। १८०३ ई० में बरार का देश हैदराबाद के निज़ाम को लार्ड वेलेज़ली ने दिया था। उसे निज़ाम ने अङ्गरेज़ी सेना के खर्च के बदले जो उसके देश में शान्ति रखने के लिये दी गई थी फिर अङ्गरेज़ों को इसी साल दे दिया।

१०—अवध के नवाब के राज्य में ऐसा कुप्रबन्ध और उपद्रव मचा हुआ था और वह अपनी प्रजा पर ऐसा अत्याचार करता था कि प्रजा ने अङ्गरेज़ों से शिकायत की। लार्ड बेण्टिङ्क ने और हार्डिज ने बार बार नवाब अवध को समझाया और ताकीद की कि देश का प्रबन्ध ठीक होना चाहिये और जो अत्याचार और गड़बड़ी मची है, उसका प्रतिकार न हुआ तो देश उस से ले लिया जायगा। लेकिन उसने किसी बात पर ध्यान न दिया। देश की दशा बिगड़ गई। अवध का सूबा नष्ट हुआ जाता था; इसलिये अङ्गरेज़ी सरकार ने गवर्नर जनरल को आज्ञा दी कि अवध को अङ्गरेज़ी शासन में ले ले। नवाब के लिये बारह लाख रुपये साल की पेनशन कर दी गई और वह कलकत्ते भेज दिये गये।

११—लार्ड डलहौज़ी के इन प्रान्तों को अङ्गरेज़ी राज में मिलाने के कारण अङ्गरेज़ी अमलदारी आधी या एक तिहाई बढ़ गई। अबतक बङ्गाले का गवर्नर गवर्नर जनरल हुआ करता

था। पर अब काम इतना बढ़ गया कि एक ही अफ़सर गवर्नरी और गवर्नर जनरली दोनों नहीं कर सकता था। १८३५ ई० में बङ्गाल के लिये एक लेफ्टिनेण्ट गवर्नर नियुक्त हुआ और गवर्नर जनरल के अधिकार में केवल भारत के शासन का भारी काम रह गया। अब से गवनर जनरल और उसकी कौन्सिल शिमले पर जाने लगो जो पंजाब का एक पहाड़ी स्थान है। तब से अब तक साल भर में आठ महोने गवर्नर जनरल और उसको कौन्सिल शिमले में रहतो है।

७७—लार्ड डलहौज़ी

अङ्गरेज़ी राज के लाभ

१—सन् १८३५ ई० में पहिले ही पहिल बास मील का टुकड़ा रेल का तैयार हुआ। अब इस देश में बोस हज़ार मोल से ज़्यादा रेल को लम्बाई है। बहुत बड़े नगर और बन्दरगाह रेल से मिले हुए हैं। और हर साल लगभग दस करोड़ यात्री रेल से यात्रा करते हैं। रेलो पर माल भो बड़ी सुगमता से एक जगह से दूसरी जगह आता जाता है। जो कहीं काल पड़ता है तो दूसरे देशों का अन्न वहां पहुंच जाता है और बहुत सी जानें बच जाती हैं। रेल के कारण सेना के खर्च में भी बड़ी बचत है। क्योंकि भारत के हर हिस्से में बड़ी बड़ी सेना रखने के बदले स्वास्थकारक स्थानों में छावनियां बनादी गई हैं। और जहां कहीं ज़रूरत पड़ती है रेल पर चढ़ कर सेना पहुंच जाती है।

२—लार्ड डलहौज़ी के समय में व्यापार की बड़ी वृद्धि हुई। भारतवासी व्यापारियों के रूई और अन्न को बिक्री पहिले से

तिगुनी हो गई किसानों को पैदावार का मूल्य बहुत मिलने लगा और वह पहिले से अधिक मालदार हो गये। इसका कारण यह था कि सड़कों और नहरों की राह एक जगह से दूसरी जगह माल ले जाना सहज हो गया था। इङ्गलिस्तान के व्यापारी बहुत तरह को चीज़ें इस देश में लाने लगे। जो चीज़ें पहिले भारत के बहुत से हिस्सों में देखने को भी न मिलती थीं गांव गांव में मिलने लगीं।

३—सड़कें नहरें और पुल बनाने और मरम्मत करने के लिये लार्ड डलहौज़ी ने बारिक मास्तरी का महकमा बनाया। उसके समय में दो हज़ार मील से अधिक लम्बी सड़कें तैयार हुईं और पुल बनाये गये। गङ्गाजी की नहर जो दुनिया की नहरों में सब से बड़ी है। उसी के समय में खुली थी। इसके सिवाय और भी बहुत सी नहरें जारी हुईं। देश के बड़े बड़े ज़मीन के टुकड़े जो अब तक बंजर पड़े थे और जिनमें कुछ पैदा न होता था नहरों के पानी से हरे भरे हो रहे हैं। नहरें क्या हैं मानों चांदी की नदियां हैं, जो तीन हज़ार मील से अधिक लम्बाई में बहती हैं।

४—लार्ड डलहौज़ी के समय से पहिले बिरला ही कोई चिट्ठी लिखता था। डाक महसूल बहुत था। रेल का तो नाम ही न था और सड़कें भी बहुत कम थीं। हरकारे चिट्ठियां ले जाते थे, और बहुत धीरे धीरे चलते थे। चिट्ठियों पर टिकट न होते थे। दूर की चिट्ठियों का महसूल भी अधिक देना पड़ता था। लार्ड डलहौज़ी ने आध आने के टिकट बनवा दिये। अब आध आने में चिट्ठी देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दो हज़ार मील तक पहुंच जाती है। कुल भारत एक शक्तिमान राजा के शासन में न होता तो डाक प्रबन्ध नहीं हो सकता था। अब डाक का

प्रबन्ध अस्सी हज़ार मील में फैला हुआ है। और चालीस करोड़ चिट्ठियां उसके द्वारा बांटी जाती हैं।

५—आध आने के टिकट से भी अधिक विचित्र चीज़ तार है; जिसके द्वारा कुछ आने में चुटकी बजाते बजाते खबर हज़ारों कोस जाती है। तार भी पहिले पहिल लार्ड डलहौज़ी के समय में लगा था।

६—लार्ड बेण्टिङ्क ने अङ्गरेज़ी पढ़ाने के स्कूल खुलवाये। लार्ड डलहौज़ी ने सिरिश्ते तालीम बनाया। अब देश भर में हज़ारों स्कूल खुल गये। देशी भाषायें भी सिखाई जाने लगीं; और सब लोग उससे लाभ उठाने लगे। उसके समय में इस देश में पचीस हज़ार स्कूल थे अब बढ़ते बढ़ते डेढ़ लाख स्कूल हो गये हैं जिनमें चालीस लाख विद्यार्थी पढ़ते हैं। १८५३ ई० तक सिविल सरविस के अफसरों का मुक़र्रर करना कम्पनी के हाथ में था। लोग अपने मित्रों और रिश्तेदारों को नियुक्त करके भारत में भेज देते थे। भारतवासी सिविल सरविस में नहीं आ सकते थे। पर उस साल सिविल सरविस की परीक्षा स्थापित हुई और जो लोग सब से ऊंचे पास हुये उनको जातिपांत का भेद न करके ओहदे दिये गये। अब भारत के सिविल सरविस में ब्राह्मण, राजपूत, मुसलमान और पारसियों के सिवाय शूद्र भी हैं।

७८—लार्ड कैनिंग, चौदहवां गवर्नर जनरल

(सन् १८५६ ई० से सन् १८५८ ई० तक)

१—लार्ड कैनिंग १८५६ ई० में गवर्नर जनरल होकर आया। अब इस बात को सौ बरस बीत चुके थे, जब क्लाइव ने पलासी की लड़ाई जीत कर अङ्गरेजी राज की नेव डाली थी देश में

शान्ति फैली थी। कोई डर की बात न थी। पर बंगाले में एकाएक एक उपद्रव फैला। यह उपद्रव बंगाले की देशी सेना का विद्रोह था जो ग़दर के नाम से प्रसिद्ध है।

२—अंगरेज़ी हुकूमत के आरम्भ से बंगाल एक शान्ति और आज्ञा पालन करनेवाला प्रान्त चला आता था। इस कारण वहां बहुत थोड़े अंगरेज़ी सिपाही रक्खे जाते थे। पंजाब के सर होने पर बहुत से गोरे पश्चिमोत्तर भारत में भेज दिये गये थे। देशी सिपाही बहुतेरे थे।

लार्ड कैनिंग

३—आजकल रेल, तार, डाक, स्कूल और अस्पतालों को सब उपयोगी मानते हैं। पर जब यह पहिले पहिल चले थे तो इस देश के लोग जिन्हों ने कभी इनका नाम भी नहीं सुना था, बहुत डरते थे और सोचते थे कि अंगरेज़ों ने हमारी हानि के लिये यह सब बनाया है। कुछ लोग कहते थे कि रेल की लाइनें और बिजली के तार जंजीरें हैं जिन से ज़मीन बाँध दी गई है। कुछ लोग रेल के इञ्जिनों और गाड़ियों को बिना बैल या घोड़े की सहायता के चलते देख कर यह कहते थे कि यह शैतान का काम है। जो उन्हों ने जाना कि तार द्वारा समाचार मिनट दो मिनट में पहुंच जाते हैं, तो वह बहुत डरे। कुछ लोगों का यह बिचार था कि अंगरेज़ों ने जो अस्पताल और स्कूल खोले हैं, वह प्रजा का धर्म नष्ट करने के लिये हैं और अंगरेज़ी पढ़ने से हिन्दुओं का धर्म नष्ट हो जाता है।

४—कुछ दुष्टों ने जो इन बातों को आप न मानते थे, अपनी दुष्टता से ऐसे अनुचित विचार बंगाल और अवध के सिपाहियों में ख़ूब फैला दिये। उस समय सिपाहियों को एक नई तरह की बन्दूक़ दी गई थी उनमें जो कारतूस चढ़ाया जाता था उनको चढ़ाने से पहिले चिकना करना होता था। किसी ने सिपाहियों को बहका दिया कि यह कारतूस दीन बिगाड़ने के लिये हैं। उन्हों ने कारतूसों को काम मे लाने से इनकार किया और अपने अफ़सरों की आज्ञा न मानी। सिपाहियों ने यह भी समझा कि जैसे औरंगज़ेब और टीपू सुलतान ने बरजोरी से हिन्दुओं को मुसलमान किया था उसी तरह अब अंगरेज़ हमको ईसाई करने लगे हैं।

५—अवध और पश्चिमोत्तर देश में नवाबों के समय में ताल्लुक़-दार थे, जो दक्खिन के पालीगार या नायकों की तरह क़िला रखते थे। दिहात पर हुकूमत करते थे और उनसे कर लेते थे; बादशाह दबाव डालता तो उसको कुछ दे देते थे; नहीं तो एक कौड़ी तक न देते थे। अंगरेज़ों की हुकूमत हुई, तो उनकी प्रतिष्ठा कम हो गई। वह मन ही मन में अंगरेज़ों से बैर रखने लगे। अब जो घात पाया तो उन्हों ने भी सिपाहियों को भड़काया और अंगरेज़ों से बाग़ी करा दिया।

६—अब से दो बरस पहिले बूढ़ा पेशवा बाजी राव भी मर गया था। १८१८ ई० में मरहठों की लड़ाई के अन्त में उसके लिये जीते जी आठ लाख रुपये की पेनशन हो गई थी और कानपुर से छः मील पर बिठूर का स्थान उसको रहने के लिये मिल गया था। उसके कोई बेटा न था पर उसने एक लड़के को जिसका नाम नाना साहब था गोद ले लिया था। उसने नाना साहब के लिये पांच करोड़ रुपया छोड़ा। नाना साहब को इस पर भी सन्तोष

न हुआ। उसने कहा कि जो पेनशन मेरे बाप को मिलती थी मुझे भो दी जाय। वह उसका अधिकारी न था। इस कारण अंगरेज़ों ने उसको पेनशन देना स्वीकार न किया। वह भी अंगरेज़ों का बैरी बन गया और उनके बिरुद्ध संगठन करने लगा; और देशी सिपाहियों को चिट्ठी पत्री भेज कर भड़काने पर उतारू हो गया।

७—पहिले पहल इक्का दुक्का रेजिमेंट ने अपने अफ़सरों को आज्ञा मानने में बिरोध किया। वह रेजिमेंट तोड़ दी गई और सिपाही छुड़ा दिये गये। यह सिपाही देश में इधर उधर फिरने लगे जहां जाते थे अपने सजातीय सिपाहियों को अपना हाल सुनाते थे। एकाएक १८५७ ई० में मेरठ में ग़दर आरम्भ हुआ। मेरठ से दिल्ली पास हो है और वहां बहुत से सिपाही रहते थे। सिपाहियों ने पहिले अपने अफ़सरों को गोली से मारा। फिर कुल अंगरेज़ों और उनके बोबो बच्चों को मार डाला। उस समय उन पर भूत सवार था। उन्हों ने अंगरेज़ों की कोठियां और बंगले जलाये; जेलख़ाने तोड़ कर कैदियों को छुड़ा दिया और दिल्ली की ओर चले गये।

८—दिल्ली में शाह आलम का वंश बचा था, जिसके साथ अंगरेज़ों ने बड़ा अच्छा बर्ताव किया था। बहादुर शाह बादशाह कहलाता था। वह बूढ़ा था; और उसको भी अंगरेज़ों से बड़ी भारी पेनशन मिलतो थी। उसका भो यह बिचार हुआ कि पुराने मुग़ल बादशाहों की तरह मैं भो फिर शाहनशाह हिन्द हो जाऊं। वह और उसके बेटे बाग़ियों से मिल गये और उन्होंने अपने शाहनशाह हिन्द होने की घोषणा की। पचास मेम और बच्चे जो बाग़ियों से अपने प्राण बचाने के लिये उसके क़िले में जा छिपे थे उसके हुक्म से मारे गये।

९—जो हाल मेरठ में हुआ वही और बहुत जगहों में भी हुआ। अंगरेज़ी अफ़सर अपने सिपाहियों पर भरोसा रखते थे कि वह हमारे साथ साथ हमारे शत्रुओं से लड़े हैं और राजभक्ति की प्रतिज्ञा कर चुके हैं। पर बहुत से सिपाही अपने कर्म धर्म को छोड़ कर बाग़ी हो गये। उन्हों ने अपने अफ़सरों को मार डाला; और जो अंगरेज़ सामने आया उसी पर हाथ साफ़ किया; और फिर दिल्ली में जा पहुंचे।

जेनरल हैवलाक

१०—कानपुर में नाना साहब विद्रोहियों की एक बड़ी भीड़ का मुखिया और सेनापति बना। यहां अंगरेज़ तो थोड़े थे पर मेम और बच्चे बहुत थे जो बचने की आशा से वहां भेज दिये गये थे। अंगरेज़ लोग बाग़ियों के दल बादल के साथ थोड़ी देर तक बड़ी बीरता से लड़े। मर्द ही मर्द होते तो साफ़ उनके बीच में से निकल जाते पर मेम और बच्चे उनके साथ थे। उनको किस पर छोड़ते। नाना साहब ने कहा कि जो तुम लोग आधीनता स्वीकार करो तो रक्षा का प्रबन्ध करके इलाहाबाद पहुंचा दूंगा। अंगरेज़ों की मत मारी गई थी और वह मान गये। अंगरेज़ मेम और बच्चे गंगा जी के किनारे जाकर नावों में बैठ गये। नावों का किनारे से छूटना था, कि नाना साहब के बन्दूकचियों ने किनारे से बन्दूकें छोड़ीं, बहुत से मारे गये। नावों में आग लगा दी गई। जो बचे उनमें से मर्द तो सिपाहियों की गोलियों से मारे गये, और मेम और बच्चे पहिले कैद कर

लिये गये, फिर नाना साहब के हुक्म से काट डाले गये। और उनकी लाशें एक कुएं में डाल दी गईं।

११—बाग़ी पांच महीने तक दिल्ली को अपने बस में किये रहे इतने में कलकत्ता, मद्रास और पंजाब से सेना आ गई। सिखों को आधीन हुये आठ ही बरस हुये थे। और उन्हों ने देख लिया था कि अंगरेज़ों का शासन कैसा अच्छा है। और वह अंगरेज़ी राज में जैसे सुखी थे वैसे देशी राजाओं के राज में कभी न रहेंगे। सिख और गोरखे स्वामिभक्त रहे और अंगरेज़ों की ओर से वैसी ही बीरता से लड़े जैसी कि कभी इन्हीं अंगरेज़ों से लड़ने में इन्होंने दिखाई थी। जनरल हैवलाक ने जो पीछे से सर हेनरी हैवलाक की पदवी पाकर प्रसिद्ध हुआ नाना साहब को हरा दिया। वह बनों में भाग गया और न जाने वहां उसका क्या हुआ।

सर जेम्स आउट्रम

जनरल नील जनरल हैवलाक के साथ हो लिया। दोनों ने मिल कर कानपुर ले लिया और लखनऊ के अंगरेज़ों की सहायता को चले जहां सर हेनरी लारेन्स बड़ी बीरता के साथ पचास हज़ार विद्रोहियों का सामना कर रहा था। ६ दिन की कड़ी लड़ाई के पीछे जनरल विलसन ने धावा कर के दिल्ली जीत ली। अब सर कोलिन केमबल और सर जेम्स औट्रम की कमान में एक बड़ी गोरों की सेना आ पहुंची। कानपुर और लखनऊ जीत लिये गये। बाग़ी अवध से निकाल दिये गये।

जनरल निकलसन दिल्ली की लड़ाई में मारा गया। कुछ दिन पीछे जनरल हैवलाक भी मर गया।

१२—एक सेना मदरास से जनरल ह्विटलाक के साथ और दूसरी बम्बई से सर ह्यू रोज के साथ चली। रास्ते में सिन्धिया और होलकर को हराती हुई और किले पर किले जीतती हुई धीरे धीरे उत्तरीय भारत में उसने प्रवेश किया। सिंधिया और होलकर आप तो अंगरेजों से मिले रहे पर अपनी सेना को बाग़ियों से मिल जाने से न रोक सके। इस बिगड़ी हुई सेना का सेनापति तात्या टोपे था। बाग़ी हर स्थान पर हारे तात्या टोपे पकड़ा गया और फांसी पर चढ़ाया गया।

१३—दिल्ली की जीत के पीछे बिद्रोही जहां तहां भाग गये और १८५८ ई० के अन्त तक सब जगह शान्ति और सुख फैल गया।

७९—भारत इङ्गलिस्तान की महारानी के शासन में

१—जब बिद्रोह शान्त हो गया और चहुं ओर अमन चैन फैल गया तब इंगलिस्तान की पार्लिमेण्ट ने अनुभव किया कि अब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नाम पर शासन करने की आवश्यकता शेष नहीं रही। उसका जीवन समय खूब लम्बा, गौरवपूर्ण तथा विचित्र रहा है। किन्तु अब इसका कार्य्य समाप्त हो चुका है।

इंग्लिस्तान की महारानी विक्टोरिया ने पार्लिमेण्ट की अनुमति और प्रार्थना पर भारत की शासन डोर अपने कर कमलों में ली। इस प्रकार भारत बृतानिया के महान राज्य का एक भाग हो गया। यह साम्राज्य ऐसा महान तथा विस्तृत है कि अब तक संसार में ऐसा कोई राज्य कहीं नहीं हुआ। महारानी ने

एक घोषणा जारी की, जो भारत की बीस भाषाओं में अनुवादित होकर प्रत्येक बड़े नगर में नवम्बर सन् १८५८ ई० के प्रथम दिन सब प्रजा समुदाय के सामने पढ़ी गई। यह घोषणा भारत के राजकुमारों तथा अन्य समग्र साधारण प्रजा के नाम थी, और इसे उचित रीति पर भारत की सब से बड़ी सनद (मेगना चार्टा) कहा जा सकता है, जिस पर एक विस्तृत देश के निवासियों के स्वत्वों तथा स्वतन्त्रता की नीवें स्थापित हैं।

महारानी विक्टोरिया

२—लार्ड केनिङ्ग जो सन् १८५६ ई० से भारत के गवर्नर जनरल थे, महारानी के नाम पर भारत में शासन करने के लिये नियत किये गये और उनका पद वाइसराय तथा गवर्नर जनरल हुआ। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समस्त अङ्गरेज़ तथा भारतीय कर्म्मचारी अपने अपने पदों पर महारानी के कर्म्मचारी बन कर स्थित रहे। इस घोषणा में लिखा था कि—

"हम (अर्थात महाराणी जी) भारतीय रियासतों के स्वामियों के स्वत्व, पद तथा मान मर्य्यादा को अपने समान समझेंगी।

"हम उन सब को जो हमारे आधीन कुछ अधिकार रखते हैं बड़े ज़ोर से यह ताकीद करती हैं, कि वह हमारी प्रजा के प्रत्येक व्यक्ति के धार्म्मिक सिद्धान्तों तथा पूजा आदि में सब प्रकार हस्तक्षेप करने से अलग रहें।

"हमारी यह इच्छा है कि जहां तक सम्भव हो भारत के प्राचीन स्वत्वों और रीति नीति का उचित ध्यान रक्खा जाय।

"यह हमारी इच्छा है कि हमारी प्रजा को चाहे वह किसी नसल या धर्म्म की क्यों न हो, हमारी नौकरियों के पदों पर, जिन के कर्तव्य वह योग्यता से पूरे कर सकें पूरी पूरी निरपेक्षता और स्वतन्त्रता से स्थान दिया जाय।

"यह हमारी अत्यन्त उत्कट इच्छा है कि हम भारतवर्ष में शान्तिमय कारीगरियों को उन्नते दें, सार्वजनिक लाभ और हित के कामों को बढ़ाएं और इस देशनिवासी अपनी प्रजा की भलाई के लिये शासन करें। उनकी खुशहाली में हमारी शक्ति, शान्ति में हमारी रक्षा और उनकी कृतज्ञता में हमारा सब से उत्तम पुरस्कार होगा।"

३—अब भारतीय रियासतों के स्वामियों तथा निवासियों ने यह समझा कि हमारा जान—माल एक ऐसी शक्ति की छत्रछाया में सुरक्षित है, जो उन समस्त शक्तियों से अधिक प्रबल तथा दयामयी है, जिन का कुछ समय से हम पर शासन था। तब से अब तक पूर्ण शक्ति में छः साल से अधिक समय व्यतीत हो चुका है। इस काल में बृटिश भारत की सीमा के अन्दर तो कोई भी युद्ध नहीं हुआ और सीमा से बाहर भी बहुत कम लड़ाइयां हुई हैं। समस्त देश का इतिहास शान्ति, उन्नति, खुशहाली, सुधार, धन की अधिकता और सुख चैन का इतिहास रहा है, और नई सभ्यता की समग्र सुगमताएं एक के पीछे दूसरी यहां प्रचलित होती रही हैं।

४—भारतवासी जिन के मन इस प्रेम से प्रभावित हो चुके थे, अपनी महारानी से प्रेम करने लगे थे, और वह उन्हें प्यार करती थीं। वह भारत के दीन से दीन और निर्धन से निर्धन मज़दूर की भी ऐसी ही महारानी थीं, जैसी कि इंगलिस्तान के किसी अभिमान मूर्ति लार्ड की, यद्यपि वह भारत में कभी नहीं आईं, किन्तु

वह हिन्दुस्तानी बोल पढ़ तथा लिख सकती थीं। कारण यह कि उन्होंने भारत से एक मुंशी बुला कर उससे यह भाषा सीखी थी, और जब कोई नया वाइसराय वा उच्च पदाधिकारी भारत भेजा गया, और रवाना होने से पहले महारानी के सम्मुख उपस्थित हुआ, तो वह उससे यह कहने से कदापि न चूकीं कि "भारत में मेरी प्रजा से दयापूर्वक बर्ताव करना।" महारानी ने अपने वाइसरायों द्वारा सन् १८५८ से सन् १९०१ तक ४३ वर्ष तक शासन किया, और भारत के किसी प्रान्त पर कभी इस से उत्तम शासन नहीं हुआ, जैसा कि महारानी विक्टोरिया के शासन काल में समस्त भारत पर हुआ।

८०—प्रथम वाइसराय

बुद्धिमत्तानुसार धीरे धीरे सुधार

१—**प्रथम वाइसराय लार्ड केनिङ्ग** ने जो सन् १८५६ में गवर्नर जनरल होकर भारत में पधारे थे, सन् १८६२ तक शासन किया। वह ऐसे दयालु शासक थे कि भारत में "क्लीमेन्सी केनिंग" अर्थात् "दयावान केनिंग" के नाम से प्रसिद्ध हुए। उन्होंने सैकड़ों बिद्रोहियों पर कृपा की और उन सब के अपराध क्षमा कर दिये जो नरहत्या, लूट, मार आदि दोषों के दोषी ठहरे थे। बिद्रोहियों में ऐसे पुरुष बहुत से थे जिन को दुष्ट और चालाक स्वार्थी लोगों ने बहका कर धोके में डाल दिया था। अतः वह अपनी भूल पर बहुत लज्जित थे। महाराणी विक्टोरिया की इच्छा थी कि उन सब को क्षमा कर दिया जावे, जिस से वह सब अपने अपने घरों में जाकर निर्भय जीवन व्यतीत करें। लार्ड केनिंग ने बड़ी बुद्धिमत्ता से महारानी की इस इच्छा को पूर्ण किया।

२—लार्ड केनिंग के समय में भारत में तीन बड़े क़ानून पास हुए, जो बहुत विचार पूर्वक तैयार करके देश में प्रचलित किये गये। उनका नाम "ज़ाबूता दीवानी सन् १८५९," "ताज़ीरात हिन्द सन् १८६०," तथा "ज़ाबूता फौज़दारी सन् १८६१" हैं। उस समय तक प्रत्येक प्रान्त का क़ानून जुदा जुदा था, किन्तु यह तीनों क़ानून समस्त भारत के लिये बनाये गये। इनके कारण देश को वह बहुमूल्य पदार्थ प्राप्त हुआ जो इस से पहले कभी नहीं हुआ था, वह पदार्थ प्रजा के सब भागों के लिये समान दीवानी तथा फौज़दारी क़ानून थे। इसी समय के लगभग (१८६१) प्रेसिडेन्सी नगरों में "हाई कोर्टस् आफ़ जस्टिस" महान् न्यायालय स्थापित किये गये।

३—लार्ड केनिंग ने एक और सुधार यह किया कि गवर्नर जनरल की क़ानूनी कौन्सिल में जो समग्र भारत के लिये क़ानून बनाया और पुराने ानूनों का सुधार किया करती है भारतीय सदस्यों को भी स्थान दिया। यह भारत शासन में भारतीयों को भाग दिये जाने की ओर पहला पग था। इन सदस्यों को पीछे से भारतीय प्रजा अपने प्रतिनिधि निर्वाचन करने लगी। हिन्दू सदस्य हिन्दू प्रजा के तथा मुसलमान, मुसलमान प्रजा के प्रतिनिधि हुए। इससे अगले पचास वर्ष में अन्य वाइसराय भी इसी ओर पग पग बढ़ते चले गये। अब प्रत्येक प्रान्त में उसकी अपनी क़ानूनी कौन्सिल तथा अपने भारतीय सदस्य हैं, अत: गवर्नर वा लेफटनेण्ट गवर्नर महोदय अन्धकार में नहीं वरन् उन सदस्यों की सम्मति तथा ज्ञान के उजाले में काम करते हैं। यह सदस्य गवर्नमेण्ट को बता सकते हैं कि कोई क़ानून प्रजा के लिये लाभकारी होगा या नहीं। यदि उस क़ानून को उचित तथा हितकर समझा जाता है, तो कौन्सिल में पास होकर देश का

क़ानून हो जाता है, किन्तु यदि हानिकारक और असन्तोषजनक सिद्ध होता है तो इसको सुधार कर इसके समस्त दोष दूर कर लिये जाते हैं, और इस प्रकार इस क़ानून को प्रजा के लिये अच्छा तथा लाभकारी बना दिया जाता है, या यदि यह नितान्त असम्भव देख पड़ता है तो सर्वथा उड़ा दिया जाता है।

४—**सुधार शनैः शनैः क्यों हो**—इन तथा अन्य सुधारों में जिन पर विचार किया गया वा जो पास हुए, भारत सरकार को बड़ा सावधान रहना पड़ा। कारण यह कि पहले तो आरम्भ में कोई यह भविष्यद्वाणी न कर सकता कि नूतन नियम वा परिवर्तन प्रजा के लिये हितकर होंगे या नहीं। प्राचीन काल में भारत के बहुत से प्रदेशों में बहुत से शासक थे। प्रत्येक शासक अपनी इच्छा अनुकूल सब से श्रेष्ठ रीति से शासन किया करता था। प्रत्येक प्रदेश के क़ानून तथा रस्म रिवाज भी भिन्न भिन्न थे, एक देश में जो बात उचित तथा न्यायानुकूल समझी जाती थी, दूसरे में वही अनुचित तथा अन्याय थी। किन्तु अब एक सर्वोपरि गवर्नमेण्ट स्थापित हो गई थी, अतः यह आवश्यक था कि ऐसे नियम तथा क़ानून बनाये जांय, जो समग्र देश के लिये एक से लाभकारी तथा हितकर हों। सरकार की इच्छा थी कि किसी क़ानून वा रिवाज में उस समय तक कोई उलट फेर न किया जाय, जब तक कि वह स्पष्ट तथा प्रजा के लिये हानिकारक सिद्ध न हो, जैसी कि हिन्दू बिधवाओं के सती होने की रस्म थी, और दूसरी रस्म निरपराध दुधमुंही कन्याओं के हत्या की थी। दूसरे गवर्नमेण्ट की यह इच्छा न थी कि कोई ऐसा क़ानून पास किया जाय, जो समस्त प्रजा के लिये एक सा लाभकारी न हो, वा जिस के लिये सर्वसाधारण तैयार न हो, वा जिसे वह कुछ नई बला समझ कर भयभीत हो जाय। कारण यह कि भारतवासी

अपनी प्राचीन रीति नीति प्राचीन ढंगों तथा प्राचीन वस्तुओं को बड़ा प्यार करते हैं, जो कि उनके तथा उनके पुरुषाओं के समय से चली आ रही हैं। हम ने देखा है (देखो अध्याय ७३ पैरा ३) कि सन् १८५७ ई० सिपाहियों के महा विद्रोह के अन्य कारणों में से एक कारण यह भी था कि लार्ड डलहौज़ी ने बहुत सी नई चीज़ें जैसी कि रेल, तार, डाक के समस्त टिकट, अंगरेज़ी शिक्षा के स्कूल तथा औषधालय एक दम जारी कर दिये थे, इसमें सन्देह नहीं कि यह सब चीज़ें बड़ी अच्छी तथा हितकर हैं, और अब प्रत्येक भारतवासी इनके लाभ को जानता तथा मानता है, किन्तु फिर भी उस समय के लिये यह सर्वथा नवीन ही थीं, अतः बहुत से भोले भाले भारतवासी उनसे भयभीत हो गये।

५—सुधार के विषय पर बिचार करते तथा ऐसे नियम बनाते हुए, जो यद्यपि इंगलिस्तान में साधारण तथा प्रचलित हैं, किन्तु भारत में नितान्त नवीन हैं, सरकार को दो बातों पर दृष्टि रखनी पड़ती है।

६—उनमें से प्रथम बात तो यह है, कि भारत इंगलिस्तान से एक सर्वथा भिन्न देश है, और अंगरेज़ भारतवासियों से प्रत्येक बात में विभिन्नता रखते हैं। उनका इतिहास भिन्न है, उनके आचार बिचार, रीति नीति भी किसी प्रकार एक नहीं कही जा सकतीं। भाषा, धर्म्म, भोजन तथा वस्त्रादि का तो कहना ही क्या है? समस्त अंगरेज़ एक ही भाषा बोलते हैं। धर्म्म में वह सब ईसाई हैं। जाति उन सब को एक ही है, वरन् यदि यह कहा जाय तो अधिक सत्य होगा कि इंगलिस्तान में भारत के समान जाति पांति है ही नहीं। अतः यह सम्भव है, कि जो बात इंगलिस्तान के लिये अच्छी हो वह भारत के लिये अच्छी न हो। यह भी सम्भव है कि शासन की जो रीति या ढंग अंगरेज़ों के योग्य हो वही भारतवासियों के लिये भी उचित हो।

७—दूसरी बात यह है कि भारत के भिन्न भिन्न प्रदेशों के वासी बहुत सी बातों में एक दूसरे से बहुत कुछ विभिन्नता रखते हैं, जैसे कि उनके रूप, रंग, भाषा, जातियां, वंश, धर्म्म, रहन, सहन, आचार, व्यवहार सब ही भिन्न हैं। आर्य्य वंश का एक सिक्ख, मद्रासी द्रावड़ी से कुछ भी नहीं मिलता। पंजाबी मुसलमान, बंगाली हिन्दू से तथा बिलोची, ब्रह्मदेश वा आसाम देश के किसी वासी से कुछ भी समानता नहीं रखता। उत्तर-पश्चिमीय सीमा प्रान्त का पठान मलाबार के हिन्दू नायर से सर्वथा भिन्न है। अतः भारत में एक प्रदेश का उसके वासियों के लिये जो चीज़ उचित या लाभकारी हो सकती है, वही दूसरे के लिये अनुचित तथा हानिकारक होनी सम्भव है।

८—यह समग्र बातें इसके लिये यथेष्ठ कारण हैं कि भारत की प्रमुख गवर्नमेण्ट को सुधार करने वा भारत शासन सम्बन्धी नये नियम बनाने और नये ढंग स्वीकार करने में अत्यन्त सावधानी तथा धैर्य्य से काम लेना पड़ता है। इन सुधारों का प्रयोजन यह होता है कि समग्र प्रजा के लिये जीवन व्यतीत करना सहल तथा सुगम हो जाय, यह नहीं कि किसी एक जाति पर कृपा की जाय या किसी एक जाति को दूसरी पर अत्याचार करने का अधिकार प्राप्त हो।

६—जब शासन डोर कम्पनी के हाथों से निकल कर बृतानिया अधीश के हाथों में आई तो पुराने "बोर्ड आफ़ कन्ट्रोल" के स्थान में एक कौन्सिल स्थापित की गई, जिसका नाम "इण्डिया कौन्सिल" हुआ। इसका प्रधान "सेक्रेटरी आफ़ स्टेट फ़ार इण्डिया" अथवा "भारत मन्त्री" कहलाया। उसको सिंहासन की ओर से नियत किया जाता है। पहिले इस कौन्सिल के सब सभासद अंगरेज़ हुआ करते थे। किन्तु अब इसके दो सभासद भारतीय भी हैं।

एक हिन्दू, दूसरा मुसलमान। शेष सब ऐसे अंगरेज़ हैं, जो भारत में उच्च पदों पर अधिकारी रह चुके हैं।

१०—तीनों प्रेसिडेन्सी नगरों कलकत्ते, मद्रास तथा बम्बई में युनिवर्सिटियां स्थापित की गईं। तत्पश्चात् अन्य तीन प्रान्तों की राजधानियों इलाहाबाद, लाहौर और पटने में भी युनिवर्सिटियां स्थापित हो गईं। उनसे शिक्षा तथा अंगरेज़ी प्रचार में बड़ी सहायता मिली। कारण यह कि सहस्रों विद्यार्थी इन युनिवर्सिटियों और उनके आधीन कालेज़ों में शिक्षा पाने के लिये इकट्ठ होते हैं। यह कालेज उन विद्यार्थियों को वार्षिक परीक्षाओं के लिये तैयार करने के प्रयोजन से स्थापित किये गये हैं। शिक्षा में जो सुधार हुआ है, वह भी क्रमशः हुआ है। जब यह देखा गया कि पहिली युनिवर्सिटियां अच्छी फलीभूत हुई हैं, तो फिर यह दूसरी भी अति सावधानी तथा सुगमता से बारी बारी से खोल दी गईं। प्राइमरी (प्रारम्भिक) तथा सेकण्डरी (द्वितीय श्रेणी के) स्कूल खोलने में भी यही नीति बरती गई है। समस्त उच्च (हाई) मध्यम (मिडिल) तथा प्रारम्भिक (प्राइमरी) शिक्षा की पाठशालाएं एक दम ही नहीं खोली गईं, वरन् शनैः शनैः खुली हैं, जब यह स्पष्ट रीति से ज्ञात हो गया कि लोग इन्हें पसन्द करते तथा सम्मान की दृष्टि से देखते हैं और अब इन में शिक्षा देने के लिये योग्य अध्यापक तैयार हो गये।

विद्रोह दूर करने, शान्ति स्थापित रखने तथा देश शासन के उन्नति करने में लार्ड केनिंग को जो कठिन परिश्रम करना पड़ा उससे वह बहुत थक गये और अपने देश इंगलिस्तान पहुंचने के एक वर्ष उपरान्त ही ५० वर्ष की आयु में सन् १८६२ ई० में इस असार संसार से कूच कर गये। उनकी धर्म्मपत्नी इस से कुछ काल पहिले ही बंगाल में ज्वर का भट हो गई थीं।

८१—भारत के राजकुमार

१—हम ने देखा है कि सन् १८५८ ई० की घोषणा में महारानी ने भारत के राजकुमारों तथा अन्य सर्वसाधारण प्रजा को सम्बोधन किया है।

भारत के राजकुमार कौन हैं?

बृटिश भारत तो बृतानिया अधोश के अपने शासन में हैं, जिन की ओर से वायसाराय महोदय भारत पर शासन करते हैं, किन्तु यहां बृटिश भारत की सोमा से बाहर भी बहुत सो भारतोय रियासतें हैं जिन्हें कभो कभो सुरक्षित रियासतें भी कहा जाता है। इनमें से बहुत सो बड़ी बड़ी रियासतें दो सौ साल पहले अर्थात् औरंगजेब की मृत्यु के उपरान्त मुग़ल साम्राज्य टूट जाने पर स्थापित हुई थीं, और कई विशेषत: वह जो राजपूताने में हैं, एक सहस्र वर्ष अथवा इससे भी प्राचोन हैं। इन रियासतों पर उनके स्वामो राजा वा नवाब शासन करते हैं। यह सब "भारत के राजकुमार" कहलाते हैं। इनके प्रदेश सुविस्तृत बृतानिया साम्राज्य के ऐसे हो भाग हैं, जैसा कि बृटिश भारत और वह सब बृतानिया अधोश को अपना सम्राट स्वीकार करते हैं।

२—भारत में प्रायः ७०० देशी रियासतें हैं। जो भारत के प्रायः एक तोहाई भाग पर विस्तृत हैं। इनमें सात करोड़ के लगभग प्रजा वास करती है, जो समस्त भारतोय प्रजा का १/४ से १/५ तक है। यह रियासतें भिन्न भिन्न परिमाण की हैं। इनमें से सब से छोटी रियासत लावा राजपूताने में है। उसका परिमाण १९ वर्ग (मुरब्बा) मील है। सब से बड़ो रियासत हैदराबाद दक्षिण में है; जो अपने विस्तार के विचार से एक देश का देश है और परिमाण में

बंगाल के बराबर है। इसकी जनसंख्या १ करोड़ ३० लाख है। भारत की सब से बड़ी चार रियासतें हैदराबाद, मैसूर, बड़ौदा, तथा काश्मीर हैं।

३—अपनी इस घोषणा में महारानी ने कहा था, कि हम अपनी वर्तमान स्थिति को किसी प्रकार विस्तार देना नहीं चाहते, हम अपने भारतीय राजकुमारों के स्वत्व तथा उनके मान मर्य्यादा का ऐसा ही ध्यान रक्खेंगे, जैसा कि अपने का। हमारी यह इच्छा है कि वह और हमारी अपनी प्रजा सब प्रकार के ऐश्वर्य्य तथा सुख का आनन्द उठायें, जो कि शान्ति तथा सुशासन से प्राप्त हो सकता है।

४—सन् १८५९ ई० में लार्ड केनिंग ने उत्तरीय भारत का दौरा किया और आगरे में एक दर्बार करके भारत के उन राजकुमारों को जो उस दर्बार में सम्मिलित हुये थे, कहा :— "कोई रियासत चाहे वह कैसी ही क्यों न हो, अपनी स्वतन्त्रता से बञ्चित करके बृटिश भारत में सम्मिलित न की जायगी। योग्य उत्तराधिकारी के न होने पर भी कोई रियासत तोड़ी न जायगी, वरन् प्रत्येक रियासत के स्वामी को यह अधिकार प्रदान किया गया है कि वह अपना कोई पुत्र न होने की अवस्था में किसी अन्य बालक को गोद ले ले। लार्ड केनिंग ने प्रत्येक रियासत में एक एक सनद भेज दी जिस में उसे उस समय तक के लिये यह अधिकार प्रदान किया गया है जब तक कि वह बृतानिया अधीश की हितैषी तथा मित्र रहे और उन प्रतिज्ञापत्रों का पालन करे जो समय समय पर उस रियासत में तथा बृटिश सरकार में हुए हैं, वा आगे होते रहेंगे।"

५—इन रियासतों को सुरक्षित रियासतें कहने का कारण यह है कि बृटिश सरकार ने उन्हें भारत से बाहर के किसी विदेशी

आक्रमण वा भारत के अन्दर ही किसी अन्य रियासत की लूट मार के समस्त भयों से सब प्रकार सुरक्षित कर दिया है। प्रत्येक रियासत के निवासी अपने ही राजा की प्रजा हैं। वही उन पर टैक्स लगाता है, अपने क़ानून बनाता है और जिस प्रकार चाहता है न्यायपूर्वक उन पर शासन करता है। उनकी प्रजा सब जगह बृटिश भारत में पूरी पूरी स्वतन्त्रता से व्यापार कर सकती है, और इसके बदले में कुछ दिये बिना ही बृटिश भारत की बन्दरगाहें, रेलें तथा बाज़ार काम में ला सकती हैं। प्राचीन काल में एक रियासत के राजा को बाहर के आक्रमण का सदैव भय रहता था। अतएव प्रत्येक शासक को अपनी तथा अपनी रियासत की रक्षा के निमित्त पूरा पूरा धन लगा कर सेना रखनी पड़ती थी, किन्तु अब इस विषय में उसे कुछ चिन्ता नहीं करनी पड़ती; अतः उन समस्त लाभों में से जो बृटिश शासन के कारण भारतीय रियासतों को पहुंचे हैं, शान्ति सुख सब से बड़ा लाभ है।

६—दूसरी ओर इन राजकुमारों के कुछ कर्तव्य तथा अधिकार भी हैं। कोई रियासत अधीश किसी से युद्ध व सन्धि नहीं कर सकता। यह उसके महाराजा का कर्त्तव्य है, जो उनकी रक्षा करता है। यदि कोई रियासत का राजा चाहे तो अपनी रियासत के सुप्रबन्ध तथा अशान्ति दूर करने के लिये हथियारबन्द पुलिस रख सकता है। आवश्यकता के समय बृटिश साम्राज्य की सहायता के लिये वह एक सैनिक दस्ता भी रख सकता है। यह दस्ता "इम्पीरियल सर्विस कोर" अर्थात् "साम्राज्य के निमित्त युद्ध करनेवाला सैन्य दल" कहलाता है।

७—प्रत्येक रियासत के अधीश का यह कर्तव्य है कि वह अपनी प्रजा पर न्यायपूर्वक तथा उचित रीति से शासन करे, और उस पर किसी प्रकार अत्याचार न करे, न किसी बुरी प्रथा का,

जैसे कि विधवाओं का सती होना, वा निरपराध कन्याओं की हत्या आदि को अपनी रियासत की सीमा में किसी जगह जारी रक्खे। यदि किसी रियासत का अधीश अनुचित रीति से शासन करने के कारण सिंहासन से उतार भी दिया जाता है तो भारत सरकार उसके स्थान में उसके किसी निकट सम्बन्धी का सिंहासन पर बैठा देती है।

८२—भारत महारानी इंगलिस्तान की छत्रछाया में अगले चार वाइसराय

१—**लार्ड एलगिन** (सन् १८६२—१८६३ ई० तक) दूसरे वाइसराय थे। वह जिस वर्ष भारत में पधारे उससे अगले ही वर्ष सन् १८६३ ई० में ५१ वर्ष की आयु में वह परलोक सिधार गये, अतः वह प्रजा की भलाई करने के निमित्त जो विचार अपने मन में लेकर भारत में आये थे, उन्हें पूरा न कर सके। उन्होंने आगरे में एक दरबार किया, और महारानी की आज्ञा अनुसार उत्तरीय भारत के नरेशों का जो इस दरबार में पधारे थे, यह बताया कि महारानी को उनके कल्याण की कैसी चिन्ता है, और वह उनकी भलाई के लिये कैसी कैसी शुभ कामनायें अपने पवित्र हृदय में रखती हैं, तथा आप उनकी कैसी हितैषिणी हैं। इसके अतिरिक्त वाइसराय महोदय ने महारानी जी की ओर से यह आशा भी प्रगट की कि समस्त भारतीय नरेश अपनी अपनी रियासतों पर बड़ी उत्तमता से शासन करेंगे तथा अपनी प्रजा को सब भांति आनन्द और सन्तुष्ट रक्खेंगे।

२—उसी वर्ष अफ़ग़ानिस्तान का अमीर दोस्त मुहम्मद मृत्यु को प्राप्त हो गया। वह विद्रोह काल में बृटिश सरकार का बड़ा

मित्र था। दोस्त मुहम्मद के देह त्याग पर उसके छोटे बेटों में से एक ने सिंहासन पर अधिकार जमा लिया। उसका नाम शेर अली था। शेर अली ने सिंहासन हाथ में आते ही अपने बड़े भाई अफ़ज़ल खां को जो राज सिंहासन का वास्तव में उत्तराधिकारी था, गिरफ़्तार करके कारागार में डाल दिया।

३—सर जान लारेन्स (सन् १८६३—१८६९ ई० तक) तीसरे वाइसराय थे, उन्होंने विद्रोह के दिनों में पंजाब में चीफ़ कमिश्नर के पद पर बड़े सुविचार तथा सुप्रबन्ध से शासन किया था। वह एक शूरवीर सिपाही और दृढ़-निश्चय तथा सत्यप्रिय शासक थे। धूम धाम और बाहरी दिखावे को इतना पसन्द नहीं करते थे जितना ठीक काम तथा परिश्रम को। वह अपनी प्रजा के साथ बड़े प्रेम तथा दयालुता का वर्ताव करते थे, और उनकी भलाई के लिये जो कुछ भी हो सकता था करने से कदापि न चूकते थे।

लार्ड लारेन्स

४—उनके शासन काल में भूटान के राजा से एक छोटी सी लड़ाई हुई। भूटान भारत के पूर्वोत्तर में तथा नैपाल के पूर्व में एक छोटा सा प्रदेश है। वहां का राजा कुछ भारतवासियों को दास बनाने के लिये बलात् पकड़ कर ले गया, अतः उसको पराजय करके उन दासों को छुड़वाया गया और उससे प्रतिज्ञापत्र लिखवाया गया।

५—अफ़ग़ानिस्तान में दोस्त मुहम्मद ख़ां के सब से बड़े पुत्र

अफ़ज़ल खां को उसके पुत्र अबदुल रहमान ने कारागार से निकाल कर सिंहासन पर बैठाया। शेर अली भाग गया कि अफ़ज़ल खां राज्याधिकार पाने के पीछे शीघ्र ही मर गया, और शेर खां फिर अमीर बन बैठा। सर जान लारेन्स ने बड़ी बुद्धिमत्ता तथा दूर-दर्शिता से अफ़ग़ानिस्तान के झगड़ों में हाथ डालने से इनकार कर दिया और अफ़ग़ानों को आपस में लड़ भिड़ कर निबट लेने के लिये स्वतन्त्र छोड़ दिया।

६—सन् १८६६ ई० में उड़ीसे में एक भयानक अकाल पड़ा, जिस में बहुत से मनुष्य मर गये। सरकार ने उस अवसर पर बड़ा रुपया ख़रच करके बहुत सी जानें बचाईं। परिणाम यह हुआ, कि उड़ीसा में बहुत सी नई सड़कें, नहरें तथा रेलें बन गईं, जिस से यदि फिर कोई अकाल पड़े, तो वहां अनाज ले जाने में सुगमता रहे। वाइसराय ने एक बड़ी रक़म अलग करके उसका नाम "फेमिन इन्श्योरेन्स फ़ण्ड" अथवा "काल बीमे की पूंजी" रख दिया, और यह निश्चय किया कि इस फण्ड में प्रतिवर्ष कुछ न कुछ मिला कर उसे सार्वजनिक भलाई के कामों, जैसे सड़कों, रेलों, नहरों आदि पर लगाया जाय, जिस से अकाल दूर रहे।

७—लार्ड डलहौज़ी के समय में जो सुधार आरम्भ हुए थे सर जान लारेन्स ने उन्हें पूर्णता को पहुंचाया और कई नये सुधार भी किये। सब से पहले उन्होंने नये स्कूल तथा कालेज जारी किये। तार के सिलसिले का बिस्तार किया। दो पैसे के डाक टिकट में पहले से दुगुने बोझ के पत्रादि भेजने को आज्ञा दी। बन बिभाग (महकमा जंगलात) को बिस्तृत किया और बहुत से वृक्ष लगवाये।

८—**लार्ड मेयो** चौथे वाइसराय सन् १८६९ ई० में आये। उन्होंने तीन साल तक शासन किया और अन्त में एण्डमन द्वीप

(काले पानी) में एक पठान के हाथों मारे गये। वहां वह दौरा करने गये थे।

६—उन्होंने उन्नति तथा सुधार को जारी रक्खा। "पबलिक वर्कस" (सरकारी इमारतों) के विभाग को विस्तृत किया। बहुत से स्कूल (प्रायः मुसलमानों के लिये) खुलवाये। खेती क्यारी के लाभ के लिये "कृषि विभाग" स्थापित किया। इस विभाग के अफसर इस बात का पता लगाते हैं कि अन्य देशों के किसान अपने खेतों की उपज बढ़ाने के लिये क्या क्या करते हैं? कौन कौन सी फ़सलें उगाते हैं? उनमें क्या क्या बोते हैं? कैसे हल काम में लाते हैं? अपने बाग़ों में कैसे कैसे फलदार वृक्ष लगाते हैं? कौन सी खाद का प्रयोग करते हैं? तथा किस प्रकार अपनी धरती को कमाते हैं? वह अफ़सर यह खोज पड़ताल का काम भलीभांति कर सकते थे। कारण यह कि अंगरेज़ संसार में सब स्थानों पर स्वतन्त्रता पूर्वक आ जा सकते हैं। हिन्दू अब से कुछ काल पहले भारत से बाहर जाने का नाम भी न लेते थे। यह अफ़सर लौट कर भारतीय किसानों को वह सब बातें सिखाते थे, जो वह स्वयं विदेशों से सीख कर आते थे, और उन्हें उत्तम रीति पर फ़सलें पैदा करके दिखाते थे।

लार्ड मेयो

१०—लार्ड मेयो के शासन काल में ही स्वर्गवासी ड्यूक आफ़ एडनबरा भारत पधारे। आप महारानी विक्टोरिया के दूसरे

महाराजकुमार थे, राजकीय वंश के आप पहले पुरुष थे, जो भारत आये। आप ने बहुत से भारतीय राजाओं तथा राजकुमारों से भेंट की, और वह सब भी अपनी महारानी के सुपुत्र से मिल कर बड़े प्रसन्न हुए।

११—लार्ड मेयो का दूसरा सुधार यह था कि उन्होंने बृटिश भारत के प्रत्येक प्रान्त में जेलख़ानों, रजिस्ट्रियों, पुलिस, शिक्षा, सड़कों और सरकारी इमारतों से सम्बन्ध रखनेवाले समग्र कामों का प्रबन्ध प्रान्तीय सरकारों के हवाले कर दिया। सब गवर्नमेण्टों को यह आज्ञा दे दी कि वह अपने अपने प्रान्तों की प्रजा से जो कर प्राप्त करें उसे उन कामों पर लगा दें। इन गवर्नमेण्टों को साम्राज्य की सम्मिलित आय में से भी, जो "इम्पीरियल रेवेन्यू" अथवा शाही लगान कहलाती है, कुछ विशेष धन दिया जाया करे। इस प्रकार प्रत्येक प्रान्त से जो कर वसूल होते थे, वह उसी प्रान्त में वहां के निवासियों की इच्छा अनुसार उनकी आवश्यकताओं पर व्यय किये जाने लगे। शाही गवर्नमेण्ट अथवा गवर्नर जनरल तथा उनकी कौन्सिल इस बात के लिये स्वतन्त्र हो गई कि अपना समग्र ध्यान शाही कामों अर्थात् ऐसे कामों पर लगाय जिन का समस्त भारतवर्ष से समान सम्बन्ध हो, जैसे कि सेना, डाकख़ाना, तारघर आदि।

१२—लार्ड मेयो के शासन काल का एक और सुधार यह था कि नमक का कर घटाया गया। प्रजा के महानिर्धन भाग को इससे बड़ी सुगमता हुई। उसी समय राजपूताने के नून की बड़ी झील को रेल की बड़ी बड़ी लाइनों से मिलाने के लिये एक और नई हलकी (लाइट) रेलवे लाइन जारी की गई, जिस से समग्र देश में लवण सुगमता से तथा कम व्यय पर ले जा सके।

१३—**लार्ड नार्थ ब्रूक** (सन् १८७२—१८७६ ई० तक) पांचवें वाइसराय थे। इनके शासन काल में बंगाल में बड़ा अकाल पड़ा, किन्तु उड़ीसा के लिये यह काल ऐसा हानिकारक सिद्ध नहीं हुआ। वाइसराय तथा उनकी कौन्सिल ने इन काल के प्रभाव को रोकने के लिये उचित समय पर यहां बुद्धिमत्ता से काम लिया, और इस सम्बन्ध में काम करने के लिये बहुत से अफ़सर नियत किये। उन्होंने उन कंगाल और निर्धन प्रजाओं को जिन की फ़सलें मारी गई थीं, कार्य्य, वेतन तथा अन्न दिया, अतः इस अकाल में बहुत कम मनुष्य मरे।

लार्ड नार्थब्रूक

१४—जिस समय लार्ड नार्थ ब्रूक वाइसराय थे, उन्हीं दिनों में चिरकाल तक कुशासन के कारण रियासत बड़ौदा के महाराजा को सिंहासन से उतारा गया, जो कि गायकवाड़ कहलाता था। प्राचीन काल में ऐसी दशा में उसकी रियासत भारत राज्य में मिला ली जाती, किन्तु महारानी की सन् १८५८ ई० की घोषणा होते हुए यह न हो सकता था, अतः उसके स्थान में उसके एक नवयुवक सम्बन्धी को गायकवाड़ बना दिया गया और एक सुविख्यात भारतीय नीतिज्ञ सर टी० माधव राव को उसका महामन्त्री बना दिया गया।

१५—उसी समय के लगभग भारतीय नराधीशों के राजकुमारों को शिक्षा के निमित्त अजमेर में एक कालेज स्थापित किया गया, जिस का नाम लार्ड मेयो के नाम पर मेयो कालेज हुआ,

जिन्होंने इस कार्य्य को पहले विचारा था, किन्तु उसकी पूर्ति तक जीवित न रह सके। इसके उपरान्त लाहौर तथा अन्य स्थानों में और कई चीफ कालेज रईसों के सुपुत्रों के लिये खोले जा चुके हैं, जहां नवयुवक रईस अपनी प्रजा पर शासन करने के योग्य होने के लिये शिक्षा पाते हैं। इनको केवल पुस्तकों से ही नहीं पढ़ाया जाता, वरन् घोड़े पर चढ़ना, बहुत से बीरोचित खेल, जैसे कि क्रीकेट, पोलो, टेनिस, हौकी आदि खेलना भी सिखाया जाता है, जिस से उनका शरीर तथा दिमाग़ स्वस्थ तथा पुष्ट रहे।

१६—लार्ड नार्थ ब्रूक के शासन काल की एक बड़ी घटना यह है कि सन् १८७५ ई० में प्रिन्स आफ़ वेल्ज़ भारत में पधारे, जो कि पीछे से सम्राट एडवर्ड सप्तम के नाम से सिंहासन पर बैठे। इस अवसर पर कलकत्ते में जो उस समय भारतवर्ष की राजधानी था एक महान् दर्बार हुआ, जिस में भारत के प्रत्येक प्रान्त से बड़े बड़े राजकुमार, रईस, शासनकर्त्ता तथा सुविख्यात पुरुष अपने भावी सम्राट के दर्शन करने और अपने प्रभु का सम्मान करने के लिये सम्मिलित हुए।

८३—भारतवर्ष महारानी सम्राज्ञी के शासनाधीन अगले पांच वाइसरायों का शासन काल

सन् १८७७ ई० से सन् १६०१ ई० तक

१—**लार्ड लिटन** (सन् १८७६—१८८० ई०) ने दिल्ली में एक महान् दर्बार किया, जिस में महारानी विक्टोरिया के भारतवर्ष की महारानी सम्राज्ञी भारतेश्वरी (एम्प्रेस) होने की घोषणा की गई। राजाओं के महाराजा, तथा बादशाहों के बादशाह के नाम के साथ सम्राट (एम्परर) की उपाधि लगती है। कारण

यह कि एक राजा वा रानी तो केवल एक देश तथा उसकी प्रजा पर शासन करती है किन्तु एक महाराजा वा सम्राट बहुत से देशों के राजाओं का महाप्रभु होता है। इसी लिये हम मुग़ल बादशाहों को सम्राट लिखते हैं। उन्होंने भी भारत के बहुत से देशों पर शासन किया था, और वह भी बहुत से नव्वाबों, राजाओं तथा राजकुमारों के महाप्रभु थे। अतएव बृतानिया साम्राज्य के शासक के लिये भी यह उपाधि सर्वथा उचित थी। हमारे शासक जैसे कि जार्ज पञ्चम इंगलिस्तान के राजा हैं, किन्तु भारत तथा बहुत से अन्य देशों के जो कि बृतानिया साम्राज्य में सम्मिलित हैं महाराजा वा सम्राट हैं।

लार्ड लिटन

२—१ जनवरी सन् १८७७ ई० को दिल्ली में एक शाही सम्मिलन (इम्पीरियल ऐसेम्बली) हुआ, जिस में समस्त भारत नरेश अपनी सम्राज्ञी को, उसके प्रतिनिधि वाइसराय के रूप में, सम्मान देने को सम्मिलित हुए। इन सब ने अपने प्राचीन लड़ाई झगड़ों को भूल जाना स्वीकार किया और सम्राज्ञी की आज्ञापालक प्रजा तथा बृतानिया साम्राज्य के राजकुमारों के तौर पर दर्बार में सुशोभित हुए।

३—सन् १८७६—१८७८ ई० में दक्षिण तथा दक्षिणी भारत में वर्षा नहीं हुई और सूखे (खुश्कसाली) के कारण बहुत कड़ा अकाल पड़ा। ५० लाख मनुष्य मारे गये। भूखी प्रजा को

मृत्यु के मुख से बचाने के निमित्त सरकार से जो कुछ बन पड़ा उसने किया। समुद्र पार से तथा देश के अन्य भागों से जहां अकाल नहीं था, अन्न दक्षिणो भारत में लाया गया। अगणित प्रजा में अन्न बांटने पर दस करोड़ रुपया व्यय हुआ। इस प्रकार लाखों मनुष्यों को मरने से बचाया गया। इस अकाल के पीछे दक्षिणी भारत में रेलवे लाइनों को और भी विस्तृत किया गया। कई नई रेलवे लाइनें खोली गईं, जिस से यदि देश के किसी भाग में फिर अकाल पड़े तो अन्न वहां सुगमता से पहुंचाया जा सके ;

४—इनहीं दिनों में शेर अली अमीर अफ़ग़ानिस्तान ने एक रूसी अफसर से भेंट की, और अंगरेजी अफसर से, जो गवर्नर जनरल ने उसे मित्रवत् भेंट करने के लिये भेजा था, भेंट नहीं की। अपनी इस कार्य्यवाही से शेर अली ने यह दिखाना चाहा कि यदि रूसी कभी भारत पर आक्रमण करेंगे, तो वह उन्हें सहायता देगा और वह बृतानिया का मित्र नहीं वरन् शत्रु है। अतएव उसके विरुद्ध युद्ध की घोषणा की गई, तथा बृतानी सेनाओं ने अफ़ग़ानिस्तान पर चढ़ाई कर दी। शेर अली रूसी तुर्किस्तान भाग गया। जहां पीछे से उसकी मृत्यु हो गई, और उसका पुत्र याक़ूब खां उसकी जगह अमीर बनाया गया। उसने अंगरेज़ों से सन्धि कर ली, किन्तु जब उससे भेंट करने के लिये एक बृटिश अफसर सर एल. केवेगनारी को भेजा गया, तो उसके अफ़ग़ान सिपाहियों ने बलवा करके उस अफसर और उसके रक्षक दस्ते को मार डाला। इस पर याक़ूब खां ने राज छोड़ दिया और उसे भारत में भेज दिया गया।

५—**लार्ड रिपन** (सन् १८८०—१८८४ ई०) सातवें वाइसराय थे। उनके शासन काल में अफ़ग़ानिस्तान का युद्ध समाप्त हुआ। याक़ूब खां के छोटे भाई ऐयब खां ने राज्य पर अधिकार

पाने का प्रयत्न किया, किन्तु जनरल रावर्ट (जो पीछे से लार्ड बनाये गये) शीघ्र ही काबुल से कन्धार जा पहुंचे और उन्होंने उसे भगा दिया। अफ़जल खां का सब से बड़ा पुत्र अबदुल रहमान राज्य का वास्तविक अधिकारी था, उसे अमीर अफ़ग़ानिस्तान बनाया गया। इसका सन् १६०२ ई० में देहान्त हुआ और उसकी जगह उसका बेटा हबीबउल्ला अमीर बना।

लार्ड रिपन

६—लार्ड रिपन को भारतवासियों ने बहुत पसन्द किया। जिन पर वह बड़े दयालु थे। जैसा कि हम पहले देख आये हैं सर चार्लस मेटकाफ ने एक "वर्नेकुलर प्रेस ऐक्ट" बनाया था, (देखो अध्याय ६७) जिससे भारतीय समाचारपत्रों को इस बात को पूरी पूरी स्वतन्त्रता थी कि जो कुछ वह चाहें लिखें, किन्तु उनके किसी लेख से किसी को अनुचित कष्ट न पहुंचे। लार्ड लिटन के शासन काल में यह स्वतन्त्रता कुछ छीन ली गई थी, कारण यह कि समाचारपत्रों ने इसका अनुचित प्रयोग किया था। लार्ड रिपन ने लार्ड लिटन के ऐक्ट को रद्द करके समाचारपत्रों को फिर पूरी पूरी स्वतन्त्रता दे दी, और कहा कि यदि कोई समाचारपत्र कानून के प्रतिकूल कुछ करेगा तो उसपर न्यायालय में मुक़द्दमा चलाया जायगा, और यदि वह दोषी सिद्ध हुआ तो उसे दण्ड मिलेगा।

७—लार्ड रिपन ने भारतवासियों को सेल्फ गवर्नमेण्ट (स्वराज्य वा होम रूल) के भी कुछ अधिकार प्रदान करने का

प्रयत्न किया। उन्होंने वह कानून या ऐक्ट जारी किये जो "म्युनिसिपल का टाउन ऐक्ट" तथा "लोकल फएड ऐक्ट" के नाम से प्रसिद्ध हैं। प्रथम के अनुसार म्युनिसिपल कमेटियां तथा दूसरे के अनुकूल जिला बोर्ड स्थापित किये गये। बहुत से बड़े बड़े नगरों ने इन कानून के अनुकूल अपने काम, जैसे कि उन महसूल की जो कि वह सरकार को सड़कों, इमारतों, अस्पतालों, पाठशालाओं, के लिये देते थे, देख रेख के लिये अपने प्रतिनिधि छांटे। जैसा कि हम देख चुके हैं, लार्ड मेयो ने यह सब अधिकार प्रत्येक प्रान्त की सरकार को दे दिये थे। लार्ड रिपन ने एक पग और आगे बढ़ाया और यह अधिकार प्रत्येक नगर अथवा ग्रामों के जत्थे को प्रदान कर दिये।

८—आजकल (सन् १९१८ ई० में) भारत में सात सौ से अधिक म्युनिसिपलिटियां हैं। इनमें दस हज़ार के लगभग प्रतिनिधि काम करते हैं। यह लोग आप ही कर लगाते हैं। आप ही अपने लिये नियम उपनियम बनाते हैं और आप ही अपने धन को व्यय करते हैं। इसी प्रकार सात सौ से अधिक लोकल, तथा ज़िला बोर्ड, और चार सौ से अधिक यूनियन (सम्मिलित) पञ्चायतें (मद्रास प्रान्त में) हैं, जिन में सत्रह हजार सभासद स्वराज्य के से ही अधिकार रखते हैं।

९—लार्ड रिपन ने प्राइवेट पुरुषों के जारी किये स्कूलों को उनके व्यय के लिये सरकार की ओर से रुपये की सहायता देने की रीति भी जारी की। इस प्रकार मन बढ़ाने से जगह जगह बहुत से स्कूल खुल गये। उन्होंने प्रायः समग्र समुद्री कर उड़ा दिये जो कि उस समय ऐसे माल पर लगते थे, जो भारत में बाहर से लाया जाता था। इस कारण से यह सब माल बड़ा सस्ता हो गया, जिस से ब्यापार की खूब उन्नति हुई।

१०—लगभग पचास वर्ष से मैसूर अंगरेज़ अफ़सरों की एक मण्डली के अधीन था। इसको मैसूर कमीशन कहते थे। सन् १८८१ ई० में इसे पूर्व महाराजा मैसूर के गोद लिये राजा चेवरेन्द्र के हवाले कर दिया गया। यह कार्य्यवाही भी महारानी विक्टोरिया की सन् १८५८ ई० की घोषणा के अनुकूल हुई थी, जिस में यह लिखा था, कि यदि किसी भारतीय नरेश का अपना कोई लड़का न होगा, वह किसी और के लड़के को गोद ले सकेगा।

११—**लार्ड डफ़रिन** (सन् १८८४—१८८८ ई०) आठवें बाइसराय थे। इनके आने के थोड़े ही समय पीछे उत्तरीय ब्रह्मा के राजा थीबा ने, जो अपने देश पर भलीभांति शासन नहीं करता था अंरेज़ों से युद्ध आरम्भ कर दिया। एक छोटी सी अंगरेज़ी सेना उसके विरुद्ध भेजी गई। किन्तु वह सामना नहीं कर सका, और भाग गया। सन् १८८६ ई० में उत्तरीय ब्रह्मा भी शेष बृटिश ब्रह्मा में सम्मिलित कर लिया गया। थीबा को पेन्शन देकर भारत भेज दिया। ब्रह्मी डाकुओं की एक बड़ी संख्या वश में की गई, और उत्तरीय ब्रह्मा पर भी दक्षिणी ब्रह्मा और शेष भारत के समान शासन होने लगा।

लार्ड डफ़रिन

१२—वाइसराय की धर्म्मपत्नी की सहायता से भारतीय स्त्रियों की चिकित्सा (इलाज) के लिये विलायत से लेडी डाक्टर भेजी गई। इस कार्य्य के निमित्त भारत तथा इंगलिस्तान में बड़ा धन

संग्रह होकर एक फण्ड स्थापित किया गया, जो "लेडी डफ़रिन फण्ड" कहलाया। यह सब कुछ महारानी विक्टोरिया की आज्ञानुसार तथा उनकी सहायता से हुआ।

१३—सन् १८८६ ई० में लार्ड डफ़रिन ने ग्वालियर राज्य के शासक सेन्धिया को ग्वालियर का प्रसिद्ध किला लौटा दिया, जिस पर एक अंगरेज़ी फौज ने सन् १७८४ ई० में कप्तान पोपहम की आधीनता में अधिकार प्राप्त किया था (देखो अध्याय ५२)। इससे ज्ञात होता था कि यह वाइसराय भारतीय राजकुमारों पर कितना विश्वास रखते थे।

१४—सन् १८८५ ई० में इण्डियन नेशनल कांग्रेस का पहिला जलसा हुआ। इस महासभा की जड़ मिः ए. ओ. ह्यूम ने सन् १८८३ ई० में रक्खी थी। मिः ह्यूम एक अंगरेज़ सिविलियन थे। उन्होंने यह सभा इस लिये स्थापित की थी कि शिक्षित भारतवासी समय समय पर सरकार को यह प्रगट कर सकें कि उनके विचार में देश की भलाई के लिये और क्या सुधार तथा उन्नति करनी आवश्यक है। उस समय से लेकर अब तक कांग्रेस प्रति वर्ष देश के किसी न किसी बड़े नगर में अपने उत्सव कर रही है।

१५—सन् १८८२ ई० में एक भारतीय सेना बृतानी सेना के एक भाग के तौर पर मिश्र देश को भेजी गई। मिश्र की राजधानी काहिरा पर विजय प्राप्त हुई। सेनाएं उसी साल भारत लौट आईं। ब्रह्मा के युद्ध के अतिरिक्त यह पहिला अवसर था कि भारत की सेनाएं साम्राज्य के निमित्त युद्ध करने भारत से बाहर भेजी गईं।

१६—**लार्ड लैन्सडौन** (सन् १८८८—१८९४ ई०) नवें वाइसराय थे। सन् १८९० ई० में मणीपुर का राजा गद्दी से

उतारा गया। यह छोटी सी रियासत आसाम में है। यह राजा पहले तो अपनी राजधानी से भाग गया था, किन्तु फिर अवसर पाकर उन अंगरेज़ी अफ़सरों पर आक्रमण करके उन्हें मार डाला, जो उस राजधानी में रहते थे। अतएव अंगरेज़ी सेनाओं ने उस रियासत पर आक्रमण करके उस राजा को पराजित किया, और जिन लोगों ने उक्त अफसरों को मारा था, उन्हें फांसी पर चढ़ाया, तथा उस राज्य के राजवंश के एक छोटे से बालक को मणीपुर का राजा बना दिया।

लार्ड लैन्सडौन

१७—लार्ड लैन्सडौन ने भारत की उत्तर पश्चिमीय सीमा को पक्का और सब प्रकार के आक्रमणों से सुरक्षित रखने के कार्य में विशेष बुद्धिमत्ता से काम लिया। बलोचिस्थान को एक सुरक्षित रियासत बना दिया। ख़ान कलात को भारत के राजकुमारों में उचित स्थान दिया। पहाड़ी दर्रों की तफसीलबन्दी कराई, और उन तक नई सड़कें तथा रेलवे लाइनें बनाई गईं, कि आवश्यक अवसरों पर सेनाएं वहां सुगमता तथा शीघ्रता से पहुंच सकें।

१८—इन वाइसराय के शासन काल में इण्डिया कौन्सिल ऐक्ट सन् १८९२ ई० में पास होकर एक आवश्यक सुधार हुआ। गवर्नर जनरल और कुछ प्रान्तों के गवर्नर तथा लेफटिनेण्ट गवर्नरों की कानूनी कौन्सिलों में कुछ पबलिक सभाओं, जैसे कि प्रविंशल (प्रान्तिक) म्युनिसिपल तथा ज़िला कौन्सिलों के निर्वाचित (छांटे

हुए) भारतीय मेम्बरों को उनमें जगह देकर उन कौन्सिलों को विस्तृत किया गया। कौन्सिल के सभासदों का पहिला चुनाव (इन्तखाब) सन् १८६३ ई० में हुआ।

१६—**लार्ड एलगिन दूसरे** (सन् १८६४—१८६६ ई०) दसवें वाइसराय थे। वह दूसरे वाइसराय के पुत्र थे। उन्होंने भी सीमाओं को दृढ़ करने का काम जारी रक्खा। कई सरहद्दी जातियों ने इसमें विघ्न डालने का प्रयत्न किया, किन्तु उनको पराजित करके पीछे हटा दिया गया। इन लड़ाइयों में बड़ी याद रखने योग्य लड़ाइयां चितराल तथा तीराह घाटी की जातियों के साथ हुई।

लार्ड एलगिन

२०—सन् १८६६ ई० में बम्बई में प्लेग प्रगट हुई और उस समय से प्रति वर्ष भारत के किसी न किसी प्रान्त में प्लेग प्रगट होती है। पहिले विशेष कर बम्बई में बहुत से आदमी इसकी भेंट हुए। किन्तु पीछे डाक्टरों ने इसका इलाज ढूंढ़ निकाला, और फिर इस भयानक रोग से दिनों दिन कम आदमी मरते गये। प्राचीन समय में इसने यूरोप में भी अनगिनत पुरुषों की जान ली थी, किन्तु अब वहां कोई इसे जानता भी नहीं।

लार्ड एलगिन के समय में सरकारी नौकरियों के प्रत्येक विभाग में भारतीयों को पहिले से अधिक स्थान दिया गया।

८४—भारत सम्राट एडवर्ड सप्तम के शासन में ग्यारहवां तथा बारहवां वाइसराय

सन् १६०१ ई० से सन् १६१० ई० तक

१—विक्टोरिया "प्रजा माता" दुनिया भर की महारानियों में, जिन्होंने कभी कहीं शासन किया है, सब से अच्छी महारानी थीं। आप का २२ जनवरी सन् १६०१ ई० को इस असार संसार से कूच हुआ। आप ८२ वर्ष तक जीवित रहीं और आप ने ६४ बर्ष तक शासन किया। आप के पीछे आप के ज्येष्ठ पुत्र राज-कुमार वेलस महाराजा एडवर्ड सप्तम शाह इंगलिस्तान तथा भारत सम्राट के नाम से सिंहासन पर सुशोभित हुए।

सप्तम एडवर्ड

२—सम्राट एडवर्ड सप्तम ने ६ बर्ष तक बड़े गौरव से शासन किया। जैसा कि हम पहिले देख चुके हैं; आप सन् १८७५ ई० में लार्ड नार्थ ब्रूक के शासन काल में, जब आप राजकुमार वेलस थे, भारत में पधारे थे। उस समय आप ने समग्र भारतीय रईसों तथा राजाओं से भेंट तथा वार्तालाप की थी। आप की प्रजा आप से प्रेम करती थी। कारण यह कि आप केवल एक बुद्धिमान तथा बलवान शासक ही न थे, वरन् एक भद्र तथा दयालु हृदय पुरुष भी थे। यूरोप की समस्त जातियां आप को बहुत प्यार किया करती थीं। वह सब आप को भलीभांति जानती

थीं, और आप प्रायः उनके राजाओं तथा रानियों के कुछ सम्बन्धी भी थे, जैसे कि क़ैसर जरमनी आप के भानजे तथा महारानी रूस आप की भतीजी थीं। आप ने यूरोप में शान्ति रखने का बड़ा प्रयत्न किया। इसी कारण से आप को इतिहास में "एडवर्ड दी पीस मेकर" अर्थात् "शान्तिकारक एडवर्ड" कहा जाता है। जब आप का अन्तिम संस्कार हुआ तो यूरोप के सात देशों के राजा आप की ओर अपना प्रेम तथा सम्मान प्रगट करने के लिये विद्यमान थे।

३—महारानी विक्टोरिया के शासन काल में जो पहले महारानी और पीछे से भारत सम्राज्ञी कहलाईं, दस वाइसराय भारत में पधारे। महाराजा एडवर्ड के समय में दो आये। एक लार्ड कर्जन और दूसरे लार्ड मिण्टो। ग्यारहवां वाइसराय लार्ड कर्जन थे, जिन्हों ने सन् १८९९ ई० से सन् १९०५ ई० तक शासन किया। इनके शासन काल में दो नये प्रान्त बनाये गये। यह अनुभव हुआ था, कि पुराने प्रान्त में से दो, पञ्जाब तथा बंगाल, के शासन का काम एक लेफटनेण्ट गवर्नर के लिये बहुत अधिक है अतएव पञ्जाब के उत्तर-पश्चिमी भाग को अलग करके एक नया प्रान्त बना दिया गया, और उसका नाम पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त रक्खा गया। बंगाल के पूर्वीय भाग को आसाम के साथ मिला कर उसको पूर्वीय बंगाल तथा आसाम प्रान्त का नाम दिया गया। यह परिवर्तन लार्ड कर्जन के शासन काल के भारत चित्र में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

४—लार्ड कर्जन ने भारत में बहुत से सुधार किये, उन्होंने लवण का कर आधा कर दिया। प्रजा के कङ्गाल हिस्से को इससे बड़ा सहारा मिला। उन्होंने व्यापार तथा सब प्रकार की कारीगरी की सहायता के लिये व्यापार तथा कारीगरी विभाग स्थापित

किया। सन् १९०० ई० में एक बड़ा विस्तृत अकाल पड़ा, किन्तु वाइसराय तथा उनके अफ़सरों की बुद्धिमत्ता और मनुष्यों को समय पर सहायता मिल जाने के कारण बहुत कम मनुष्य मरे। युनिवर्सिटियों का सुधार किया गया, जिस से वह अपना काय्य भलीभांति कर सकें। ग्रामीय बङ्क स्थापित किये गये, जिस से आवश्यकता के समय प्रजा थोड़े सूद पर उनसे रुपया उधार ले सकें। पञ्जाब में एक ऐक्ट "पञ्जाब भूमि ऐक्ट" के नाम से पास किया गया, जिस ने भूमि के स्वामी किसानों को साहूकारों के पंजों से छुड़ाया, जो उनसे भूमि छीन लेने का प्रयत्न करते थे। रियासत अधीशों के पुत्रों को फौजी शिक्षा देने के लिये "इम्पीरियल कैडेट कोर" स्थापित की गई। पश्चिमोत्तरीय सीमा पर सीमावासी जातियां जो समय समय पर हम से लड़ाई भिड़ाई करती रहती थीं,

लाड कर्जन

नौकर रख ली गईं। उन्हें शस्त्र बांट दिये गये, और अपने प्रदेश में शान्ति रखने के निमित्त उन्हें वेतन दी गई।

५—सन् १९०१ ई० में अबदुल रहमान अमीर अफ़ग़ानिस्तान का देहान्त हो गया और उसके स्थान में उसका पुत्र हबीबउल्ला अमीर हुआ, उसने अपने पिता के सब प्रतिज्ञापत्रों को स्वीकार कर लिया।

६—सन् १९०४ ई० में दलाई लामा तिब्बत अधीश ने शत्रुवत् बर्ताव किया। हमारे व्यापार के मार्ग में रुकावटें डालीं तथा रूसियों को अपनी सहायता के लिये बुलाया। कर्नल यङ्गहस्बण्ड

की कमान में सेनाएं भेजी गईं, और वहां की राजधानी लासा पर अधिकार किया गया। दलाई लामा भाग गया, और उसके स्थान में दूसरा शासक नियत करके उसके साथ प्रतिज्ञापत्र किया गया। उसने भारत तथा तिब्बत में व्यापार की आज्ञा देने की प्रतिज्ञा की।

७—लार्ड कर्जन ने प्राचीन भारत के मन्दिरों, मसजिदों, मक़बरों तथा यादगारों की मरम्मत कराने और स्थिर रखने की ओर पहले वाइसरायों की अपेक्षा सब से अधिक ध्यान दिया। इस प्रयोजन से कानून पास किया जिसका नाम "एनशेएट मौन्यूमेएट प्रिज़रवेशन" ऐक्ट अर्थात् "प्राचीन स्मारक रक्षक" नाम रक्खा गया, तथा "अर्कियॅलौजिकल डिपार्टमेण्ट" में नई जान फूकी, जिसको लार्ड मेयो ने सन् १८७० ई० में जारी किया था। इस विभाग के कार्य्य के लिये समस्त भारतवर्ष को सात भागों में विभक्त किया गया। प्रत्येक भाग एक विशेष अफ़सर के आधीन रक्खा गया, जिसने अपना समग्र समय इसी काम में लगाया। प्राचीन चट्टानों तथा स्तूपों पर खुदे हुए लेख बड़ी सावधानी से उतार कर अनुवाद किये गये, तथा प्राचीन भारत के इतिहास पर बड़ा उजाला डाला गया।

८—**लार्ड मिण्टो** (सन् १९०५—१९१० ई०) बारहवें वाइसराय थे। उन्होंने लार्ड कर्जन के कार्य्य को जारी रक्खा तथा शासन में और भी सुधार किये। गवर्नर जनरल की दो बड़ी कौन्सिलें थीं। एक एकजिक्युटिव वा प्रबन्धकर्ता कौन्सिल, जो कि शासन कार्य्य करती है। दूसरी लैजिसलेटिव वा कानूनी कौन्सिल, जो नये कानून वा नियम बनाती है। लार्ड मिण्टो ने इन दोनों कौन्सिलों को विस्तृत किया। इण्डिया कौन्सिल ऐक्ट सन् १९०९ ई० के आधीन इन दोनों कौन्सिलों में भारतीय सदस्यों को

अधिक स्थान दिया गया। इन नये सदस्यों में से बहुत से भिन्न भिन्न सार्वजनिक सभाओं जैसे कि प्रविंशल (प्रान्तिक) कौन्सिलों,

लार्ड मिण्टो

जिला बोर्डों, म्युनिसिपल बोर्डों, व्यापार गृहों (चेम्बर्स आफ़ कामर्स) तथा युनिवर्सिटियों के चुने हुए थे। इन बातों का विशेष ध्यान रक्खा गया था, कि हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों में से सदस्य बनाये जावें। भारतमन्त्री की कौन्सिल में भी, जो लण्डन में है दो भारतीय सदस्यों को स्थान दिया गया। इनमें से एक हिन्दू तथा दूसरा मुसलमान है। पीछे से एक हिन्दू सदस्य और बढ़ा दिया गया। अब तीन हिन्दुस्थानी सदस्य हैं।

६—उस समय में लार्ड मारले के भारतमन्त्री होने के कारण इन सुधारों को "मिण्टो मारले सुधार" का नाम दिया जाता है।

८५—भारत सम्राट जार्ज पञ्चम के शासन में उनके समय के वाइसराय

(सन् १९१० ई० से सन् १९१२ ई० तक)

१—महाराजा एडवर्ड के पीछे उनके सुपुत्र जार्ज सन् १९१० ई० में सिंहासन पर सुशोभित हुए, जो हमारे वर्त्तमान सम्राट हैं। आप जार्ज पञ्चम कहलाते हैं। आप ने लार्ड हार्डिञ्ज को अपना वाइसराय बना कर भेजा।

हिन्दुस्थान
१९३०
अंगरेजी
बिलुचिस्तान
राजपूताना
अजमेर
नैपाल
बिहार
निजाम का
राज्य
मदराज
पांडिचुरी
(फरांसीसी)
लंका
बर्मा
फरासीसी
हिंदीचीन
स्याम
अंडमन द्वीपु

२—सन् १९११ ई० में सम्राट जार्ज तथा सम्राज्ञी मेरी दोनों भारत में पधारे। आप पहले भी सम्राट एडवर्ड सप्तम के समय में भारत पधारे थे। दिल्ली के प्राचीन नगर में १२ दिसम्बर सन् १९११ ई० को बड़ी धूमधाम से आप को राज सिंहासन दिया गया। उस समय सम्राट ने अपने मुखारविन्द से यह घोषणा की, कि दिल्ली नगर एक बार फिर भारत साम्राज्य की राजधानी बनाया जाता है, जैसा कि वह बड़े मुग़ल सम्राटों के समय में था।

लार्ड हार्डिञ्ज

३—उसी समय आप ने यह भी घोषणा की कि बिहार, मगध के प्राचीन राज्य, तथा उड़ीसा का एक नया प्रान्त बनाया जाता है, जिस की राजधानी पटना होगी, जो दो सहस्र वर्ष पहले पाटलीपुत्र के नाम से प्रसिद्ध था, और जहां हज़रत मसीह से ३०० वर्ष पहिले मौर्य्य वंश के महाराजा चन्द्रगुप्त ने बड़े गौरव से शासन किया था। पूर्वीय बंगाल तथा आसाम का प्रान्त एक बार फिर तोड़ डाला गया, तथा उसका दक्षिण भाग, ढाके समेत प्राचीन बंगाल में मिला दिया गया है। आसाम एक चीफ़ कमिश्नर के आधीन पृथक् प्रान्त बनाया जाता है। लार्ड हार्डिञ्ज के शासन काल के भारत चित्र से यह सब प्रान्तिक परिवर्त्तन प्रगट हैं।

४—लार्ड हार्डिञ्ज ने श्रीमान् सम्राट की ओर से यह भी घोषणा की, कि "विक्टोरिया क्रास" जो कि रणक्षेत्र में सब से

अधिक शूरबीरता का सब से श्रेष्ठ पदक (तग़मा) है। आज से भारतीय तथा अंगरेज़ सैनिकों को, किसो भेद भाव के बिना समान रीति से प्रदान किया जाया करेगा। भारतबासियों ने जो इस

सम्राट पञ्चम जार्ज

अनुपम दर्बार में एक लाख के लगभग संख्या में विद्यमान थे श्रीमान् सम्राट को इस अवसर पर बड़े हर्ष से बधाई दी। अब तक दिल्ली में जितने दर्बार हुए हैं, यह शायद उन सब से बड़ा दर्बार था। बहुत से दर्शकों की आंखों, से तो आनन्द के वेग से

आंसू बहने लगे। वह लाखों मनुष्य जिन्हों ने दिल्ली, कलकत्ता तथा बम्बई में श्रीमान् सम्राट तथा श्रीमती सम्राज्ञी के दर्शन किये थे, अपनी आयु भर उस दिन को याद करेंगे, जिस दिन उन्हें अपने सम्राट तथा सम्राज्ञी के दर्शन नसीब हुए थे।

५—लार्ड हार्डिञ्ज जिन्हों ने भारत पर सन् १९१०–१९१६ ई० तक वाइसराय होकर शासन किया था एक सर्वप्रिय वाइसराय थे। उन्होंने एक कमीशन इस लिये स्थापित किया कि वह भारत भर में दौरा करके तथा लोगों की राय जान कर उन्हें यह समझावे कि सरकारी नौकरियों की अवस्था में उन्नति करने के लिये क्या साधन काम में लगने उचित हैं, तथा भारतीयों को उनमें अधिक भाग किस प्रकार दिया जा सकता है। उन्होंने भी भारत की दशा सुधारने के लिये यथासम्भव प्रयत्न किया, और बहुत सी नई पाठशालाएं और अस्पताल खोले। सड़कों की अवस्था सुधारी, तथा रेलवे लाइनें जारी कीं। उनके इस शुभकार्य्य में महायुद्ध विघ्नकारी हुआ, जो कि अगस्त सन् १९१४ ई० से आरम्भ हुआ। जब वह इङ्गलिस्तान लौट गये, तो सन् १९१६ ई० में लार्ड चेम्सफोर्ड इनके स्थान पर वाइसराय बनाये गये।

८६—महायुद्ध में भारत

(सन् १९१४ ई० से सन् १९१८ ई० तक)

१—यह महासमर संसार के इतिहास में अपनी उपमा नहीं रखता। इसमें तीन करोड़ से अधिक मनुष्य सम्मिलित थे; और दुनिया की प्रायः हर एक जाति ने इसमें भाग लिया था। एक ओर जर्मनी, आस्ट्रिया, टर्की और बलगारिया थे। इन्हें 'मध्य शक्तियां' कहा जाता था। दूसरी ओर इङ्गलैण्ड, फ्रान्स, इटली,

बेलजियम, ग्रीस, संयुक्त अमेरिका तथा कई अन्य लघु जातियां थीं। यह मित्र-दल के नाम से प्रसिद्ध थीं।

२—जर्मन चिरकाल से अंगरेज़ों तथा फ्रान्सीसियों से घृणा करते चले आये हैं। इन से वह ईर्षा करते थे, अतः चालीस वर्ष से वह युद्ध सम्बन्धी तैयारियों में लगे हुए थे। उनके पास लाखों सिपाहियों की एक बड़ी फौज, एक जबरदस्त जहाज़ी बेड़ा, सहस्रों बड़ी बड़ी तोपें, जिन में कई एक दुनिया भर में सब से बड़ी तोपें थीं; हर प्रकार का बे-हद सामान और कई सौ हवाई जहाज़ों का एक बेड़ा था। उन्होंने अपनी तैयारियों को ऐसा गुप्त रक्खा कि किसी को कानों कान भी पता न हुआ; वैसे देखने में उन्होंने अपना वर्ताव ऐसा मित्रवत् रक्खा कि अंगरेज़ों और फ्रान्सीसियों को यह कभी स्वप्न में भी ध्यान नहीं आया कि जर्मन उनके लहू के प्यासे शत्रु हैं।

३—जर्मनों की इच्छा यह थी कि पहले फ्रान्स पर आक्रमण करके उसकी राजधानी पैरिस पर अधिकार जमा लें, और फिर इङ्गलिस्तान पर चढ़ जाएं। प्रत्येक देश में उनके जासूसों के जत्थे के जत्थे विद्यमान थे। यहां तक कि भारत भी उनसे खाली न था। वह जानते थे, कि अंगरेजों की सेना कुछ अधिक नहीं, कारण यह कि वह एक बड़ी शान्तिप्रिय जाति है, और दूसरों को कष्ट पहुंचाना नहीं चाहती। जर्मनों ने सोचा था कि वह इङ्गलिस्तान को सहज में ही परास्त कर लेंगे। फिर उनका बिचार था कि समग्र यूरोप पर विजय पाएं, और उसके उपरान्त समस्त संसार को अपने बशीभूत करें। भारत भी उस ही में शामिल था। "जर्मनी सब का शिरोमणि" यह उनका मूलमन्त्र था। लड़ाई छिड़ते ही जर्मन कैसर अर्थात् जर्मन सम्राट ने खुल्लम खुल्ला यह डींग मारनी आरम्भ कर दी थी कि "मैं भारत-

बासियों पर खूब भारी भारी कर लगाऊंगा, और भारतीय राजकुमारों से बाज में बड़ी बड़ी रकमें वसूल करूंगा।" उसने यह भी कहा कि "जर्मनी भारत की लूट से माला माल हो जायगा।"

४—जब सब कुछ तैयार हो गया, तो आस्ट्रियावालों ने छोटे से देश सर्विया पर चढ़ाई कर दी। "जर्मनों ने एक और छोटे से देश बेलजियम में घुस कर फ्रान्स पर आक्रमण करना चाहा, और जर्मन जर्नलों ने कहा कि "हम दस दिन में पैरिस पहुंच जायंगे।"

५—किन्तु शाह बेलजियम ने इङ्गलिस्तान के बादशाह जार्ज से सहायता मांगी, और जर्मनों को दो मास तक अपनी सीमा पर रोक रक्खा। इतने में अंगरेज़ों को फ्रान्स की सहायता के लिये पहुंचने का अवसर मिल गया। किन्तु इस अवसर में बेलजियम मलियामेट हो गया। शूरवीर बेलजियमों ने अपनी बीरता दिखा कर मित्र जातियों को बचा लिया। उनके पास अपने छोटे से देश का केवल एक कोना रह गया, जो युद्ध की समाप्ति तक उनके बहादुर बादशाह और उसकी बची बचाई शूरबीर सेना के अधिकार में रहा।

६—अंगरेज़ी सेना बहुत छोटी सी थी। इसमें केवल दो लाख योधा थे। कैसर इसे "घृणा योग्य छोटी सी सेना" कहा करता था। किन्तु फिर भी इससे बीस गुणी जर्मन सेना अपनी आशा पूर्वक इसमें से गुज़र कर पैरीस तक न पहुंच सकी। बहुत कम अंगरेज़ योधा जीते रहे, किन्तु फिर भी वह फ्रान्सीसियों के बराबर रणक्षेत्र में डटे रहे, इतने में नई सहायक सेना भी पहुंच गई।

७—लर्ड किचनर, जो पहले भारतीय सेनाओं के सेनापति (कमाण्डर-इन्-चीफ़) थे, अब इंगलिस्तान की समस्त सेनाओं के सेनापति बनाये गये। वह जितनी जल्दी सेनाएं, तोपें, गोले,

तथा युद्ध का अन्य सामान तैयार करा सके, उन्होंने तैयार कराया, और उन्हें फ्रान्स भेजा। इस युद्ध की घोषणा होते ही समग्र बृतानी जाति ने हथियार उठा लिये। एक साल के अन्दर ही अन्दर असंख्य सुशिक्षित सिपाही रणक्षेत्र में पहुंच गये। इसके उपरान्त दस लाख और भेजे गये, और फिर एक और बहुत बड़ी सेना भेजी

गई। इससे बड़ी सेना बृतानिया में पहले कभी भरती नहीं हुई थी। किसानों ने अपने खेतों को, गड़ेरियों ने रेवड़ों को, क्लार्कों ने अपने दफ्तरों, दूकानों तथा बंकों को, मज़दूरों ने अपने वर्कशापों, तथा कारखानों को, और विद्यार्थियों ने अपने कालेजों और स्कूलों को छोड़ दिया। सारांश यह कि लाखों मनुष्य सत्रह साल के

नवयुवकों से लेकर ५० वर्ष के बूढ़ों तक सब अपना अपना साधारण कार्य्य छोड़ कर उन कैम्पों में जा पहुंचे जहां रणशिक्षा दी जाती थी, और वहां क़वायद तथा अन्य रण-विद्या सीख कर फ्रान्स के रणक्षेत्रों में जा डटे। धनी निर्धन प्रत्येक अवस्था के लोगों ने इसमें भाग लिया। रईसों, ड्यूकों, अर्लों और लार्डों के पुत्र, राजकुमार वेल्स तक सर्वसाधारण योधाओं के साथ सेनाओं में जाकर भरती हो गये। घरों पर और देशों में उनकी जगह उनकी स्त्रियों, माताओं, बहिनों तथा पुत्रियों ने काम किया। इंगलिस्तान की स्त्रियों ने अपने कोमल हाथों से खेतों में हल चलाये, फसल काटीं, दूकानों तथा दफ्तरों में काम किये, कार्य्यालयों तथा वर्कशापों में जाकर बन्दूकें ढालीं, बारूद बनाई, गोले तथा गोलियां तैयार कीं, और जिस वस्तु की आवश्यकता पड़ी वही पूरी की। सहस्रों रमणियां ज़खमी सिपाहियों की टहल सेवा तथा मलहम पट्टी करने के लिये इंगलिस्तान के अस्पतालों तथा फ्रान्स के फ़ौजी अस्पतालों में जा घुसीं, जो रणक्षेत्रों में कुछ दिनों के लिये डेरों में बनाये गये थे।

८—युद्ध की घोषणा होते ही बृटिश साम्राज्य के सभी उपनिवेशों कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, दक्षिण अफ्रिका आदि प्रदेशों ने योधाओं, धन तथा अन्य वस्तुओं से मातृभूमि की सहायता की।

९—भारत भी इस समय बृटिश साम्राज्य की सहायता के लिये सब प्रकार से उद्यत रहा। भारत के सात सौ राजकुमारों तथा राज्याधीशों में से प्रत्येक ने अपने आप को अपनी तलवार, अपनी सेना, तथा अपना कोष, सारांश यह कि सर्वस्व सम्राट की भेंट कर दिया। समग्र बृटिश भारत में सभाएं हुईं जिन में वक्तृता करनेवाले वक्ताओं ने उच्च स्वर से यह प्रगट किया, कि इस अवसर

पर हम साम्राज्य की सहायता तथा रक्षा के लिये सब प्रकार उद्यत हैं, और यथाशक्ति प्रयत्न करेंगे।

१०—बहुत से राजकुमारों तथा रईसों में से जिन्हों ने रणभूमि में जाने की आज्ञा मांगी थी, वाइसराय ने दस बड़े बड़े राज्याधीशों को और बहुत से छोटे रईसों को छांटा। इनमें जोधपूर, बीकानेर, पटियाला, रतलाम और किशनगढ़ के राज्याधीश शामिल थे। इन सब के नेता पूज्य वृद्ध राजपूत योधा महाराजा सर प्रतापसिंह जी थे, जो राजपूतों के राठौर वंश की शोभा हैं। उस समय उनकी आयु सत्तर वर्ष से अधिक थी। पहले तो वाइसराय आप को वृद्धावस्था के विचार से आप को रणक्षेत्र में भेजने को सहमत न थे, कि जब आपने चिल्ला कर कहा कि "ऐ! क्या युद्ध होनेवाला है, और मैं उसमें न जा सकूंगा? मैं अपने सम्राट के लिये लहू बहाने के विषय में अपना स्वत्व मांगता हूं। मुझे भेजो, माई लार्ड! मुझे युद्ध में भेजो। मैं इस विषय में किसी प्रकार का इन्कार न मानूंगा।" महाराजा सर प्रतापसिंह का यह आग्रह देख कर लार्ड हार्डिञ्ज ने आप को रण में जाने की आज्ञा दे दी। आप जोधपूर राज्य के संरक्षक हैं। पहिली लड़ाइयों में भी जो चितराल और तीराह में सीमावाली जातियों से हुई हैं, सरकार के साथ रहे। चीन में भी अपनी सेना जोधपुर लान्सर्ज़ के सेनापति बन कर गये थे। आप को मित्र सेनाओं का एक जनरल बनाया गया। आप के साथ आप के भतीजे जोधपुर नरेश भी थे। वह एक सोलह वर्ष के होनहार शूरबीर युवा हैं।

११—अन्य नरेशों में हैदराबाद, मैसूर, ग्वालियर, इन्दौर, बड़ौदा, काश्मीर के आधीशों तथा ख़ान क़ल्लात ने सेनाओं के लिये योधा, घोड़े, ऊंट, बन्दूक़ वा धन भेंट किया। राजा नैपाल तथा दलाई लामा तक ने भी, जो भारत की सीमा से बाहर के हैं,

मेजर जनरल सर प्रताप सिंह

अपने विश्वासी सहायक भारत सम्राट को सैनिकों तथा धन से सहायता दी।

१२—४ अगस्त सन् १९१४ ई० को युद्ध का घोषणा हुई, और सितम्बर वा अक्तूबर में बृटिश भारत की सेना के पहिले दो डिवीज़न अपने सेनापति सर जेम्स विल्कौक्स के आधोन फ्रान्स पहुंच गये। इसमें अंगरेज़ो वा भारतीय दोनों रेज़िमेंटों के योधा सम्मिलित थे। यह २४ सहस्त्र योधाओं की एक प्रभावशाली छोटी सी सेना थी। किन्तु इसका प्रत्येक जवान एक शूरबीर योधा था। भारतीय दल में पश्चिमोत्तर भारत की योधा जाति के छोटे छोटे योधा थे। बीर राजपूत, शूर्मा सिक्ख, लम्बे तड़ेंगे, सुन्दर पंजाबी मुसलमान, हंसमुख बौने गोरखे, तथा गढ़वाली बिशाल कायी डोगरे, तथा परिश्रमी जाट, सब इस सेना की शोभा बढ़ाते थे। अंगरेज़ सिपाही तथा भारतीय सब एक दूसरे के साथी तथा हथियारबन्द भाई थे। सब बराबर बराबर अपनी बीरता दिखाने के लिये, और यदि आवश्यक हो तो अपने देश तथा सम्राट के लिये लड़ कर प्राण देने के लिये बेचैन थे। यद्यपि उनका एक भयानक शत्रु से सामना था, किन्तु इसकी उनमें से किसी को भी चिन्ता न थी।

१३—ऐसे शत्रुओं का भारती योधाओं क सामना करना था। पहिले युद्ध जिन में इन्होंने भाग लिया था, वह इस भयानक युद्ध के सामने बालकों के खेल से अधिक न थे। इससे पहिली लड़ाइयों में लोग जल वा स्थल पर युद्ध करते थे, किन्तु इस युद्ध में लोग केवल जल पर ही नहीं लड़े, वरन् समुद्रतल से नीचे भी, अर्थात् ऐसे जहाज़ों में बैठ कर जो पानी के नीचे जाकर मछलियों के समान चलते फिरते हैं और समुद्र के ऊपर वायुमण्डल में पक्षियों के समान उड़ते हैं।

१४—स्थल पर भी खाइयों, धरती के नीचे सुरंगों में और पृथ्वी से सहस्रों फ़ीट ऊपर हवाई जहाज़ों में लड़ाई होती थी, जो रेल से भी तेज़ चलते थे। बहुधा शत्रु दिखाई भी न देता था। वह सामने मीलों दूर होता था, और किसी ऐसे स्थान से गोला फेंकता था जो दिखाई ही न देता था, अथवा ऊपर आकाश
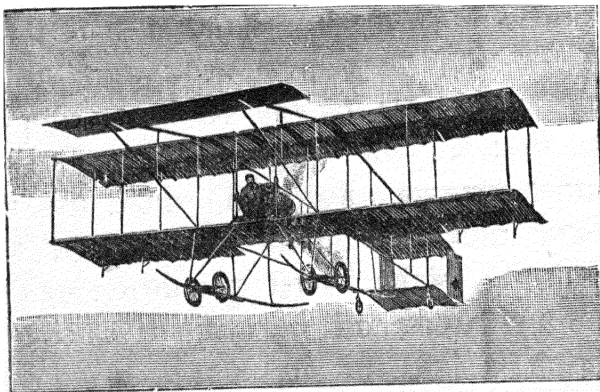
हवाई जहाज़

पर सब से ऊंचे बादलों में से नीचे पड़ी हुई सेनाओं पर बम्ब के गोले बरसाता था। इस युद्ध में भारती सेनाओं को जो जो कठिनाइयां झेलनी पड़ीं वह पहिले कभी नहीं पड़ी थीं। वह एक विदेश, फ्रान्स में पड़े थे, जहां के मौसम तथा निवासी और उनके रहन सहन के ढंग भारतीयों के लिये बिल्कुल अजीब थे। उत्तरी शीतकाल का शीत, बरफ़ बरसना, बर्षा, हिम, दलदल सभी महा भयानक थी; वह उस देश के निवासियों की भाषा भी नहीं बोल सकते थे, किन्तु, इस पर भी उनके दिल सब प्रकार के भय तथा शंका से ख़ाली थे।

१५—जब सर प्रतापसिंह के लेपालक पुत्र ईदर के राजा से एक अंगरेज़ अफ़सर ने फ्रान्स में पूछा कि क्या तुम जानते हो कि इस युद्ध का कारण क्या है? तो उन्होंने उत्तर दिया "हां! यह धर्म्मयुद्ध है। भारत अपना कर्तव्य पालन करना चाहता है। वह अपने कर्तव्य को भलीभांति जानता है। यह कर्तव्य अंगरेज़ योधाओं के साथ साथ सम्राट के लिये लड़ना है। इसके लिये भारत की प्रशंसा करने की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। कारण यह कि कर्तव्य पालन सब से बड़ा सम्मान है। हमें इसका अभिमान है, कि सम्राट ने हमें इस युद्ध में अपनी सहायता में लड़ने के लिये याद किया है। हम जो यहां आये हैं बड़े प्रसन्न हैं, और जो नहीं आये, वहीं रह गये हैं, वह दुखी और निराश हैं। उनके दिल टूट गये हैं; इस कारण से, कि "हमें भी यह अवसर क्यों नहीं मिला"। हम, हमारे जवान, हमारी तलवारें हमारे कोष, सारांश यह कि हमारा सर्वस्व सम्राट का है। हमारे मरने के लिये इस समय एक महा गौरवयुक्त अवसर है। एक न्याय अनुकूल और पवित्र कर्म्म की सहायता में लड़ते हुए प्राण त्यागना बड़ा शानदार है। युद्ध में लड़ते हुए मरना मृत्यु नहीं वरन् अमर पद प्राप्त करना है। कारण यह कि इस मृत्यु से ही हमारा नाम सदा के लिये जीवित रह सकता है।"

१६—इस संक्षिप्त सी पुस्तक में फ्रान्स के महायुद्ध का पूरा पूरा वृत्तान्त नहीं लिखा जा सकता, जिस में भारतीय सेनाओं ने भाग लेकर अपने साहस तथा वीरता के ऐसे ऐसे प्रभावशाली कार्य्य किये हैं जो संसार में सदा याद रहेंगे। रणक्षेत्र में वीरता के लिये सब से बड़ा पदक "विक्टोरिया क्रास" है जो अब तक केवल अंगरेज़ सिपाहियों को दिया जाता था, किन्तु इस युद्ध में भारतवासियों को भी दिया गया है। इस युद्ध में अब तक

खुदादाद खां, सिपाही बी. सी. १२९ बलूची

(अक्तूबर सन् १६१८ ई० तक) दस भारतबासियों ने यह उच्चतम मान प्राप्त किया है।

१७—पहिला भारती जिसने विक्टोरिया क्रास प्राप्त किया, एक पंजाबी मुसलमान सैनिक था। उसका नाम खुदादाद था। अपनी कम्पनी में वही एक अकेला मनुष्य था, जो ३१ अक्तूबर सन् १६१४ ई० की एक भयानक लड़ाई में जीवित बचा था, नहीं तो उसके सब साथी युद्ध में काम आ गये थे। वह भी बड़ा ज़ख़मी हुआ था, और शत्रु उसे मृत समझ कर रणक्षेत्र में छोड़ गये थे। किन्तु सावधान होने पर रात को वह धीरे धीरे अपने कैम्प में आ गया।

१८—दूसरा योधा जिसने विक्टोरिया क्रास का सर्वोत्तम सम्मान प्राप्त किया है, एक गढ़वाली हिन्दू है, जो हिमालय पर्वत का निवासी है। उसका नाम नायक दरवान सिंह नेगी है। २७ नवम्बर सन् १६१४ ई० के एक युद्ध में २१ दिन को लगातार लड़ाई के पीछे जब उसके सभी अंगरेज़ अफ़सर एक एक करके कम्पनी की कमान करते हुए काम आ चुके तो यद्यपि वह सख़्त ज़ख़मी था, किन्तु उसने आधी रात के समय अपनी कम्पनी के शेष योधाओं की कमान अपने हाथ में लेकर शत्रु पर आक्रमण करके उसे परास्त किया। उसकी बहुत सी तोपें छीन लीं, और अपने योधाओं को, जो इस भयंकर युद्ध में काम आने से शेष रह गये थे, रक्षापूर्वक अपने कैम्प में वापिस ले आया।

१६—सन् १६१५ ई० में अर्थात् युद्ध के दूसरे वर्ष भारतीय सेनाएं जो फ्रान्स में गौरवयुक्त कार्य्य कर चुकी थीं, अन्य देशों में भेज दी गईं ; जहां तुर्कों के साथ युद्ध हो रहा था। जिन की संख्या उस समय बहुत अधिक थी। युद्ध के चार वर्ष में भारत से अंगरेज़ तथा भारतीय पांच लाख योधा गेलीपोली, टर्की, मिश्र, अरब, मेसोपोटेमिया, पूर्व तथा पश्चिम अफ्रिका में अपनी बीरता

दिखाने के लिये भेजे गये। प्रत्येक देश में वह अपने अंगरेज़ साथियों के बराबर अपनी वीरता तथा साहस प्रगट करके प्रसिद्ध और सम्मान पाते रहे।

नायक दर्वान सिंह नेगी

२०—लार्ड चेम्सफोर्ड सन् १९१६ ई० में वाइसराय होकर भारत में पधारे। इनका सब से महान् कार्य्य अन्य देशों में सेनाओं के लिये योधा तथा सामान भेजना था। किन्तु इस भयानक विस्तृत युद्ध के दिनों में भी सुधारों को न भूले। सन् १९१९ ई० में जब कि यह वृत्तान्त लिखा जा रहा है कि भारत मन्त्री मिः मांटेगू भारत में पधारे और ६ मास तक यहां रहे। आप ने प्रायः सब बड़े बड़े नगरों का दौरा किया, और

सैकड़ों भारतीय नेताओं तथा राज्याधीशों से भेंट वा बार्तालाप की। आप यह जानने के लिये पधारे थे कि भारतबासियों को अपने देश के शासन में अधिक भाग देने तथा और ज़िला बोर्डों म्युनिसिपल बोर्डों में निर्वाचित सदस्यों की संख्या बढ़ाने और इन कान्सिलों को वर्त्तमान काल की अपेक्षा अधिक अधिकार प्रदान करने के बिषय में क्या अन्य साधन प्रयोग करने उचित हैं। इससे पूर्व कभी कोई भारत मन्त्री भारत में नहीं पधारे थे। मिः मांटेगू तथा लार्ड चेम्सफोर्ड ने इस बिषय में अपनी रिपोर्ट पार्लीमेण्ट के सामने रखने के लिये भेज दी।

लार्ड चेमस्फोर्ड

२१—"इम्पीरियल बार कैबिनेट" में जो युद्ध काल में बृटिश साम्राज्य के कार्य्यों का प्रबन्ध करने के लिये स्थापित हुई जिसमें भारत की ओर से दो भारती सदस्य भी लिये गये। यह महाराजा बीकानेर और सर एस, पी, सिन्हा थे; जो इङ्गलिस्तान के महा-मन्त्री और अन्य आठ साम्राज्य-मन्त्रियों तथा बृतानिया साम्राज्य के उपनिवेशों कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैण्ड, दक्षिण आफ़्रिका न्यूफ़ौण्डलैण्ड के सदस्यों के बराबर कौन्सिल में बैठते थे। बृटिश इण्डिया के नवीन राज्य-प्रणाली के अनुसार लार्ड सिन्हा बिहार और उड़ीसा के गवर्नर नियुक्त किये गये। यह पहले भारत बासी थे जो बृटिश राज्य में एक सूबे के शासनकर्त्ता बनाये गये थे।

२२—आख़िरकार सन् १९१८ ई० के नवम्बर मास में यह महायुद्ध समाप्त हुआ। जर्मन और उनके साथी हार गये। और सन्धि के प्रार्थी हुए। उनके कैसर ने अपने राज्य को छोड़ कर युद्ध से पृथक हालैण्ड देश में शरण ली। जहां कि वह सब प्रकार से सुरक्षित था। ११ नवम्बर सन् १९१८ ई० को दोनों पक्षों ने सामयिक सन्धि को स्वीकार कर लिया। अर्थात् सन्धि की अन्तिम घोषणा होने तक युद्ध बन्द कर दिया गया। जर्मनों ने अपनी सेनाएँ भंग कर दीं। और अपने युद्ध के जहाज़, तोपें, तथा सारे देश जिन पर उन्होंने अधिकार जमाया था, विजेताओं को दे दिया। इस समय (अप्रैल सन् १९१९ ई० में) सर्व मित्र-शक्तियों की एक सभा पैरिस में हुई ताकि अन्तिम सन्धि की शर्तें नियत की जायं। और यह निर्णय किया जाय कि जर्मनी को उसके अपराधों का क्या दण्ड मिलना चाहिये।

लार्ड सिन्हा

२३—सन् १९१९ ई० के आरम्भ में सर एस. पी. सिन्हा को इंगलैण्ड के लार्ड बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। और सिन्हा महोदय पार्लिमेण्ट की लार्ड सभा (House of Lords) में लार्ड सिन्हा आफ़ रायपुर के रूप में सम्मिलित हुए। ये पहले ही भारतीय थे जिन्हें यह उच्च पदवी मिली। साथ ही लार्ड सिन्हा सहायक भारत मन्त्री नियत हुए। यह उच्च पद इससे

पहिले किसी भारतीय को नहीं मिला था। इससे प्रतीत होता है कि बृटिश सरकार की कैसी प्रबल इच्छा है कि भारतवासियों को उनके देश के राज्य शासन में उचित अधिकार मिलें।

लार्ड अर्विन

२४—अप्रैल सन् १९२१ ई० में लार्ड चेम्सफोर्ड अपनी हुकूमत का समय खतम होने पर इंगलिस्तान वापस चले गये। और उनकी जगह पर लार्ड रीडिंग वाइसराय नियुक्त हुए। आप इंगलिस्तान के लार्ड चीफ़ जस्टिस थे और हिन्दुस्तान के नई शासन पद्धति के अनुसार शासन करने के पूर्ण योग्य थे। आप की जगह पर सन् १९२७ ई० में लार्ड अर्विन भारत के वाइसराय नियुक्त हुए।

८७—भारत की नई शासन पद्धति

१—हम यह पढ़ चुके हैं कि सन् १८५८ ई० से अर्थात् जब से इस देश का शासन ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ से निकल कर श्रीमती महारानी विक्टोरिया के अधिकार में आया तब से क्रमशः परन्तु निरन्तर सुधार होता रहा है। समय समय पर क़ानून बनते रहे हैं। पहिले भारतवासी, क़ानून और नियम के बनाने में सहायता तथा सलाह देने के लिये नियुक्त हुए फिर धीरे धीरे देश के मुख्य शासन में भाग लेने लगे।

२—हम देख चुके हैं कि पहिले पहिल सन् १९०९ ई० में वाइसराय और सूबों की कार्य्यकारिणी सभा में भारतीय सदस्य नियुक्त हुए। कार्य्यकारिणी सभा के सदस्य बन कर उन्होंने सिद्ध कर दिया कि भारतबासी न्याय और राजनीति अर्थात् शासन में सहायता करने के योग्य हैं।

३—८ वर्ष बीत जाने पर श्रीमान् सम्राट और उनके मन्त्रियों ने सोचा कि भारतबासियों को, कानून बनाने तथा शासन में और अधिक अधिकार देने का समय आ गया है। जिस में वे शासन में केवल सहायता ही न कर बल्कि वास्तविक शासन करें उन्होंने निश्चय किया कि इस नीति को कार्य्य में परिणत करने के लिये नये कानून बनाये जावें, ताकि अन्त में भारतबासी हिन्दुस्तान का शासन उसी प्रकार करें जिस प्रकार इंगलैण्डवाले इंगलैण्ड का शासन करते हैं।

४—उसके अनुसार भारत के सेक्रेटरी ने पार्लिमेण्ट में यह घोषणा की कि बृटिश राज्य की यह कामना है कि जहां तक शीघ्र हो सके भारतवर्ष के प्रत्येक शासन विभाग के उच्चतर पदों पर यथा सम्भव अधिक भारतवासी नियुक्त किये जावें। फिर धीरे धीरे समस्त बृटिश भारत को बृटिश आधीनस्थ देशों की तरह स्वराज्य दे दिया जाय (अर्थात् भारतबासी ही भारत का शासन करें) मंत्री ने यह भी कहा कि एक साथ ही ऐसा न हो सकेगा किन्तु क्रमानुसार—और यह बात बृटिश राज्य पर छोड़ दी जावे कि वह इस उद्देश्य पर दृष्टि रखते हुए समय और क्रम को निर्धारित करे—और यह बात उन लोगों के कार्य्य सञ्चालन के ढंग पर निर्भर है जिनको इस शासन का अधिकार दिया जायगा उनका कार्य्य जितना ही उत्तम होगा उसी के अनुसार बृटिश भारत को स्वराज्य मिलने में शीघ्रता होगी।

५—अध्याय ८३ में बतलाया जा चुका है कि भारत मंत्री मिस्टर मान्टेगू भारतवर्ष में आये और ६ मास तक यहां रहे उन्होंने वाइसराय लार्ड चेम्सफोर्ड को साथ लेकर भारत के अनेक भागों में भ्रमण किया सैकड़ों प्रसिद्ध भारतीय और अंगरेज़ों से मिले और उनकी प्रार्थनायें सुनीं।

६—इसके पश्चात् उन्होंने भारत को नई शासनप्रणाली के बारे में रिपोर्ट लिखी—पार्लिमेन्ट ने बड़ी सावधानी से इस पर बिचार किया उस रिपोर्ट ने वहां से पास होकर और सम्राट द्वारा स्वीकृत होकर पार्लिमेन्ट तथा देश के एक क़ानून का रूप धारण किया और यह सन् १९१९ का भारत सरकार का ऐक्ट् कहलाया और यह सन् १९०९ ईस्वी के ऐक्ट् के ठीक १० वर्ष पीछे बना।

७—चूंकि पार्लियामेन्ट ने यह घोषित कर दिया है कि जब भारतबासी शासन करने के योग्य हो जावें तो भारतबर्ष का शासन उन्हें सुपुर्द कर दिया जाय, इस हेतु इस क़ानून का यह उद्देश्य है कि भारतबासियों को इस महत कार्य्य के लिये इस प्रकार तय्यार किया जाय कि पहले उनको आठ बड़े सूबों के वास्तविक शासन के एक भाग का अधिकार दिया जाय। उन सूबों के नाम, मद्रास, बंगाल, बम्बई, संयुक्तप्रान्त, बिहार, उड़ीसा, पंजाब, मध्यप्रदेश और आसाम हैं। चूंकि यह सब सूबे गवरनर के आधीन होंगे। इस हेतु ये गवरनर के सूबे कहलायेंगे जब यह ठीक ठीक सिद्ध हो जायगा कि भारतबासी सूबों का वास्तविक शासन भली भांति कर सकते हैं तब अधिक अधिक शासन का अधिकार उनको दिया जायगा और अन्त में वे सब अधिकार पा जायेंगे और सूबों का पूर्ण शासन भारतबासियों ही द्वारा होगा।

८—प्रत्येक बड़े सूबे में पहिले दो या अधिक भारतीय शासन के

कुछ विभागों का कार्य्य सम्पादन करेंगे वे मंत्री कहलायेंगे गवरनर व्यवस्थापक सभा के निर्वाचित सदस्यों में से मंत्रियों को चुनेंगे।

९—इस प्रकार गवरनर सूबे के प्रधान शासक रहेंगे उनके आधीन एक तो अधिक से अधिक ४ सदस्यों की कार्य्यकारिणी समिति होगी जिसके आधे सदस्य भारतीय होंगे यह समिति शासन के एक भाग के कार्य्यों का सञ्चालन करेगी—दूसरे हिन्दुस्तानी मंत्री होंगे जो शेष भाग के कार्य्यों का सञ्चालन करेंगे।

१०—प्रत्येक सूबे में कानून और नियम बनाने के लिये एक व्यवस्थापक सभा होगी जो पहिले की व्यवस्थापक सभा से कहीं बड़ी होगी और उस के अधिकांश सदस्य सूबे के निवासियों द्वारा निर्वाचित होंगे। शेष गवरनर द्वारा नामज़द होंगे—सब सूबों के सदस्यों की संख्या समान न होगी—बड़े सूबों के सदस्य अधिक और छोटे सूबों के सदस्य कम होंगे—सब प्रान्तों के निर्वाचित सदस्यों की संख्या ७७६ होगी ३ वर्ष के पश्चात् यह सभा नई हो जाया करेगी।

११—प्रान्तीय व्यवस्थापक सभा के सदस्यों को प्रान्त के निवासी ही वोट द्वारा निर्वाचित करेंगे—सब लोगों को वोट देने का अधिकार नहीं। वोट देनेवालों में कुछ विशेष बातें होनी चाहियें। उनमें मुख्य बात यह है कि वोट देनेवाला एक निश्चित धन लगान, आयकर तथा स्थानीय कर के रूप में देता हो इस समय केवल पुरुष ही वोट दे सकते हैं इंगलैंड की तरह यहां पर स्त्रियों को वोट देने का अधिकार नहीं, परन्तु यदि प्रान्तिक सरकार चाहे तो स्त्रियों को भी वोट देने का अधिकार दे सकती है। आठों सूबों के वोटरों की संख्या साढ़े बावन लाख के लगभग है। किसी पर वोट देने के लिये दबाव नहीं डाला जाता। जो लोग चाहें वेही वोट दे सकते हैं। इंगलैण्ड में बहुत से पुरुष और स्त्री ऐसे हैं जो अगर चाहें तो

वोट दे सकते हैं परन्तु वे देते ही नहीं। किसी व्यक्ति को वोट देने के लिये रुपया लेना उचित नहीं। किन्तु जिस पर उसका यह विश्वास हो कि अमुक व्यक्ति सदस्य का कार्य्य भलो भांति कर सकता है उसके लिये ईमानदारी के साथ वोट दें यदि वह अयोग्य निकले तो फिर उसको वोट न देवें; किन्तु किसी दूसरे पुरुष को वोट दें जो उससे अच्छा हो। नियमानुसार तीन वर्ष के पश्चात् नया चुनाव हुआ करेगा।

१२—प्रान्तिक सरकार केवल उन्हीं कार्य्यों का सञ्चालन करेगी जिनका सम्बन्ध सूबे से ही होगा अर्थात् लगान की वसूली, कालिज और पाठशाला में तालाब और नहरें, अस्पताल और डाक्टर, औषधालय, सड़कें और पुल; लाइट रेलवे, जंगलात, पुलिस कारागृह, न्यायालय और निर्वाचन इत्यादि।

१३—परन्तु कुछ कार्य्य ऐसे हैं जो समस्त भारत से सम्बन्ध रखते हैं किसो एक सूबे से ही नहीं। उनका सञ्चालन भारत सरकार अर्थात् वाइसराय और उनकी कौन्सिल द्वारा होगा। उनकी सभाओं के नाम कार्य्यकारिणी सभा, व्यवस्थापक सभा, राष्ट्र सभा, नरेन्द्र मण्डल और प्रोवीकौन्सिल हैं।

१४—वाइसराय अपनी कार्य्यकारिणी सभा की सहायता से जिस में तीन भारतोय सदस्य भी हैं उन कार्य्यों का सञ्चालन करते है जिनका सम्बन्ध समस्त भारत-राष्ट्र से है उन विषयों में सब से मुख्य और महत्व का बिषय भारत रक्षा अर्थात् सेना का प्रबन्ध हैं—पाठ ५७ में यह स्पष्ट दर्शाया गया है कि भारतवष ऐसे बिस्तीर्ण भूखण्ड में यदि शान्ति और सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करना हो तो एक बहुत उत्तम शक्तिशाली और मध्यस्थ सरकार का होना आवश्यक है जो समस्त देश में शान्ति रख सके और देश को बाहरी शत्रुओं से बचावे। यह काम केवल वही

सरकार कर सकती है जिसके पास एक ऐसी सबल सेना हो जो हर प्रकार सन्तुष्ट, अच्छे अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हो जिस के अफसर योग्य और चतुर हों और जिसके सेनापति लोग बड़े बुद्धिमान हों। इस हेतु भारत रक्षा का भार भारत सरकार पर होगा, जिसके प्रधान, इंगलैण्ड के अधिपति और भारत के महाराजाधिराज के प्रतिनिधि स्वरूप, वाइसराय हैं। भारत सरकार का मुख्य कर्तव्य भारत में शान्ति रखना, देश में रक्तपात रोकना और देश को बाहरी शत्रुओं के थल, जल तथा गगन मार्ग के आक्रमणों से बचाना है।

१५—इस हेतु थलसेना, नौ सेना और नभसेना का प्रबन्ध, बड़ी बड़ी रेलवे, समस्त भारत में फैले हुए तार और डाकघर, व्यापार और जहाज़ी बेड़े, देश में आनेवाली और बाहर जानेवाली वस्तुओं का कर, रक्षित राज्य तथा बिदेशी राज्य से लिखा पढ़ी का कार्य्य भारत सरकार जिसके प्रधान वाइसराय हैं, अपने हाथ में रखती है।

१६—वाइसराय की व्यवस्थापक सभा जिस को अब लेजिस लेटिव एसेम्बली कहते हैं पहले की अपेक्षा बहुत बड़ी हो गई है इसमें १४४ सदस्य हैं जिसमें १०० से अधिक अर्थात् दो तिहाई से अधिक सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होंगे। शेष प्रान्तीय व्यवस्थापक सभा को तरह वाइसराय द्वारा नामज़द होंगे। ये सदस्य समस्त भारत के लिये दीवानी और फौजदारी के कानून बनायेंगे।

१७—राष्ट्र सभा (कौन्सिल आव स्टेट) यह वाइसराय की तीसरी सभा है इस में ६० सदस्य होंगे, जिस में ३३ अर्थात् आधे से अधिक जनता द्वारा निर्वाचित होंगे, और शेष वाइसराय द्वारा नामज़द होंगे। सभी कानून जो व्यवस्थापक सभा बनायेगी देश में जारी होने से पहिले राष्ट्र सभा द्वारा पास होने चाहिये

और वाइसराय द्वारा स्वीकृत होने चाहिये' हर पांचवें वर्ष यह कौन्सिल नई हो जाया करेगी।

१८—प्रीवीकौन्सिल के मेम्बरों को श्रीमान् सम्राट जन्म भर के लिये नियुक्त करेंगे। जो लोग बृटिश भारत तथा रक्षित राज्यों के उच्चतर पदों पर रहे होंगे वही इसके सदस्य बन सकेंगे। यह लोग वाइसराय को शासन सम्बन्धी ऐसे विषयों में परामर्श देंगे जिन में वाइसराय उनके परामर्श की आवश्यकता समझते हों। इसके मेम्बरों को जीवन भर के लिये आनरेबुल की उपाधि मिलेगी। इसी प्रकार की एक कौन्सिल इंगलैण्ड में है जिस में राइट आनरेबुल सय्यद अमीर अली एक भारतीय सदस्य हैं।

१९—नरेन्द्र मण्डल—यह नये नियम, जिनका वर्णन अभी हुआ है, केवल बृटिश भारत से ही सम्बन्ध रक्षित राज्यों से जहां भारतीय राजा अपनी इच्छानुसार राज्य करते हैं कुछ लगाव नहीं। श्रीमान् सम्राट उनके महाराज अवश्य हैं परन्तु वे लोग स्वतन्त्र शासक हैं। उनकी मर्य्यादा बढ़ाने के लिये वाइसराय साल में उनकी एक सभा करेंगे। और समस्त भारत और देशी राज्य सम्बन्धी जिस विषय पर चाहेंगे उनसे परामर्श लेंगे जो इनके लिये बड़े ही महत्व का होगा।

जय जय जय श्री जार्ज नरेश।
रक्षक तुम्हारे रहें महेश॥
चिरंजीव बिजयी नित रहो।
प्रभु छाया में सब सुख लहो॥
यश कीर्त्ति हो अटल तुम्हारी।
जग में चहुं दिश रहे बिस्तारी॥
पूर्ण करो भारत के काजा।
जय जय जय जय जय महाराजा। इति॥

(व) १—ग्रेट ब्रिटेन के साम्राज्य में भारतवर्ष की उन्नति

(१) अंगरेज़ी शासन के मुख्य उद्देश्य

१—हम ऊपर लिख चुके हैं कि इस लम्बे चौड़े भारतवर्ष में अनेक देश हैं और उनमें भिन्न भिन्न धर्म और मत की अनगिनत जातियां रहती हैं; जैसे हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पारसी और ईसाई। प्रत्येक जाति के आचार व्यवहार रीति रस्म भिन्न हैं पर सब के सब एक दूसरे के पास सुख चैन से रहते हैं। इसका क्या कारण है? हमारी गवर्नमेण्ट की कौन सी रीति है और किन नियमों से बंधी हुई है?

२—अब धर्म में पूरी स्वतन्त्रता है। भारतवर्ष का कोई रहनेवाला हो अपनी जाति और धर्म के आचार पर चल सकता है। इसमें सन्देह नहीं कि दूसरे धर्म को बुरा भला नहीं कह सकता। जिसका जहां जी चाहे मसजिद में नमाज़ पढ़े, मन्दिर में पूजा करे या गिरजे में दुआ करे। धर्म बदलना चाहे तो भी कोई रोक टोक नहीं है और न धर्म के कारण किसी को सताना या उस पर कोई कड़ाई करना उचित है।

३—परन्तु धर्म की ओट में किसी को अपराध करने का अधिकार नहीं। न कोई अपने निरपराध बच्चे को गंगा में डुबा सकता है, न किसी निरपराध लड़की को मार सकता है; न किसी देवी, देवता पर आदमी बलिदान चढ़ा सकता है। न कोई विधवा सती होकर अपने पति की चिता पर जलाई जा सकती है। अगले समय में इन बातों का बहुत प्रचार था अब यह सब अपराध बन्द कर दिये गये हैं। और इनके लिये कड़ा

दण्ड दिया जाता है। ऐसे ही न कोई दास रख सकता है न उसको मार पीट सकता या कोई दुःख दे सकता है न उसको मोल ले सकता या न दे सकता है क्योंकि बरसों से ब्रिटिश राज्य में दासों का क्रय बिक्रय सरकारी आज्ञा से बन्द कर दिया गया है।

४—अब सब के लिये एकसा क़ानून है; सबके अधिकार बराबर हैं फौज़दारी का जाबता एक ही है जो छाप कर प्रकाशित कर दिया जाता है और सब लोग उसे जान जाते हैं। सब अच्छी तरह जानते हैं कि हमको किन कामों के करने का अधिकार है किन का नहीं। उस क़ानून में एक एक अपराध के लक्षण स्पष्ट दिये हैं और उस अपराध करने का दण्ड भी लिखा है। न हिन्दुओं के लिये कोई और क़ानून हैं न मुसलमानों और ईसाइयों के लिये। क़ानून के बिरुद्ध काम करनेवाला कोई हो दण्ड पाता है। किसी की छोटाई बड़ाई देखी नहीं जाती। क़ानून में कंगाल धनी सब एक से हैं। सब के साथ एक सा बर्त्ताव है और बिरुद्ध चलनेवाले के लिये दंड भी एक ही है।

५—पर दीवानी और धर्म के बिषयों में और बरासत के बारे में हिन्दुओं के लिये धर्मशास्त्र और मुसलमानों के लिये शरह महम्मदी पर बिचार होता है। जाति पांति के बिरुद्ध कोई नियम नहीं। हिन्दू शास्त्र और पुराणों के अनुसार अपनी कड़ी से कड़ी रीतियों को मान सकते हैं और मुसलमान उन कायदों पर चल सकते हैं जो कुरान और हदीस में लिखे हैं।

६—परन्तु क़ानून की दृष्टि में सब लोग बराबर हैं, ब्राह्मणों पर भी क़ानून की पाबन्दी वैसीही बाध्य है जैसी शूद्रों पर। धनी और कुली दोनों क़ानून की एक शृंखला में बंधे हैं। ऊँची जाति का कोई आदमी अपराध करे तो उसे भी दण्ड मिलता है।

१८१७ ई० से अंगरेज़ी इलाक़ में यही क़ानून जारी है। मनु के धर्मशास्त्र के अनुसार ब्राह्मण को किसी अपराध में प्राणदण्ड नहीं मिलता, उसका अपराध कितना ही बड़ा क्यों न हो।

७—जैसी धर्म के बिषय में स्वतन्त्रता है वैसी ही खाने पीने में भी है। कपड़ा पहनने और रहन सहन की रीति में जिसका जो जी चाहे कर सकता है। जिसका जो चाहे घोड़े पर चढ़े चाहे हाथी पर, गाड़ी में जाय या पैदल छाता लगाये या न लगाये। पगड़ी बाँधे या टोपी दे। टोपी देशी हो या अंगरेज़ी कोई रोक टोक नहीं है, झोंपड़ी में रहे या महल में, रेशमी कपड़ा पहिने या सूती। कोई किसी को मना नहीं कर सकता। ऐसे ही जिसका जैसा जो चाहै रोटी कमाय। बाप ने जो धन्धा किया वही करना आवश्यक नहीं है। भारत में ऐसी स्वतन्त्रता कभी न थी।

८—हमारी सरकार केवल जाति पांति, रीति रसम ही मानने की आज्ञा नहीं देती। पुराने स्मारक और प्राचीन काल के घरों स्तम्भगारों की पूरी रक्षा करती है। भारत को बहुत सी पुरानी सुन्दर इमारतें, जैसे मन्दिर, मसजिद, मक़बरे, खम्भे, फाटक और मेहराबें खड़ी हैं। इनमें बहुतेरे टूटते फूटते जाते थे क्योंकि कोई उनकी पूछ ताछ न करता था। इनके बनानेवाले संसार से सिधार गये। सूर्य की तपन, बर्षा, आंधी, बवंडर इस देश में लगे ही रहते हैं; इन्हें बड़े वेग से नष्ट कर रहे थे। अब सरकार ने एक महकमा इस अभिप्राय से बनाया है कि पुरानी इमारतों की मरम्मत कराता रहे, और जहां तक हो सके इनको मूल रूप में बनाये रक्खे। एक ही बरस में इस काम में सात लाख रुपया खर्च हुआ है। इस महकमे का नाम प्राचीन स्तम्भ रक्षा का महकमा है।

(२) शान्ति और उसके लाभ

१—हर देश के लिये सब से बड़ा लाभ शान्ति है और सब से बड़ी हानिकारक लड़ाई है। लड़ाई से बिना परिमाण दुःख होता है। बहुत से आदमी मारे जाते हैं। केवल वही सिपाही नहीं मरते जो सेना में भरती होकर लड़ कर अपने प्राण देते हैं। बहुत सी शान्ति चाहनेवाली प्रजा उनकी स्त्रियां और बच्चे भी नष्ट होते हैं।

२—लड़ाई के दिनों में जब सेनायें इधर उधर कूच करती हैं खेत बे जोते पड़े रहते हैं; क्योंकि किसान खेतों में जाने से डरते हैं। इसी कारण फसलें नहीं हो सकतीं, अकाल पड़ जाता है और बहुतेरे आदमी भूखों मर जाते हैं। जब लोगों को खाने को नहीं मिलता तो यह जड़ें घास या और जो कुछ मिलता है खा लेते हैं। हैजा और बहुत से बुरे रोग फैल जाते हैं और बहुत से आदमी बीमारी से मर जाते हैं।

३—कभी कभी ऐसा भी होता है कि जब किसी देश में सिपाही पहुंचते हैं तो वह लोगों को लूट लेते हैं और जो कुछ साथ ले जा सकते हैं ले जाते हैं ऐसा कई बार हुआ है।

४—यों तो भारतवर्ष में बहुत सी लड़ाइयां हो चुकी हैं जिनमें लाखों जानें गई हैं। पर भारत के और सब प्रान्तों से अधिक पंजाब पर आफत आई है। उत्तर के चढ़ाई करनेवालों की सेनायें कितने ही बार पंजाब में आईं जिनका व्योरा तुम इतिहास में पढ़ चुके हो। तुम जानते हो कि अफ़ग़ान और ईरानी, ग़ज़नवी और ग़ोरी, तुर्क, तातारी, महमूद ग़ज़नवी और तैमूरलंग, नादिर शाह और अहमद शाह अबदाली और और चढ़ाई करनेवालों ने कैसे देश नष्ट किये; अनगिनत भारतबासियों को मार डाला

और मालदार नगरों में से बहुतसा माल और रुपया ले गये। इसी भांति दिल्ली नगर कई बार लूटा गया।

५—केवल बाहर के चढ़ाई करनेवालों ने ही लड़ाई की आग न भड़काई थी। भारत के राजा और बादशाह भी आपस में लड़ा करते थे। ऐसी घर की लड़ाइयों का बयान भी तुम इतिहास में पढ़ चुके हो।

६—आजकल के नये इतिहास में कदाचित सब से बुरा समय औरङ्गज़ेब की मृत्यु के पीछे से और अंगरेज़ी राज के आरम्भ तक था। अर्थात् १७०० ई० से १८२० तक, विशेष करके औरङ्गज़ेब की मृत्यु के पीछे की एक शताब्दी तक उसे अशान्ति और उपद्रव का समय कहते हैं।

७—औरङ्गज़ेब की मृत्यु के पीछे मुग़ल साम्राज्य टुकड़े टुकड़े हो गया। भारत भर में बहुत सी स्वाधीन रियासतें हो गईं। यह छोटे छोटे हाकिम (नवाब और राजा) लगातार आपस में लड़ा करते थे। मरहठों की सेना ने सारे उत्तरीय और मध्य भारत को जीत लिया। देश को उजाड़ डाला और लोगों को लूट लिया। जो लोग अपना धन न देते थे उन्हें मार डालते या बहुत से कष्ट देते थे। सुप्रबन्ध रखने के लिये शक्तिमान शासक न था इस कारण लुटेरों, डाकुओं, ठगों, पिण्डारियों और भांति भांति के चोरों से देश भर गया। कोई भी बेखटके न रहा। कड़ा पहरा और बहुत से सिपाहियों के बिना यात्रा नहीं हो सकती थी और इस पर भी बहुधा यात्री जीते जी घर न लौट आते थे।

८—तुम सुख और शान्ति के समय में रहते सहते हो तुम्हें उन मार काट के दिनों का ध्यान भी नहीं हो सकता। पिछले साठ बरस में उत्तरीय भारत में और कम से कम

सौ बरस से दक्षिण भारत में कोई लड़ाई नहीं हुई। हमारी सरकार के राज्य में चारों ओर शान्ति और सुख ही दिखाई देता है।

९—देश के हर भाग में शान्ति का सिक्का बैठाने के लिये शक्तिमान शासक को आवश्यकता होती है, जो अशान्ति न होने दे, बिद्रोहियों को दबाये रक्खे, बाहरी चढ़ाई करनेवालों को देश में न घुसने दे, और डाकुओं और लुटेरों के अत्याचार से प्रजा को बचाये रक्खे।

१०—भारत के रहनेवाले बहुत सी जाति के हैं और भिन्न भिन्न भाषायें बोलते हैं। उनके भिन्न भिन्न मत हैं और अनेक समाजों में बँटे हैं। एक सिख या पठान किसी बंगाली मरहठे या मद्राजी से भिन्न है। उसका रूप पहिनावा, भाषा और मत सब अलग है। बिरला ही ऐसा कोई शाहनशाह भारत में हुआ है, जिसने कुल भारत पर हुकूमत की हो और इन सब में शान्ति रक्खी हो। अकबर और जहांगीर, शाहजहां और औरंगज़ेब जैसे बड़े मुग़ल शाहनशाह ने भी केवल उत्तरीय और मध्य भारत के कुछ हिस्सों पर राज किया है। उन दिनों में रेल और तार का तो नाम भी न था। अच्छी सड़कें भीं बहुत कम थीं। इसी कारण उन शाहनशाहों की आज्ञा का पालन सारे देश में न होता था।

११—पर अब भारतवर्ष पर ऐसा प्रतापी बादशाह है जिसकी टक्कर का कोई उसके पहिले नहीं हुआ। वह दुनिया भर के सब राजाओं से अधिक शक्तिमान है; उसकी थलसेना और जलसेना शान्ति रख सकती हैं, बिद्रोहियों को दबा सकती हैं और चढ़ाई करनेवालों को भगा सकती हैं। वह महाराज सम्राट पञ्चम जार्ज हैं।

१२—अब सब जगह शान्ति है। प्रजा को इसकी आवश्यकता थी। ज़मींदार बेखटके अपने खेतों में खेती करते हैं और उनको किसी का डर नहीं है। अच्छी सड़कें, रेल और तार सब जगह हैं जिनसे भारत के सब हिस्से ब्रह्मा समेत एक दूसरे के मानो पास हो गये हैं। पहिले यह बात न थी। हिन्दुस्थान और मध्य भारत मानो बिलकुल मिल गये हैं। समुद्रतट पर धुएं के जहाज़ फिरते हैं। मुग़ल बादशाहों को दिल्ली में अपने राज के दूर के हिस्सों के समाचार कई सप्ताह में पहुँचते थे और सेना के भेजने में महीनों लग जाते थे। अब वाइसराय घण्टे ही भर में दिल्ली या शिमले में बैठे बैठे बंगाल तथा ब्रह्मा या मद्रास के हज़ारों मील के स्थानों का हाल जान लेते हैं और तीन चार रोज़ के भीतर ही भीतर जहां चाहें रेल से सेनाओं को भेज सकते हैं। जब तक भारत में राजराजेश्वर हैं किसी लड़ाई भिड़ाई का खटका नहीं है। ब्रिटन की बादशाहत में हर जगह शान्ति रहेगी और हम भारतवासी सुख से रहेंगे।

(३) सड़क और रेल की लाइन

१—पचास बरस से कुछ अधिक हुआ जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी टूट गई और भारत का शासन इंगलैंड की महारानी के हाथ में आया। तब से बहुत सी सड़कें और रेलवे लाइनें बन गई हैं।

२—बहुत सी सुख की सामग्री जो हमको मिली है, बहुत सी वस्तुएँ जो हमारे नित्य के काम में आती हैं, वह सामान जो भारत से दूर देशों में बनता है इंगलिस्तान से या और देशों से आता है—जैसे तरह तरह के चाकू, कपड़े, घड़ियां, ताले, किताबें, दियासलाई और अनेक वस्तुएँ जिनकी गिनती नहीं हो सकती। यह सब अच्छी सड़कें न होतीं या रेल का प्रबन्ध न होता तो हमें

देख न पड़तीं और मिलतीं भी तो बहुत महँगी। व्यापार की उन्नति जैसी अब हम देख रहे हैं अगले दिनों में जब सड़कें बुरी थीं और रेल का नाम न था असम्भव थी।

३—भारत में अंगरेज़ी शासन से पहिले सड़कों का ऐसा प्रबन्ध न था जैसा अब है। रास्ते बरसात में काम न आते थे; कीचड़ पानी से दब जाते थे। पुल कहीं इक्का दुक्का देख पड़ता था। माल असबाब बैलों पर लाद कर ले जाते थे। यात्री मुसाफ़िर घोड़े टट्टुओं पर चलते थे सो भी जिनके पास न थे वह दुखिया सैकड़ों मील पैदल चलते थे।

४—१८३६ ई० में सड़कें बनने लगीं। पहिले काम बहुत धीरे धीरे होता था; क्योंकि अच्छी सड़कों के बनाने में बड़ा धन लग जाता था। लार्ड डलहौज़ी के शासन में १८५४ ई० में हर सूबे में बारकमास्तरी का महकमा बनाया गया जो सड़कों, सरकारी इमारतों और नहरों की देख भाल करै। बड़े बड़े शहरों के बीच में बड़ी सड़कें तो बनी हीं इनके सिवाय बहुत सी कच्ची सस्ती सड़कें भी सारे देश में बनाई गईं। अब (१९१२ में) पचपन हज़ार मील लम्बी पक्की सड़कें और एक लाख तीस हज़ार मील लम्बी कच्ची सड़कें तैयार थीं और एक बरस में उनकी देख भाल में पांच करोड़ रुपया खर्च होता है।

५—इस में सन्देह नहीं कि पक्की सड़कें अच्छी होती हैं और इनसे बड़े लाभ हैं। पर रेल की पटरियां इन से बढ़कर काम की होती हैं। अब भारत में बाहर से बहुत सा माल आता है क्योंकि रेलों के द्वारा बहुत जल्दी और थोड़े से ख़रचे से एक जगह से दूसरी जगह पहुंच जाता है। ऐसे ही बहुत सी वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं; रेलों पर लाद कर बन्दरगाहों में पहुंचा दी जाती हैं। वहां जहाज़ों पर लद कर दूर देशों में पहुंचती

हैं। ऐसे ही भारत के एक भाग से दूसरे भाग में माल पहुंचाया जाता है। किसी सूबे में फ़सल अच्छी हुई तो जितना अनाज वहां के रहनेवालों के काम न हुआ वह बेच डाला जाता है और दूसरी जगह भेज दिया जाता है। ऐसा न करें तो वहीं पड़ा पड़ा सड़ जाय। उन ज़िलों में बहुत भेजा जाता है जहां वर्षा न होने से अन्न न उपजता हो।

६—लोहे के भारी भारी पुलों से रेलें बड़ी नदियां पार करती हैं। इन में कोई कोई तो दुनिया भर में बड़ी श्रेणी के हैं और मील भर से अधिक लम्बे हैं। लम्बी लम्बी रेल गाड़ियां दिन रात बिना बिलम्ब इन पर चला करती हैं। अगले दिनों में अच्छे ऋतु ही में लोग बाहर जाते थे। यात्रियों को कभी बाढ़ के कारण नदियों के तीर पर कई दिन रुके रहना पड़ता था। अब पुलों की महिमा से हर ऋतु में बड़ी सुगमता से यात्रा हो सकती है। आंधी पानी से कुछ हानि नहीं। वर्षा हो या सूखा, सब दिन आनन्द से लाहोर से कलकत्ता बारह सौ मील या कलकत्ता से बम्बई साढ़े तेरह सौ मील, रेल गाड़ी में बैठे बैठे चालीस घण्टे में यात्री पहुंच सकता है। इससे पहिले आदमी दिन भर में दस से बीस मील तक चल सकते थे। अब रेल उतनी ही देर में उसे चार सौ मील पहुंचा देती है।

७—भारत में सब से पहिले रेल की सड़क केवल बीस मील लम्बी थी। यह १८५३ ई० में बम्बई में बनाई गई थी। १८५७ में रेल की सड़क ३०० मील लम्बी थी। पचास बरस पीछे १६०६ में ३१००० मील लम्बी लाइन बन चुकी थी। इस बरस तैंतीस करोड़ यात्री चले और ६ करोड़ चालीस लाख टन माल भेजा गया। तीसरे दर्जे के मुसाफ़िर से एक मील पीछे एक पैसा और एक टन माल पर मील पीछे दो पैसा महसूल लिया गया।

(४) डाक और तार

१—डाकख़ाने का जो अब प्रबन्ध है उसका अगले दिनों में नाम भी न था। जब अनेक राज थे और कोई बड़ा शासक न था तब डाकख़ानों का होना असम्भव था। और देशों में जो पत्र किसी दूत के हाथ भेजा जाता था वह बहुधा तो पहुंचता ही न था और जो पहुंच भी जाता था तो कई महीने लग जाते थे और ख़र्च बहुत पड़ जाता था।

२—१८३७ ई० में सर्वसाधारण के लिये भारत में डाकख़ाने खोले गये। उन दिनों टिकट न थे। महसूल पहले देना पड़ता था और दूरी के बिचार से कम ज्यादा महसूल लगता था। कलकत्ता से बम्बई तक चिट्ठी का महसूल तोला पीछे एक रुपया था।

३—१८५४ ई० में भारत में डाक का महकमा बनाया गया। टिकट चलाये गये। इस समय सारा भारतखण्ड एक शासक के आधीन हो चुका था। इस कारण दूरी का बिचार छोड़ कर महसूल बांधा गया। इस के पीछे समय समय पर इस में घटती होती गई और होते होते जितना अब है वह होगया।

४—१८५६ ई० में ७५० डाकख़ाने और लेटर बाक्स थे। चिट्ठियां ३६ हज़ार मील चलीं। साल भर में ३ करोड़ चिट्ठियां और पारसल भेजे गये। ६० बरस के भीतर भीतर बिना परिमाण उन्नति हुई। अब ७० हज़ार डाकख़ाने और लेटर बाक्स हैं। १ लाख ६० हज़ार मील की दूरी तक चिट्ठियां भेजी जाती हैं। ६४½ करोड़ चिट्ठियां और पारसल भेजे जाते हैं। तीन पैसे का पोष्टकार्ड ३००० मील तक जा सकता है और दो आने में इङ्गलिस्तान चिट्ठी जाती है जो ८००० मील दूर है।

५—जब १८५८ ई० में इङ्गलैण्ड के बादशाह ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी से भारत का शासन ले लिया तब सेविङ्ग बैङ्क और मनी आर्डर न थे। अब ८००० डाकखाने के बैङ्क हैं जिन में १२ लाख आदमियों के हिसाब हैं। इन में ११/१२ हिन्दुस्थानी हैं जो पहिले अपनी बचत का रुपया धरती में गाड़ देते थे। अब गवर्नमेण्ट उनके रुपयों की रक्षा करती है और उन्हें सूद भी देती है। १९११ ई० में १७ करोड़ रुपया सेविङ्ग बैङ्क में जमा था। इतना धन डाकखाने के सेविङ्ग बैङ्क में जमा होना इस बात का प्रमाण है कि लोगों को गवर्नमेण्ट पर पूरा विश्वास है। ३७½ करोड़ के मनी आर्डर हर साल भेजे जाते हैं।

६—इतना ही नहीं है कि तार से व्यापारियों को सहायता मिलती है और साधारण लोगों को अपने कामों में लाभ है। इससे शासन में बड़ी सुगमता है।

७—अकबर और औरङ्गज़ेब ऐसे पुराने शासकों को भी यह बड़ी सहायता का उपाय न जुड़ा था। १८५१ ई० में कलकत्ते में तार की पहिली लाइन बनाई गई; यह केवल ८२ मील लम्बी थी। इसके चार बरस पीछे लार्ड डलहौज़ी के शासन में ३००० मील लाइन खोली गई। ६० बरस पीछे अब ७५००० मील लम्बी लाइन पर ७००० तार घर काम कर रहे हैं और इन पर से साल में एक करोड़ बीस लाख ख़बरें भेजी जाती हैं। जो चाहे बारह लफ़्ज़ों का छोटा तार सैकड़ों क्या, हज़ारों मील की दूरी पर बारह आने ख़र्च कर के कुछ मिनटों में अपने हित मित्रों के पास भेज सकता है।

(५) नहर और आबपाशी (सिंचाई)

१—नहरें माल और यात्रियों को रेल से भी सस्ते भाड़े पर ले जाती हैं। उनसे यही काम नहीं लिया जाता। वह धरती के

बड़े बड़े टुकड़ों का पानी देती हैं। पहिले भी नहरें थीं पर जिस समय अङ्गरेज़ों ने देश का शासन अपने हाथ में लिया तो उन में बहुत थोड़ी नहरें काम की थीं। लड़ाई और अशान्ति ने उनका नाश कर दिया था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पुरानी नहरों की मरम्मत की और नई नहरें खुदवाईं।

२—जो नहरें १८५८ ई० में जारी थीं उन से १५ लाख एकड़ धरती का सिंचाई होती थी। तब से पिछले ६० बरस में ४५ करोड़ रुपया नहरों में लग चुका है। अब भारत में दुनिया भर में सब से अच्छा सिंचाई का प्रबन्ध है। दो करोड़ तीस लाख एकड़ से अधिक धरती की इस से सिंचाई होती है और इस में ६१००० रुपये से अधिक की फसलें होती हैं।

३—अपर गंगा की नहर एक नई नदी की भांति ४६० मील लम्बी है और इसकी शाखायें ४४८० मील लम्बी हैं।

४—पंजाब में बड़ी नहर और उनकी शाखायें ४५०० मील लम्बी हैं। और १०५०० मील छोटे छोटे खाल हैं। यह सब पचास लाख एकड़ धरती की आबपाशी करते हैं। चनाब की नहर ने एक सूखे और उजाड़ देश को हरा भरा बाग़ बना दिया जिसका क्षेत्रफल बीस लाख एकड़ है। सिंध की उस धरती में जो सूखा जंगल था गेहूं बहुतायत से पैदा होता है। यह गेहूं दस लाख खेतिहरों के खाने में आता है। यह खेतिहर और इलाक़ों से आकर यहां बस गये हैं। सिंध की यह नई आबादी केवल वहां के रहनेवालों ही को भोजन अन्न नहीं पहुंचाती। वहां से हर साल तीन करोड़ रुपये दाम का गेहूं और देशों में जाता है। यह पुराने समय का बन था। यहां अब हरे भरे गांव हैं जिनमें अच्छी सड़कें, लम्बे चौड़े घर, कुएं, मसजिदें, पेड़ों के कुञ्ज और बाग़ लहलहा रहे हैं।

(६) खेती

१—भारतखंड के रहनेवालों का सब से बड़ा काम अन्न उपजाना और ढोर पालना है। यहां ३० करोड़ आदमी रहते हैं जिन में दो तिहाई खेती ही से जीते हैं। यह देश मुख्य खेतों का ही देश है और गांव में दस में नौ आदमी खेती बारी करके जीते हैं। इस से गवर्नमेण्ट खेतिहरों पर बिशेष ध्यान रखती है और इन्हें हर तरह की मदद देती है। यह काम ऐसे होता है।

२—प्रजा के लिये परम आवश्यक बात शान्ति और रक्षा है। जब प्रजा को मारती और देश का सत्यानाश करती पलटनें इधर उधर फ़िरती थीं; खेत उजाड़तीं और दुखिया किसानों की फसलें काट काट कर गांवों को जलाने में लगी रहती थीं तो खेती करना असम्भव हो जाता था। अब सब जगह शान्ति है। ज्यों ज्यों देश अङ्गरेज़ी शासन में आता गया और ब्रिटिश इण्डिया का अंग बनता गया प्रजा अपने खेतों में सुख चैन से खेती करने लगी।

३—किसान की दूसरी आवश्यकता धरती का उचित लगान या पोत है। वह अङ्गरेज़ी शासन में बहुत ही उचित है और उसे देकर जो रुपया बचे उसे प्रजा जैसे चाहे ख़र्च करे और अपने काम में लाये। लगान तहसील करनेवालों को सरकार बड़ी बड़ी तनख़ाहें देती है। प्रजा को इन्हें कुछ देना नहीं पड़ता। जितना अनाज ज़मींदार के काम का न हो उसे वह सौदागरों के हाथ बेंच सकता है जो देश के और प्रान्तों में बेचने के लिये उसे मोल ले लेते हैं। पर जो अच्छी सड़कें और रेलें उन को दूर देशों में थोड़े ख़रचे पर पहुंचा देने के लिये न होतीं

तो सौदागर ऐसा कभी न कर सकते। यह सब वस्तुएँ सरकार के प्रबंध से मिलती हैं जिन से ज़िमींदारों को बड़ा लाभ है।

४—सरकार ने प्रजा और उनकी सन्तान के लिये ज़िराअती (खेती के) कालेज और तजरुबों के फार्म (खेत) स्थापित किये हैं जिनमें खेती की नई नई रीतियां सिखाई जाती हैं, जिन से खेती में बिशेष लाभ और सुगमता हो। और और देशों से नये नये अनाज फल तरकारी, मेवे लाकर इन फ़ार्मों में बोये जाते हैं। फ़सिल उगाने की नई रीतियां, नये हलों और नये बीजों की परीक्षा की जाती है। जो रोग पौधे की हानि करते और गेहूँ, चावल, कहवा, और ईख और और फसलों का नाश करते हैं उनकी जांच की जाती है। जो लोग इन रोगों को जानते और इनकी दवाई, इनके रोकथाम को जानते हैं वह गांवों में दौरा करने को भेजे जाते हैं कि वह किसानों और बाग़बानों को इन रोगों से छुटकारे का अच्छे से अच्छा उपाय बता दें।

५—एक महकमा पशुचिकित्सा का भी है जिसे सिविल विटिनरी डिपार्टमेण्ट कहते हैं। इसके उहदेदार ज़मींदारों के ढोरों की देखभाल करते हैं और जहां तक हो सकता है उन्हें देखभाल दवाई करने की रीति सिखाते हैं। इस विद्या के मदरसे भी हैं जहां लोगों को पशुचिकित्सा सिखाई जाती है। वह लोग पशुओं की जाति में उन्नति का भी उद्योग करते हैं जिस से ज़मींदारों को वैसी ही अच्छी गायें, मज़बूत और बड़े बैल, घोड़े और टट्टू मिल सकें जैसे इङ्गलिस्तान आस्ट्रेलिया और अङ्गरेज़ी राज के और देशों में होते हैं।

६—सब जगह ज़मींदारों के लड़कों के लिये मदरसे खोल दिये गये हैं जिस में वह लिखना पढ़ना सीखें; क्योंकि किताबों से बहुत सी विद्या जानी जाती है। इस लिये जो लोग पढ़ सकते

हैं वह ऐसा ज्ञान पा सकते हैं जिन से वह धरती पर अच्छी खेती कर सकें और अपना हिसाब किताब रख सकें जिसमें उन्हें कोई धोखा न दे।

(७) अकालपीड़ितों की सहायता

१—प्राचीन काल में भारत में कितने ही बड़े काल पड़े थे जिसका हाल हमें हिन्दुओं की पोथियों से ब्योरेवार मालूम होता है। उसके पीछे जब यहां मुसलमान बादशाह थे उस समय जो काल पड़े उनका ब्योरेवार हाल इतिहासों में लिखा है। अकबर के समय में कम से कम तीन बड़े काल पड़े थे। लाखों आदमी मर गये; क्योंकि उस समय में रेल नहीं थी और दूर से अन्न भेजने का कोई सामान न था।

२—काल पड़ने के कई कारण हैं। इसका सब से बड़ा कारण पानी न बरसना है। पर इसके सिवाय लड़ाई डकैती और कुप्रबन्ध से भी काल पड़ जाता है। जहां कहीं यह बातें हों वहां पानी बरसे तौ भी किसान अपने खेतों को ठीक जोत बो नहीं सकते।

३—अब भारत में शान्ति और सुप्रबन्ध है। उससे काल के कुछ कारण तो दूर कर दिये गये। पर अच्छी से अच्छी गवर्नमेण्ट भी पानी नहीं बरसा सकती। फिर सूखे का भी उतना डर नहीं रह गया।

४—अगले दिनों में जब बहुत से स्वाधीन राजा थे तब हर एक को अपने अपने राज्य की फ़िकिर करनी पड़ती था। उसे दूसरे राज्य की कुछ परवाह न रहती थी। उसे इतनी भी ख़बर न मिलती थी कि दूसरे राज्य में क्या हो रहा है। भारत का हर एक भाग तभी काल से बच सकता है जब सारे देश का

एक हाकिम हो ; क्योंकि वह बड़ा हाकिम यानी वाइसराय देश के सब हिस्सों की बराबर ख़बर ले सकता है।

५—भारत इतना बड़ा देश है और उसमें इतने सूबे हैं कि जब किसी एक हिस्से में पैदावार की कमी होगी तो किसी दूसरे में अवश्य बहुतायत से होगी। जब इन सूबों का एक बड़ा हाकिम हो तब वह एक सूबे से दूसरे में सहायता भेजवा सकता है।

६—अगले दिनों में अगर एक प्रान्त दूसरे प्रान्त की सहायता भी करना चाहता तो भी नहीं कर सकता था ; क्योंकि रेल तो थी नहीं, अच्छी सड़कें भी कम थीं। सड़कें तो जैसी अब हम देखते हैं ऐसी एक भी न थी।

७—जब से सरकार अङ्गरेज़ी ने भारत का शासन अपने हाथों में लिया तब से बहुत सा उद्योग किया गया, बहुत सा रुपया ख़र्च हुआ बहुत सी सम्मतियों की परीक्षा की गई। इतना कष्ट उठाने से काल के दूर करने की बहुत सी तरकीबें मालूम हुईं और वह यह हैं ; पहली—सारे देश और विशेष कर उन देशों में जहां पानी कम बरसता है रेलें बनाई गईं। अब भारत के हर भाग में रेल में बैठ कर पहुंच सकते हैं और इसी तरह अन्न भी ला सकते हैं। कुछ ही दिन बीते हैं कि एक प्रान्त में सूखा पड़ जाने से कुछ भी अन्न न हुआ, तो वहां रेल द्वारा पचीस लाख टन अनाज पहुंचा दिया गया।

८—दूसरी—देश के बड़े बड़े भागों में अब नहरों से सिंचाई होती है इस भाँति वहां से काल पड़ने का डर सदा के लिये हटा दिया गया है। क्योंकि पानी बरसे या न बरसे नदी के पानी से नहर सदा भरी रहती है। नदियां पहाड़ों से आती हैं और उनमें बर्फ़ का पानी होता है और वह बरसात के आसरे नहीं हैं।

९—तीसरी—पानी न बरसे और पैदावार न हो तो ज़मीन का लगान माफ़ कर दिया जाता है। दुखिया ज़मीनदार को सरकार को कुछ देना नहीं पड़ता और उसे खाने को और अगले साल के लिये बीज मोल लेने के लिये पेशगी रुपया भी दे दिया जाता है। १६०२ ई० में कुछ स्थानों में पानी बिलकुल न बरसा तो ज़मीन के लगान का दो करोड़ रुपया माफ़ कर दिया गया। सन् १६०३ ई० में सरकार ने प्रजा को सहायता और लगान माफ़ करने में उनतीस करोड़ रुपया ख़र्च किया।

१०—चौथी—इमदादी (सहायक) काम खोले जाते हैं; जैसे किसी बड़े तालाब का खोदना या सड़क का बनाना। जो लोग इन कामों पर लगाये जाते हैं उन्हें मज़दूरी दी जाती है। इस रीति से उनको भिखमंगों की तरह खाना नहीं मिलता और वह मज़दूरी पाते हैं। जो काम वह करते हैं लोगों के सदा के लिये लाभदायक होते हैं। जो आदमी काम नहीं कर सकते जैसे बूढ़े और बीमार उन्हें बिना मजदूरी किये रुपया दे दिया जाता है।

११—पांचवी—सहायक कैंपों में असपताल भी खोले जाते हैं और ग़रीबों की पूरी पूरी देख भाल होती है जिस में वह लोग जीते रहैं।

१२—छठी—देश भर में अन्न बेचनेवालों को सूचना दे दी जाती है कि अनाज की आवश्यकता है, जिस पर वह बहुत सा अनाज लाते हैं। व्यापारी लाभ उठाने के लिये यह काम प्रसन्नता से करते हैं। कोई दबाव उन पर नहीं डाला जाता न कोई कड़ाई की जाती है।

१३—सातवीं—सरकार ने अकाल का एक ज़ाबता (नियमावली) बनाया है जिसमें इस विषय के सब नियम लिखे हैं। इससे सब अफ़सर जान लेते हैं कि हम को क्या करना उचित है।

महंगी न भी पड़े तो भी हर सूबे में इमदादी (सहायतार्थ) काम के नक़शे तैयार रहते हैं और गवर्नमेण्ट की ओर से मंज़ूरी दी जाती है जिसमें सूखा पड़ने पर किसी प्रकार का बिलम्ब न हो, न समय वृथा नष्ट किया जाय।

१४—अन्तिम उपाय यह है कि सरकार १८७८ ई० से हर साल डेढ़ करोड़ रुपया अलग रखती जाती है जिससे किसी सूबे में अकाल के लक्षण देख पड़ें तो लोगों की सहायता के लिये सरकार के पास भरपूर धन रहे और काल का पूरा प्रतिकार हो सके।

(८) सेविंग बैंक और साझे के पूंजी के बैंक
(ज़मींदारी या ज़िरायती बैंक)

१—सब जानते हैं कि जब किसी के पास बहुत सा रुपया हो तो उसमें से कुछ बचा लेना कैसी अच्छी बात है। क्योंकि वह बीमार पड़ जाय काम करने के योग्य न रहे, या बूढ़ा हो जाय तो वह जमा धन उसके काम आयेगा। इसलिये गवर्नमेण्ट ज़मींदारों को रुपया बचाने में मदद देती है।

२—कभी कभी सब को थोड़ा बहुत उधार लेने का काम पड़ ही जाता है। अगले दिनों में और अब भी साहूकार लोग बड़ा सूद लेते हैं। कोई ग़रीब आदमी इनसे रुपया उधार ले तो अभागा कभी उऋण नहीं होता। इसी कारण गवर्नमेण्ट ज़मींदारों को थोड़े सूद पर रुपया उधार देकर उनकी सहायता करती है। यह इस रीति से होता है।

३—डाकख़ानों में सेविङ्ग बैङ्क हैं। इन में जिसका जी चाहे और जब जो चाहे चार आने तक जमा कर सकता है। यह रुपया उसकी बचत में रहता है और इस पर ३) सैकड़ा सालाना सूद भी मिलता है। देश के बैङ्कों में इस से अधिक भी सूद मिल

जाता है पर उनमें छोटी छोटी रक़में जमा नहीं होतीं और अच्छे से अच्छे बैङ्क के टूटने का डर रहता है। सरकारी बैङ्क टूट नहीं सकता। १९११ ई० में एक करोड़ रुपया डाकखाने के बैङ्कों में जमा था। यह ग़रीबों का बचा हुआ धन है। साल भर में कोई पांच सौ रुपये से अधिक सेविङ्ग बैङ्क में जमा नहीं कर सकता और न किसी का पांच हज़ार रुपये से अधिक जमा रह सकता है।

४ १८८३ ई० से सरकारी अफ़सरों को यह अधिकार दिया गया है कि थोड़े सूद पर और कभी कभी विना सूद के भी ज़मींदारों को रुपया उधार दें जिस से वह बीज या अच्छे ढोर मोल ले सकें और जब उपज अच्छी हो तो उधार पाट दें। १९०९ ई० में ऐसे उधार में दो करोड़ रुपया लगा था।

५—१९०४ ई० में गवर्नमेण्ट ने ज़मींदारी बैङ्क और साझे को ूजी की सोसाइटियां (समाज) स्थापित कीं। इनका एक एक मेम्बर दूसरों को मदद दे सकता है और दूसरों से मदद ले सकता है। जिनके पास रुपया होता है वह लोग मिलकर एक बैङ्क बना लेते हैं। ऐसे बैङ्क से थोड़े सूद पर उधार मिल जाता है। ऐसे बैङ्कों को सरकार भी रुपया उधार दे देती है कि अपना काम चलायें। ऐसे बैङ्कों का एक एक मेम्बर उधार पाटने का ज़िम्मेदार होता है इस लिये इन बैङ्कों को लोगों से थोड़े ब्याज पर रुपया मिल जाता है जो ज़मींदार को निरी अपनी ज़िम्मेदारी पर न मिलता। कोई ज़मींदार आप उधार ले तो रुपया देनेवाले महाजन को सदा यह खटका लगा रहता है कि कदाचित् रुपया न पटै। इस कारण रुपया देनेवाला इस खटके को मिटाने के लिये बड़ा भारी सूद लेता है पर जब बहुत आदमी मिल जायं और सब के सब उधार पाटने का भार अपने

ऊपर लें तो यह चिन्ता घट जाती है और इसी कारण साहूकार थोड़े ब्याज पर रुपया देने को तैयार हो जाता है। फिर इस बैङ्क से इसके मेम्बर थोड़ा सा अधिक सूद देकर रुपया उधार लेते हैं। इससे कुछ लाभ भी हो पड़ता है जो अपने अपने हिस्से के अनुसार मेम्बरों में बंट जाता है।

६—अब ऐसी बहुत सी सोसाइटियाँ हो गई हैं जिन का आरम्भ १६०४ ई० से हुआ। १६११ ई० में ब्रिटिश इण्डिया में इनकी गिनती साढ़े तीन हज़ार थी और इनकी कुल पूंजी एक करोड़ तीन लाख की रही। इस पूंजी में सात लाख से कुछ अधिक सरकार का कर्ज़ा था।

(६) व्यापार

१—भारत से और और देशों से सैकड़ों बरस से व्यापार होता रहा है। पर पुराने समय में यह व्यापार बहुत कम था। आजकल जितनी चीजें और देशों से आती हैं या जो असबाब यहां से और देशों को भेजा जाता है उसकी अपेक्षा जिन वस्तुओं का व्यापार होता था वह बहुत थोड़ी थीं। जब तक सारे भारतवर्ष में शांति स्थापित नहीं हुई और अच्छी सड़कें और रेलें नहीं बनीं देश के भीतरी व्यापार की उन्नति न हो सकी। इसी तरह समुद्र पार दूर देशों के लिये धुआंकश जहाज़ की आवश्यकता होती है।

२—पहिले भारत में बन्दरगाह बहुत कम थे। जो पुराने थे उन में बहुत कुछ ठीकठाक किया गया और उनमें अधिक जगह निकाली गई। अब जहाज़ों पर से बड़ी सुगमता से माल असबाब और मुसाफ़िर उतरते हैं। भारत के बड़े बड़े बन्दरगाह कलकत्ता, बम्बई, रंगून, मदरास, करांची और चटगांव

में हैं। इनमें से रेल की लम्बी लाइनें भारत के सब प्रान्तों में पहुंचती हैं और जो माल जहाज़ों पर लदकर परदेश से आता है उसे ढो ले जाती हैं।

३—१८६९ ई० से व्यापार में बड़ बेग से उन्नति होने लगी। इसी साल स्वेज़ की नहर खुली और उसमें से होकर जहाज़ आने जाने लगे। इङ्गलिस्तान से भारत की पुरानी राह सारे अफ्रीका महाद्वीप का चक्कर लगाती थी और सौ दिन और कभी कभी इस से भी अधिक दिनों में यात्रा पूरी होती थी। अब सोलह ही दिन लगते हैं।

४—ज्यों ज्यों व्यापार में वृद्धि हुई त्यों त्यों सरकार भी देश में आने का कर (कस्टम् डयूटी) घटाती गई। पहिले जो माल बाहर से देश में आता था उसके दाम पर बीस रुपया सैकड़ा कर लिया जाता था। अब केवल पांच रुपया सैकड़ा लिया जाता है। लोहे और इस्पात की चीज़ों पर १) सैकड़ा और रुई के कपड़ों पर ३॥) सैकड़ा टैक्स है। बहुतसी चीज़ें जैसे किताबें ऐसी भी हैं जिन पर टैक्स नहीं हैं।

५—१८३४ ई० से सात करोड़ रुपये का माल बाहर से आया और ग्यारह करोड़ का माल बाहर गया। १९११ ई० में एक अरब उन्हत्तर करोड़ का माल बाहर से आया और दो अरब सोलह करोड़ का माल बाहर गया। समुद्र की राह दूसरे देशों से भारत का जो व्यापार अब है वह ऐसे व्यापार से जो पचास बरस पहिले था नौ गुना बढ़ गया है। यह व्यापार दुनिया के सब देशों से है। भीतर आनेवाला माल आधे से अधिक ब्रिटन से आता है बाक़ी और देशों से। बाहर जानेवाले माल का एक चौथाई ब्रिटन को, बाकी और देशों को; कुछ यूरोप और कुछ एशिया में भेजा जाता है।

बाहर जानेवाला माल

६—जो चीज़ें भारत से बाहर जाती हैं वह दो तरह की हैं; एक वह जो इस देश में बनाई जाती हैं और दूसरी वह हैं जो यहां पैदा होती हैं। यहां की पैदावार की मुख्य वस्तु यह है, रूई, सन, अनाज, चावल, गेहूं, तेलहन, चाय, अफ़ीम, मसाला, ऊन, नील, दाल, तेल और क़हवा। भारत में ये चीज़ें बनती हैं सूत, कपड़ा, खाल और चमड़ा, सन के बोरे और लाह के रङ्ग।

७—भारत में बहुत सी चीज़ें ऐसी हैं जो और देशों में पैदा नहीं होतीं, या जो और देशों में कम मिलती हैं। उन सब की आवश्यकता है इस लिये और देशों में बिना महसूल चली जाती हैं। जो पांच बड़ी बड़ी जिनमें रूई, सन, तेलहन, चावल, गेहूं किसान पैदा करते हैं, वह सन् १९११ ई० में बारह करोड़ रुपये के दाम की बाहर गईं। यों कहना चाहिये कि सरकारी लगान देने के पीछे व्यापारियों को अपने ही देश में बेचने के लिये अनाज देकर और अपने काम भर के लिये अपने पास रखकर ज़मींदारों ने भारत की मालगुज़ारी की आमदनी से साढ़े तीन गुने दाम की पैदावार दूसरे देशों को भेजी।

भीतर आनेवाला माल

८—तीन सौ बरस हुए जब अंगरेज़ व्यापारी पहिले पहिल भारत में आये थे तब वह अपने साथ मुख्य करके ये चीज़ें लाये थे, सोना, चांदी, ऊनी माल और मख़मल।

अब वह यूरोप की बनी बेगिनत चीज़ें लाते हैं जिनमें मुख्य ये हैं;—रूई के कपड़े, धातु, चीनी, सब तरह की कलें, लोहे का सामान, कैंची, चाकू, खाने पीने की वस्तुएँ, मिट्टी का तेल, जड़ी बूटियां और दवाइयां।

९—बहुत पुराने समय में और उसके पीछे भी सैकड़ों बरस तक भारत में जिस चीज़ का काम पड़ता था वह यहीं बनती थी या पैदा होती थी। गांव गांव में अपनी अपनी फ़सल थी और अपने अपने कारीगर। फिर एक दिन ऐसा आगया कि लोगों के काम की चीज़ें और देशों में अच्छी और सस्ती मिलने लगीं। इसलिए लोग उन्हें मंगवा लेते थे। अब भी यही दशा है। पर वह दिन निकट आ रहा है जब इस देश के काम की चीज़ें यहीं बन जाया करेंगी। बड़े बड़े शहरों में कारख़ाने और वर्कशाप खुल गये हैं। बम्बई, कलकत्ता और कानपुर में रूई के पुतलीघर बन गये हैं। आजकल कपास, रेशम, सन, कच्ची खालें, चमड़ा, और लकड़ी भारत से बहुत दूर यूरोप को जाती हैं। वहां चतुर कारीगर उनके सामान बनाते और फिर भारत को भेज देते हैं। इस देश के कारीगर भी निपुण होते और मेहनत से काम करते तो ये चीज़ें यहीं बन सकती थीं। सरकार अब कारीगरी के मदरसे बहुत जगह खोल रही है जिससे यहां के कारीगरों को बहुत तरह की चीज़ बनानी आजायं।

(१०) स्वास्थ्यरक्षा और साधारण स्वास्थ्य

१—ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पहिले ही लोगों के लाभ के लिए अस्पताल खोले और दवाइयां और डाक्टर भेजे। १८५८ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनी टूट गई और महारानी विक्टोरिया ने राज्य का भार अपने हाथों पर लिया। उस समय एक सौ बयालीस सिविल अस्पताल थे। जिनमें सात लाख रोगियों की चिकित्सा हुई। उसके पचास बरस बाद १९०७ ई० में अढ़ाई हज़ार सरकारी अस्पताल थे जहां ढाई करोड़ रोगियों की चिकित्सा हुई। इसके सिवाय पांच सौ नीज के अस्पताल थे,

जिनमें अधिकतर पादरियों के थे। रेल और पुलिस के नौकरों के लिये पांच सौ अस्पताल और भो थे, जिनमें भी लाखों रोगियों को चिकित्सा की गई।

२—सरकारो मेडिकल डिपार्टमेण्ट में हर दर्जे के सैकड़ों डाक्टर हैं। इन सब को सरकार से वेतन मिलता है भारत के हर एक ज़िले में सिविल सरजन के आधीन एक बड़ा अस्पताल रहता है। जिनमें कहीं कहीं बहुत सी सीखी हुई औरतें (नरसें) सिविल सरजन के नीचे हैं। बड़े बड़े कसबों में भी छोटे छोटे अस्पताल हैं जिनमें असिस्टेण्ट सरजन और नरसें काम करती हैं। देशी और विलायती सिपाहियों का विशेष ध्यान रक्खा जाता है। फ़ौजी वैद्यक विभाग अलग है। हर एक रेजिमेंट में अलग अलग डाक्टर और नरसें हैं। सिपाहियों की चिकित्सा मुफ़्त होती है और उन्हें दवाई भ बेदाम मिलती है।

३—परदेवाली और ऊंची जाति की स्त्रिय के लिये जो साधारण अस्पतालों में नहीं जा सकतीं जनाने अस्पताल हैं जिनमें स्त्री डाक्टर और नरसें नियुक्त हैं। इस भांति के दो सौ साठ अस्पताल हैं और उनमें हर साल बीस लाख से अधिक स्त्रियों को चिकित्सा होती है।

४—भारत में जिस रोग से लोग बहुत मरते हैं वह बुख़ार है और उसके लिये सब से बढ़ कर दवाई कुनाइन है। यह एक सिनकोना पेड़ के रस से बनती है और इसके पैकेट जो सात सात ग्रेन के होते हैं सरकारी डाकखानों में पैसे पैसे के मिलते हैं। योंहीं देश भर में इसके लाखों पैकेट ऐसे स्थानों पर बिक जाते हैं जहां अस्पताल नहीं हैं।

५—जिस तरह सरकार रोगियों की चिकित्सा का प्रबन्ध करती है उसी तरह रोगों को दूर करने का उद्योग करती है।

मेडिकल डिपार्टमेण्ट के सिवाय एक स्वास्थ्यरक्षा का विभाग भी है जिसके अफ़सर रोगों के दूर करने में तत्पर रहते हैं। बहुत से बड़े बड़े नगरों में स्वच्छ पानी पहुंचाया जाता है। पानी बड़े बड़े तालाबों में जमा कर लेते हैं और स्वच्छ और शुद्ध करके नलों द्वारा घर घर पहुंचाते हैं। शहरों से मैले और गन्दे पानी बाहर निकाल देने का प्रबन्ध किया जाता है। बाज़ार साफ़ किये जाते हैं। बड़े बड़े शहरों में छिड़काव किया जाता है जिसमें धूल और गर्दा बैठ जाय और जितना कूड़ा शहरों में होता है उसे या तो जला देते हैं या खाद के काम में लाते हैं।

६—शीतला के रोकने के लिये टीका लगानेवाले सरकारी नौकर नियुक्त हैं। यूरोप में इस भयानक रोग से पहिले बहुत से आदमी मर जाते थे। पर अब कोई भी इस रोग से नहीं मरता। क्योंकि टीके से अब बड़ा लाभ हुआ है। वैसे ही भारतवर्ष में भी इस रोग से पहिले से अब कम मृत्यु होती है क्योंकि अब यहां भी बहुत लोग टीका लगवाते हैं। अगर हर एक मनुष्य टीका लगवाये तो शीतला से कोई भी न मरे।

७—एक और भयानक रोग ताऊन है। यह भारत में बहुत दिनों से है। १८९६ ई० में यह बीमारी बम्बई से फैल गई और बहुत से आदमी मर गये। बड़े श्रम से डाक्टरों ने यह मालूम किया है कि यह बीमारी चूहों से आदमी तक मक्खियां पहुंचाती हैं। इस रोग के रोकने के लिये सब से पहले चूहे मरवा डाले जायें। जिस घर में ताऊन हो उसे जला देना चाहिये और अगर ऐसा न हो सके तो उसकी दीवारें और छतें ऐसे पानी से धोई जाय, जिसमें परमेगनेट आफ़ पोटास घुला हुआ हो। जिन लोगों में इसके फैलने का डर हो उनको प्लेग का टीका लगवा देना चाहिये। यह सब काम स्वास्थ्यरक्षा विभाग के अफ़सर करते हैं।

(११) शिक्षा

१—ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत में कोई सरकारी मदरसा नहीं पाया। १७८२ ई० में वारेन हेस्टिङ्गज़ ने मुसलमानों के लिये एक मदरसा खोला। दस बरस पीछे लार्ड कार्नवालिस ने हिन्दुओं के लिये बनारस में एक कालेज खोला। पीछे धीरे धीरे स्कूल और कालेज खुलते रहे। ग़दर के दूसरे साल १८५८ ई० में कलकत्ता, मदरास और बम्बई की युनिवर्सिटियां स्थापित हुईं।

२—इसी समय के लगभग शिक्षाविभाग का महकमा बना, और नये मदरसे खोलने और उनके बारे में रिपोर्ट करने के लिये इन्सपेक्टर नियुक्त हुए। जब १८५८ ई० में यहां का राज्य महारानी विक्टोरिया के हाथ में गया तो भारत में कुल तेरह कालेज थे और स्कूलों में कोई ४० हज़ार विद्यार्थी पढ़ते थे।

३—पिछले पचास बरस में बहुत कुछ बढ़ती हुई है। लार्ड मेओ, लार्ड रिपन और लार्ड करज़न ने शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया है। १९०६ ई० में १७२ कालेज थे जिन में पचीस हज़ार विद्यार्थी पढ़ते थे और एक लाख अरसठ हज़ार मदरसे थे जिनमें साठ लाख विद्यार्थी थे। इस बरस छः करोड़ सात लाख रुपये शिक्षा में खर्च हुए। मदरसे बहुत तरह के हैं जिनमें छोटे दरजे के प्राइमरी स्कूल हैं। इनमें लिखना पढ़ना सिखाया जाता है और ऐसी बहुत सी बातें भी पढ़ाई जाती हैं जो जमींदारों के लिये लाभदायक हैं, जैसे हिसाब, कुछ भूगोल, थोड़ी पैमाइश गांव के काग़ज़ और मामूली विषय। कुल विद्यार्थियों का ५/६ प्राइमरी स्कूलों में है।

४—इन से ऊपर के दरजे के सेकण्डरी स्कूल हैं जिन में या तो अङ्गरेज़ी पढाई जाती है या निरी देशीभाषा। मिडिल स्कूलों में

भाषा, व्याकरण, अङ्कगणित, बीजगणित, भारतीय इतिहास, भूगोल, विज्ञान, खेती का तत्व भी पढ़ाया जाता है। हाई स्कूलों में भी यही विषय पढ़ाये जाते हैं पर मिडिल से कुछ अधिक।

५—कालेज़ों में केवल वही विद्यार्थी पढ़ सकते हैं जिन्हों ने युनिवर्सिटी की मेट्रीकुलेशन परीक्षा पास की हो। विद्यार्थी भाषागणित, इतिहास या ऐसा ही किसी और विषय में डिगरी पाने के लिये पढ़ते हैं जो कालेज में पढ़ाया जाता हो। इन कालेजों में बड़े बड़े विद्वान् प्रोफ़ेसर वह सब विद्या सिखाते हैं जिनकी यूरोप में चरचा है।

६—इन के सिवाय कई एक विशेष मदरसे भी हैं। कुछ इण्डस्ट्रियल (दस्तकारी) के हैं जहां बढ़ई, लोहार, मोची, दरज़ी, जुलाहे, ठठेरे का काम, दरी बिनना, माली का काम और और पेशे सिखाये जाते हैं। आर्ट स्कूलों में नक़्शा बनाना, नकाशी (मूर्त्ति बनाना), तसवीर बनाना और सङ्ग तराशी सिखाते हैं। इञ्जिनियरिंग कालेजों में इञ्जिनियरी सिखाते हैं और विद्यार्थियों को महकमा तामीरात के लिये तैयार करते हैं। कास्तकारी और पशुचिकित्सा सम्बन्धी स्कूल भी हैं जिन में खेती और पशुओं के पालने की बातें बताई जाती हैं। मेडिकल स्कूल और कालेज भी हैं जिन में वैद्यक और जर्राही पढ़ाई जाती हैं। कानूनी स्कूल और कालेजों में कानून की सब शाखाओं की पढ़ाई होती है और ट्रेनिंग कालेजों और नारमल स्कूलों में मास्टर व मुदर्रिसों को पढ़ाना सिखाया जाता है।

(ब) २—भारत का शासन और प्रबन्ध

(१) भारत के गवनमेण्ट

१—भारत के राजराजेश्वर ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैण्ड के भी बादशाह हैं। इस लिये वह इङ्गलिस्तान में बिराजमान हैं। वहां राज्य का प्रबंध करने के लिये दो बड़ी बड़ी सभायें बादशाह के सहायक हैं जिन्हें पार्लीमेण्ट कहते हैं। इन में एक का नाम हौस आफ़ लार्ड्स (सामंत समाज) है और इसके ६१८ मेम्बर (सभ्य) हैं और दूसरे का हौस आफ़ कामन्स (साधारण समाज) है जिसमें ६७० मेम्बर हैं। सारे क़ानून पार्लीमेण्ट में बनते हैं और बादशाह उन पर अपनी अनुमति देते हैं।

२—ब्रिटेन के शासन के निमित्त बादशाह का एक प्रधान मन्त्री होता है। वह सदा साधारण समाज में से लिया जाता है। वह अपनी सहायता के लिये और मन्त्री साधारण समाज में से चुन लेता है। इन में से एक एक के अधिकार में एक एक महकमा रहता है। इन्हीं मन्त्रियों में से एक के अधिकार में भारत के शासन का काम है। इसे भारत का सेक्रेटरी आफ़ स्टेट कहते हैं। इसकी सहायता और सलाह के निमित्त एक कौंसिल (सभा) है जिसे इण्डिया कौंसिल कहते हैं। १९१२ ई० में इस कौंसिल में १३ मेम्बर थे जिनमें दो भारतवासी थे एक हिन्दू और एक मुसलमान। यह दोनों भी इङ्गलिस्तान में रहते थे और सब अङ्गरेज़ अफ़सर थे जो बरसों तक भारत में रह चुके थे। और भारत और उसके निवासियों को भली भांति जानते थे।

३—भारत में राजराजेश्वर का एक नायब (प्रतिनिधि) या वाइसराय रहता है जो उसकी जगह शासन करता है। जब

कभी इसे कोई भारी या परम उपयोगी काम पड़ जाता है तो वह सेक्रेटरी आफ़ स्टेट के पास तार भेजकर उसकी अनुमति ले लेता है।

४—वाइसराय को गवर्नर जनरल भी कहते हैं। वाइसराय बहुधा बड़े ऊंचे घराने के अमीर होते हैं और नियमानुसार पांच बरस तक भारत का शासन करते हैं। वह राजराजेश्वर के प्रतिनिधि होते हैं और दरबार में सब राजा और नवाब उनको ऐसे ही नज़र देते हैं जैसे आपहूर राजराजेश्वर को। जैसे इङ्गलिस्तान में राजराजेश्वर अपराधियों को क्षमा करते हैं वैसे ही इन्हें भी यह अधिकार है कि उचित समझें तो किसी ऐसे अपराधी का अपराध क्षमा करदें जिसके लिये प्राणदंड की आज्ञा अदालत से हो चुकी हो।

५—वाइसराय की सहायता के लिये दो कौंसिलें होती हैं। इनमें से एक सात मेम्बरों की है जिनमें भारत की सेना के सेनापति (कमांडर इन चीफ़) भी एक हैं। १९१२ ई० में इन मेम्बरों में एक भद्र भारतवासी भी था। इस कौंसिल का नाम इकज़िक्यूटिव कौंसिल (प्रबंधकारिणी सभा) है। इसका अधिवेशन छः महीने दिल्ली में जो अब फिर मुग़ल बादशाहों के राज्य की भाँति भारत की राजधानी है और ६ महीने मई से अक्तूबर तक शिमला पहाड़ पर होता है जहां की आबहवा ठंडी और स्वास्थ्यकारक है। इस कौंसिल का अधिवेशन हफ़्ते में कम से कम एक बार होना चाहिये। कौंसिल के हर मेम्बर के आधीन एक महकमा है जिसमें एक ही प्रकार का काम होता है। ऐसे कुल आठ महकमे हैं।

(१) फ़ारेन डिपार्टमेण्ट (महकमा विदेशीय) जिसका सम्बन्ध ब्रिटिश इण्डिया के बाहर रियासतों से है जैसे भारत की रक्षित देशीय रियासतें, अफ़गानिस्तान और हिन्दुस्थान के बाहर के देश।

(२) होम डिपार्टमेण्ट (महकमा देशीय) जिसमें भारत के शासन का साधारण रीति से और अदालत जेल और पुलिस के बिशेष रीति से काम काज होते हैं।

(३) महकमा मालगुज़ारी और खेती। जो खेती, धरती का अमल, अकाल पीड़ितों की सहायता, जङ्गल और पैमाइश सम्बन्धीय काम काज करता है।

(४) महकमा व्यापार और शिलपकला। जिसमें देश के भीतर और बाहर का व्यापार रेल, डाक, तार, बन्दरगाहों, जहाज़ों और महसूलों के मामिले निर्णय किये जाते हैं।

(५) महकमा माल। उन सारे विषयों का निपटारा करता है जो नगद, खजाना, टकसाल, बैंक, इस्टाम, नोट, सरकारी नौकरों को तनख़ाह और पेनशन, नमक और अफ़ीम से सम्बन्ध रखते हैं।

(६) महकमा सरकारी तामीरात। यह महकमा उसी मेम्बर के आधीन है जिसके पास मालगुज़ारी और खेती का महकमा है। इस में सड़कों, नहरों और सरकारी मकानों का काम किया जाता है।

(७) महकमा तालीम (शिक्षा) और लोकल सेल्फ़ गवर्नमेण्ट (स्थानीय स्वराज्य)। इसका सम्बन्ध शिक्षा स्कूल कालेज डिस्ट्रिक्ट और म्युनिसिपल बोर्डों के साथ है।

(८) महकमा क़ानून बनाने का (लेजिस्लेटिव डिपार्टमेण्ट)। यह महकमा वह सारे कानून बनाता है जिन पर पीछे से लेजिस्लेटिव (क़ानून बनानेवाली) कौंसिल बिचार करती है।

६—छोटी इकज़िक्युटिव कौंसिल के सिवाय जैसा हम ऊपर लिख चुके है सारे काम करती है दूसरी बड़ी कौंसिल क़ानून बनानेवालों की है। इकज़िक्युटिव कौंसिल के सब मेम्बर उसके

भी मेम्बर होते हैं। इनके सिवाय देश के और बड़े बड़े आदमी भी मेम्बर होते हैं। आजकल इसमें कुल ६८ मेम्बर हैं इनमें ३६ सरकारी मेम्बर हैं और ३२ सरकारी नहीं हैं। इनमें कुछ हिन्दू हैं और कुछ मुसलमान। यह कौंसिल सारे भारतवर्ष के लिए क़ानून बनाती है। इसके सारे अधिवेसन साधारण के लिये खुले हैं। जल्दी में कोई क़ानून नहीं बनाया जाता। जिस क़ानन के बनाने का बिचार होता है वह पहिले अंगरेज़ी और भारत की भिन्न भिन्न भाषाओं में छाप कर प्रकाशित कर दिया जाता है जिस से किसी की हानि होती हो तो वह विरोध करे। फिर क़ानून के इस मसौदे पर कौंसिल विचार करती है। मेंम्बर लोग अपना अपना मत प्रकाश करते हैं। फिर जब वह "पास" हो जाता है तो क़ानून बन जाता है।

७—लेजिस्लेटिव कौंसिल का कोई मेम्बर पवलिक (सरकारी) मामलों के बारे में प्रश्न कर सकता है। आमदनी और खर्च के सालाना तख़मीने का कच्चा चिट्ठा एक बार बिचार के लिये इसमें आता है। वह पढ़ा जाता है और एक सरकारी मेम्बर सब बातों का पूरा व्यौरा कह सुनाता है। कोई काम छिपा कर नहीं किया जाता न कोई बात गुप्त रक्खी जाती है। क़ानून बनाने या देश की आमदनी और ख़र्च और टैक्सों के विषय में जो कुछ गवर्नमेण्ट करती है उसे सब लोग अच्छी तरह जान जाते हैं।

(२) सूबेवार गवर्नमेण्ट

१—प्राचीन काल में भारत बहुत सी रियासतों और राज्यों में बँटा था। मुग़ल बादशाहों के समय में उनका राज्य सूबों में बाँटा गया था। अब भी उसी तरह ब्रिटिश इण्डिया पंदरह सूबों में बँटा है जिनमें से दस बड़े हैं और पांच छोटे।

२—बड़े बड़े सूबे ये हैं :—

(१) बंगाल (२) मद्रास (३) बम्बई (४) संयुक्त प्रान्त (५) बिहार और उड़ीसा (६ पंजाब (७) मध्यप्रदेश (८) ब्रह्मा (९) आसाम (१०) पश्चिमोत्तर सीमा का सूबा। छोटे छोटे सूबे यह हैं ; (११) दिल्ली (१२) अजमेर और मेरवाड़ा (१३) ब्रिटिश बिलोचिस्तान (१४) कुड़ग (१५) अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह।

३—इन सूबों में हर एक की अलग अलग गवर्नमेण्ट है पर वह सब गवर्नमेण्ट आफ़ इण्डिया के आधीन हैं। हर एक सूबे में एक ही तरह की हुकूमत है, एक ही क़ानून और अफ़सर भी एक ही तरह के हैं। अफ़सरों के दरजे भी एक से हैं और हर एक सूबा सारे महकमों की रिपोर्ट नियमानुसार भारत गवर्नमेण्ट के पास भेजता है।

४—मदरास, बङ्गाल और बम्बई सब से पुराने अंगरेज़ी सूबे हैं। इनमें से हर एक का हाकिम गवर्नर कहलाता है और इङ्गलिस्तान से नियुक्त होकर आता है। हर एक गवर्नर के यहां एक लेजिसलेटिव कौंसिल और एक एक्ज़िक्यूटिव कौंसिल भी है। छोटी प्रबन्धकारिणी कौंसिल के तीन मेम्बर होते हैं जिनमें से एक अवश्य ही भारतबासी होता है, चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान। बड़ी कौंसिल के क़ानून बनानेवाले पचास मेम्बर होते हैं जिन में गैर सरकारी मेम्बर अधिक होते हैं।

५—चार सूबों में (१) संयुक्त प्रान्त (२) पंजाब (३) बिहार और उड़ीसा और (४ ब्रह्मा में सब से बड़ा हाकिम लेफटेण्ट गवरनर हैं जिन्हें बाइसराय भारत के सिविल सरविस के अफ़सरों में से चुनते हैं। वह पांच बरस तक हुकूमत करते हैं। उनमें से कुछ के यहां छोटी सी प्रबन्धकारिणी कौंसिलें भी। क़ानून बनानेवाली बड़ी कौंसिलें सब के यहां हैं।

६—और सूबे जिनका क्षेत्रफल कम है चीफ़ कमिश्नरों के शासन में हैं। उनके यहां कोई कौंसिल नहीं होती। वह बिलकुल गवर्नर जनरल के आधीन हैं।

७—हर सूबा ज़िलों में बंटा हुआ है। ब्रिटिश इण्डिया में कुल २६७ ज़िले हैं। हर एक ज़िला अपने आप पूरा होता है और जैसा एक ज़िले का प्रबन्ध है वैसा ही सब का है। एक ही तरह के ओहदेदार हैं, और एक ही क़ानून माना जाता है। कुछ ज़िले तो बहुत बड़े हैं पर ऐसे बहुत हैं जिनकी आबादी कम है। कुछ छोटे छोटे ज़िले भी हैं जिनकी आबादी बहुत है। ज़िले की आबादी दस से पन्द्रह लाख तक होती है।

८—पंजाब और अवध और मध्यप्रदेश और और छोटे सूबों में ज़िले के बड़े हाकिम को डिप्टी कमिशनर कहते हैं। और बड़े बड़े सूबों में यह कलक्टर कहलाता है इसके आधीन अफ़सरों का अमला होता है। एक असिस्टेण्ट कमिशनर या डिपटी कलेक्टर, एक अफ़सर पुलिस, एक इंजिनियर, एक सिविल सरजन, एक अफ़सर जंगलात, एक सुपरिनटेनडेण्ट जेल इत्यादि। कोई कोई अफ़सर तीन तीन चार चार ज़िलों में दौरा करते हैं जिन्हें हलक़ा या क़िस्मत कहते हैं जैसे इन्सपेक्टर मदारिस। यह अफ़सर अंगरेज़ और हिन्दुस्थानी दोनों ही सकते हैं। हिन्दुस्थानी कलक्टर, डाक्टर और सिविल सरजन इत्यादि भी हैं।

९—कुछ सूबों में तीन तीन चार चार ज़िले मिलकर एक कमिश्नर के आधीन कर दिये जाते हैं। ब्रिटिश इण्डिया में ऐसे पचास कमिश्नर हैं। वह ज़िलों के अफ़सरों के काम की निगरानी करते हैं।

१०—बंगाल और ब्रह्मा के सिवाय हर एक सूबे में ताल्लुक़े और तहसीलें हैं, जो एक एक अफ़सर के अधिकार में हैं जिस

तहसीलदार कहते हैं। वह अपने इलाके पर इसी भांति हुकूमत करता है जैसे डिप्टी कमिश्नर ज़िले पर। सैकड़ों तहसीलदार हैं और वह सब के सब हिन्दुस्थानी हैं। वह बड़ी मिहनत के साथ चुने जाते हैं। वह लोग सब पढ़े लिखे होते हैं। सारे क़ानून का ठीक ठीक पालन और ज़मींदारों की रक्षा तहसीलदार की ईमानदारी और योग्यता के आधीन है।

(३) लोकल सेल्फ़ गवर्नमेण्ट
(स्थानीय स्वराज्य)

१—भारत खेतिहर देश है। गांवों की अपेक्षा इसमें बड़े शहर बहुत थोड़े हैं। अगले दिनों में हर गांव में अफ़सर थे। लम्बरदार सब से बड़ा होता था जिसे कहीं कहीं पटेल भी कहते हैं। वह गांव के बड़े बूढ़ों की पञ्चायत की सहायता से झगड़ों का निपटारा करता था। इस के सिवाय गांव में एक पटवारी भी रहता था जो ऐसा हिसाब लिखता और काग़ज़ बनाता था जिनसे यह जाना जाय कि हर एक खेत का मालिक कौन है और हर किसान से कितना पोत मिलना चाहिये। ऐसे ही गांव में एक चौकीदार भी होता था। यह सब अधिकारी फ़सल कटने के समय ज़मींदारों से कुछ अनाज पाते थे। किसी को नगद तनख़ाह नहीं मिलती थी।

२—आजकल इन लोगों को भी और सरकारी नौकरों की तरह नगद तनखाहें मिलती हैं और वह सब तहसीलदार के आधीन रहते हैं।

३—स्थल और जल सेना, पुलिस, नहर, रेल, सरकारी इमारतों और सड़कों आर देश की भलाई के बड़े बड़े कामों का क़ायम रखना, भीतरी और बाहरी व्यापार की रक्षा और उन्नति, सिक्का

बनवाना, मालगुज़ारी तहसील करना, क़ानून बनाना और ऐसे ही सब कामों का प्रबन्ध जिनका लगाव सारे देश से है सूबेवार गवर्नमेण्टें करती हैं। पर जितने सभ्यदेश हैं उनमें बहुतेरे ऐसे काम हैं जिन्हें लोकल (स्थानीय) कह सकते हैं जैसे बाज़ारों और गलियों की सफ़ाई, रोशनी, साफ़ पानी पहुंचाना, बच्चों को पढ़ाना, दवाख़ाने और ऐसे ही अनेक काम इनको शहरों के रहनेवाले अपने चुने हुये मेम्बरों की सभा के द्वारा बहुत अच्छी तरह कर सकते हैं, क्योंकि औरों की अपेक्षा वह लोग अपने शहरों और क़सबों का हाल बहुत अच्छी तरह जानते हैं। इसके सिवाय जब वह उस रुपये को ख़र्च करने लगें जो उन्हों ने टैक्स लगा कर इकट्ठा किया है तो यह अनुमान होता है कि वह इस बात का विचार कर लेंगे कि इस धन की एक कौड़ी अकारथ न जाय और परम उचित रीति से खर्च किया जाय। लोकल सेल्फ़ गवर्नमेंट (स्थानीय स्वराज्य) हम इसी को कहते हैं।

४—पहिले पहिल तो इस रीति को बड़े बड़े शहरों के लोगों ने अच्छा न जाना; क्योंकि यहां यह नई बात थी। लोग कहते थे कि यह काम सरकार का है, हमारा नहीं। टैक्स लगाना और उसको खर्च करना सरकार का धर्म है। इसके सिवाये हमें अपने कामों से छुट्टी नहीं कि हम इसे भी करें; न हमें परवाह है क्योंकि इनके करने से कोई ईनाम न मिलेगा।

५—अन्त को बम्बई, कलकत्ता और मद्रास ऐसे बड़े बड़े शहरों के कुछ मुख्य रहनेवालों ने इस काम के करने में अपनी अनुमति दी। शहरों की ऐसी सभा को म्युनिसिपल कमेटी कहते हैं और मेम्बरों को म्युनिसिपल कमिश्नर। इनमें बहुत से तो शहर के रहनेवाले चुनते हैं और कुछ गवर्नमेण्ट नियत करती है। इनका सभापति चेयरमैन कहलाता है। अब ऐसे बहुत से

शहर हैं जहां म्युनिसिपल कमेटियां हैं और उनका मेम्बर बनना लोग अपने लिये बड़ाई समझते हैं। १६१० ई० में ऐसी सात सौ कमेटियां थीं और उनमें दस हज़ार मेम्बर थे। इनमें तीन चौथाई भारतवासी थे। इन लोगों ने कमेटियों के ख़रचे के लिये कई करोड़ रुपया चुंगी अन्य और महसूलों से जमा किया।

६—१८८३ ई० में लार्ड रिपन ने जो उस समय गवर्नर जनरल थे यह निर्णय किया कि शहरों ही नहीं वरन् गांव भी अपने कामों का प्रबन्ध जहां तक हो सके आप करें, अपने मदरसों, असपताल और सड़कों का आप बन्दोबस्त करें और देखे भालें। इसके लिये लार्ड साहेब ने बहुत से गावों के बोर्ड बना दिये जिनके मेम्बर सरकारी नहीं हैं; गांववाले उनको चुनते हैं। पर भारत के किसी किसी प्रान्तों के गांववाले बहुत पढ़े लिखे नहीं होते इससे सब जगह एक ही क़ायदा जारी नहीं है। बहुत से गांव अपनी देख भाल के योग्य न निकले।

७—लार्ड रिपन की आज्ञा पर सारे मद्रास में अमल हुआ क्योंकि वहां लोग अच्छी तरह पढ़े लिखे थे। यही सूबा सब से पहिले अंगरेज़ी राज में आया और यहीं सब से पहिले मदरसे खुले। हर ज़िले में एक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड होता है और हर तहसील में लोकल बोर्ड। गांवों का एक छोटा समुदाय एक पंचायत के प्रबन्ध में रहता है। पंजाब के सब ज़िलों में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड है।

८—१६१० ई० में भारत में १६७ डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और ५१७ लोकल बोर्ड थे और इनके $\frac{1}{1\frac{1}{2}}$ मेम्बर भारतवासी थे। बोर्डों को अपने इलाक़े में टैक्स लगाकर रुपया जमा करने की आज्ञा है जिसे वह आप सड़कों मदरसों और असपतालों में ख़रच करते हैं।

(४) भारत की रक्षा

१—भारत की गवर्नमेण्ट इस बात का ध्यान रखती है कि देश में एक बड़ी सेना उपस्थित रहे। हमारा जीना और हमारी रक्षा इसी पर निर्भर हैं। इसके अनेक लाभ हैं। यह न हो तो सभ्यता उसके सुख और आनन्द सब एक क्षण में नष्ट हो जायें; व्यापार रुक जाय, खेत बिना बोये जोते पड़े रहैं और देश में उपद्रव और मारकाट होने लगे।

२—इसी कारण हमारी सरकार एक प्रबल सेना तैयार रखती है। सिपाही पूरे हथियार लिये हुये हैं और पूरी क़वाइद जानते हैं। इन्हें अच्छा खाना और बड़े बड़े बारिक रहने को मिलते हैं और उनकी सब तरह से देख भाल की जाती है। सेना में सिपाही गोरे भी हैं और देशी भी।

३—गोरे सिपाहियों की गिनती ७० हज़ार है। वह सब बली जवान हैं। भारत में पांच बरस से अधिक नौकरी नहीं करते। इससे सिवाय ठहरें तो उनका बल और उत्साह दोनों घट जायें। यह बड़े बड़े स्वास्थ्य बढ़ानेवाले स्थानों में रक्खे जाते हैं और रेल द्वारा बहुत जल्द भारत के एक भाग से दूसरे भाग में भेजे जा सकते हैं।

४—हिन्दुस्थानी सिपाही लगभग एक लाख साठ हज़ार हैं। वह बहुधा लड़नेवाली जातियों में से भरती किये जाते हैं, जैसे पंजाबी, सिख, राजपूत, पठान, जाठ। इन सब को अच्छी तनख़ाहें मिलती हैं और सब तरह से इनकी देख भाल होती है। इनके अफ़सर तीन हज़ार अंगरेज़ और बहुत से देशी हैं। रेजिमेंट के सब से बड़े अफ़सर को कर्नल कहते हैं। इसके आधीन मेजर, कप्तान और लेफ़टिनेण्ट रहते हैं। हिन्दुस्थानी अफ़सरों को सूबेदार और जमादार कहते हैं।

५—इनके सिवाय बलुमटेर भी हैं। इनकी तनख़ाह कुछ नहीं होती पर इन्हें हथियार दिये जाते हैं और उन्हें सेना को कवाइद सिखाई जाती है जिससे कहीं लड़ाई छिड़ जाय तो वह शहरों किलों और पुलों की रक्षा कर सकें। वायव्य और अग्नि कोण की सीमा पर जङ्गी पुलिस रहती है जो सिपाहियों की तरह हथियार बन्द रहती है और जिसका काम शान्ति रखना है। सेना से उसको कुछ सम्बन्ध नहीं।

६—ग्रेट ब्रिटेन का जङ्गी बेड़ा भारतवर्ष के सारे अङ्गरेज़ी राज की रक्षा करता है और उन सारे जहाज़ों की भी रखवाली करता है जो व्यापार की वस्तुएं भारत से दूसरे देशों को ले जाते हैं या वहां से लाद लाते हैं। समुद्र की राह से कोई बैरी भारत पर चढ़ नहीं सकता है। जल सेना को ग्रेट ब्रिटेन की आमदनी से तनख़ाह मिलती है। भारत के रुपये से इसे कुछ नहीं दिया जाता।

(५) पुलिस और जेल

जैसे लड़ाई के अवसर पर सेना हमारी रक्षा करती है और चढ़ाई करनेवालों को दूर भगाने पर कमर कसे रहती है, वैसे ही अशान्ति की दशा में शान्ति चाहनेवाली प्रजा की रखवाली पुलिस करती है। वह चोरों और डाकुओं को दबाये रखती है। हर एक ज़िले में पुलिस का बड़ा अफ़सर होता है जिसे सुपरिन्टेण्डेण्ट पुलिस कहते हैं। उसकी सहायता को एक असिस्टेण्ट और बहुत से इन्सपेक्टर होते हैं जिनके आधीन कनिस्टेबल हुआ करते हैं। सुपरिन्टेण्डेण्ट पुलिस ज़िला के साहेब कलेक्टर या डिपटी कमिश्नर और सूबे के इन्सपेक्टर जनरल पुलिस के आधीन होता है। ब्रिटिश इण्डिया में डेढ़ लाख के लगभग पुलिस के नौकर

और लगभग सात लाख चौकीदार हैं। इन सब का सालाना ख़र्च लगभग चार करोड़ होता है। हर ज़िले में एक जेलख़ाना अपने अपने सुपरिन्टेण्डेण्ट के आधीन होता है। पुराने समय में लोग यह समझते थे कि अपराधियों को जेलख़ाने की सजा केवल दुख देने और औरों को चेता देने के लिये दी जाती थी। पर अब सब मुलकों में गवर्नमेंण्ट इस बात का भी उद्योग करती है कि चोरों का स्वभाव सुधारा जाय। बहुतेरे केवल इस कारण चोरी करते हैं कि उनको जीविका का न कोई और उपाय है और न वह कोई पेशा या हुनर जानते हैं। ऐसे लोगों को जेलख़ानों में अब पेट पालने के गुन सिखाये जाते हैं जैसे छपाई, खेमे दोज़ी का, बढ़ई या लुहार का काम, बेंत की चीज़ें बनाना और दरी बुनना। अगले दिनों में क़ैदियों के साथ बड़ी निठुराई की जाती थी। कहा जाता है कि कहीं कहीं जेलख़ाने जाना मरने को जाना समझा जाता था। अब क़ैदियों की बड़ी देख भाल की जाती है उन्हें अच्छा खाना खाने को मिलता है और क़ायदे से कसरत कराई जाती है। वह सबेरा होते ही उठते हैं खाना खाते हैं; सबेरे सबेरे काम करते हैं, फिर आराम करते हैं और दोपहर को खाना खाते हैं। फिर काम करते हैं। तीसरी बार उन्हें सन्ध्या समय खाना मिलता है। फिर रात को बन्द कर दिये जाते हैं। जिनकी चाल चलन अच्छी होती है और मिहनत से काम करते हैं वह बहुधा क़ैद की मियाद भुगतने से पहिले ही छोड़ दिये जाते हैं। गवर्नमेण्ट क़ैदियों से ऐसा सलूक क्यों करती है। इस लिये कि उन्हें मिहनत करने का हौसला हो जाय और उनकी प्रकृति सुधर जाय जिससे वह जेलख़ाने से निकल कर बाहर भले मानुस बन जायं, चैन से दिन काटें और ईमानदारी से पैसा कमायें।

(६) न्याय और अदालतें

१—हमारी अदालतों का आजकल जो प्रबन्ध है, वह १८६१ ई० में आरम्भ हुआ है जब भारत में हाई कोर्ट का ऐक्ट पास हुआ था और कलकत्ता मदरास और बम्बई में हाई कोर्ट खोले गये थे। बादशाह ने इन में जज नियुक्त किये। इन में से एक तिहाई बारिस्टर-ऐट-ला थे; इतने ही डिष्ट्रिक्ट जज और क़ानून जाननेवाले लोग थे। १८६८ ई० में इलाहाबाद में हाई कोर्ट और लाहौर में एक चीफ़ कोर्ट खुला।

२—यों तो भारतवर्ष के सब ज़िलों में एक एक सिविल और सेशन जज है पर कार्य्य की अधिकता पर उसे असिस्टेण्ट भी मिल जाता है। हर एक सूबे के ज़िलों की अदालत उसके हाई कोर्ट या चीफ कोर्ट के आधीन है जो प्राणदण्ड के हर एक फ़ैसले की अन्तिम आज्ञा सुनाती है।

३—सेशन अदालत के आधीन तीन दर्जों के मजिस्ट्रेटों की कचहरियां हैं। अव्वल दरजे के मजिस्ट्रेट दो बरस की क़ैद और एक हज़ार रुपये जुरमाना करने का अधिकार रखते हैं। दूसरे दरजे के छ महीने की क़ैद और दो सौ रुपये तक जुरमाने का और तीसरे दरजे के एक महीने की क़ैद और पचास रुपये जुरमाने का। डिपटी कमिशनर या कलक्टर भी अव्वल दरजे के मजिस्ट्रेट होते हैं।

४—नीची अदालतों के फ़ैसलों की अपील ऊंची अदालतों में हो सकती है। दूसरे और तीसरे दरजे के मजिस्ट्रेट के हुक्म की अपील ज़िला के मजिस्ट्रेट के यहां और उसके फ़ैसले का सेशन जज के अदालत में और उसके हुक्म का हाई कोर्ट या चीफ़ कोर्ट में हो सकती है।

५—इन के सिवाय सबजज और मुन्सिफों की छोटी छोटी अदालतें भी हैं।

(७) भारत के कर (महसूल) और उनके खर्च का ब्यौरा

१—भारत में महसूलों और टैक्स से जो आमदनी होती है उसे सरकार यहां के रहनेवालों के लाभ के लिये ही खर्च कर देती है और उसे बटोर कर रखने का उद्योग नहीं करती। सरकार को उतने ही रुपये की आवश्यकता है जिससे शासन प्रबन्ध का खर्चा पूरा पड़ जाय। आमदनी कम हो या बहुत, सब उन अनगिनती सुख चैन के रूप में जिनपर वह खर्च की जाती है देशवासियों को फिर मिल जाती है। जब कभी कुछ रुपया बच रहता है तो शिक्षा आदि उपयोगी कामों में खर्च कर दिया जाता है या कोई टैक्स उठा दिया जाता है। जैसे नमक पर पहिले २॥) मन टैक्स था पीछे घट कर २) रह गया। उसके बाद १) कर दिया गया, लेकिन अब फिर २॥) कर दिया गया है। भारत गवर्नमेण्ट के महसूल क्या हैं? कितने हैं कहां से और कैसे आते हैं?

२—१९११ ई० में भारत के महसूलों से आमदनी एक अरब तेरह करोड़ से कुछ ऊपर थी। आमदनी के बड़े बड़े वसीले नीचे लिखे हैं।

जमीन का लगान	३१ करोड़ रुपये
रेल की आमदनी	१८ करोड़ रुपये
आबकारी अर्थात्, शराब, गांजा, चर्स आदि के टैक्स	१० करोड़ रुपये
कस्टम ड्यूटी यानी आनेवाले माल व जानेवाले माल का टैक्स	६ करोड़ रुपये
स्टाम्प की बिक्री	७ करोड़ रुपये

अफीम का महसूल	७ करोड़ रुपये
नहरों की आमदनी	५½ करोड़ रुपये
नमक का महसूल	५ करोड़ रुपये
डाक, तार और टकसाल की आमदनी	४½ करोड़ रुपये

बाकी १५ करोड़ रुपया छोटी छोटी मदों से मिला।

३—शासकों की आमदनी का सब से बड़ा अंश सदा धरती की मालगुज़ारी रही है। भारत में सब धरती की सरकार मालिक है। जो धरती जिसके पास हो या जो उसमें खेती करे उसको धरती का लगान ऐसे ही देना पड़ता है जैसे कोई दूसरे के घर में रहता तो उसे किराया देता है। पहिले यह किराया बहुत था। अब अङ्गरेज़ी राज में बहुत कम है।

४—भारत के प्रान्तों में लगान देने की दो रीतियां हैं जिन्हें रयतवारी और ज़मींदारी कहते हैं। पहिली रीति मदरास के बहुत से प्रान्तों में, बम्बई, आसाम और ब्रह्मा में प्रचलित है। इसके अनुसार काश्तकार सीधा सरकार को लगान देता है।

५—ज़मींदारी की रीति भारत के उत्तर और मध्य में प्रचलित है। धरती एक ज़मींदार या एक जाति के पास होती है। सरकार उस ज़मींदार से मालगुज़ारी ले लेती है और ज़मींदार किसानों से पाता है।

६—यह रुपया कैसे ख़र्च होता है?

लगभग—३१ करोड़ रुपया सेना पर
१८ करोड़ रुपया रेलों पर
२३ करोड़ रुपया राज्यशासन प्रबन्ध पर
जैसे सरकारी नौकरों की तनख़्वाहें
११ करोड़ रुपया महसूलों की तहसील में
४½ करोड़ रुपया आबपाशी (नहरों) में

७ करोड़ रुपया सरकारी इमारतों पर
४½ करोड़ रुपया डाक तार और टकसाल पर।

७—१४ करोड़ जो बचा वह छोटी छोटी मदों में खर्च हो जाता है इसमें से १½ करोड़ रुपया अकाल पीड़ितों की सहायता के लिये अलग रख लिया जाता है। तीन करोड़ रुपया तीन रुपया सैकड़ा की निरख से सरकारी कर्ज़े का सूद दिया जाता है। यह वह कर्ज़ा है जो सरकार ने समय समय पर रेलें बनाने या नहर खुदाने के लिये लिया है। यह क़र्जा अब चार अरब से अधिक है। रेलों और नहरों की बड़ी आवश्यकता थी और साधारण आमदनी से उनका खर्च निकल नहीं सकता था। सूद देने में कोई कठिनाई नहीं है।

सरकार अङ्गरेज़ी को सब कोई तीन रुपया सैकड़ा ब्याज पर रुपया उधार देने को तैयार है। क्योंकि कर्ज़ा देनेवाला जानता है कि उसका रुपया कहीं जा नहीं सकता। सरकार के हाथ में रहने में कोई जोखिम नहीं है।